RNI No. UPHIN/2000/3766 ISSN No. 2581-3528 ₹:20

केशव संवाद

वैशाख-जेष्ठ, विक्रम सम्वत् 2078 (मई -2021)

भारत उदय

- भारत की पहचान : एकात्म मानव दर्शन
- एक भारत श्रेष्ठ भारत के निहितार्थ
- वैभव नव भारत का
- क्वैड एवं समुद्री संसाधन

मई 2021, वैशाख-जेष्ठ विक्रम सम्वत् 2078
हिन्दी पंचांग

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वैशाख कृष्ण पंचमी-5 30	वैशाख कृष्ण षष्ठी-6 31					वैशाख कृष्ण पंचमी-5 1
वैशाख कृष्ण षष्ठी-6 2	वैशाख कृष्ण सप्तमी-7 3	वैशाख कृष्ण अष्ठमी-8 4	वैशाख कृष्ण नवमी-9 5	वैशाख कृष्ण दशमी-10 6	वैशाख कृष्ण एकादशी-11 7	वैशाख कृष्ण द्वादशी-12 8
वैशाख कृष्ण त्रयोदशी-13 9	वैशाख कृष्ण चतुर्दशी-14 10	वैशाख कृष्ण अमावस्या 11	वैशाख शुक्ल प्रतिपदा 12	वैशाख शुक्ल द्वितीया-2 13	वैशाख शुक्ल द्वितीया-2 14	वैशाख शुक्ल तृतीय-3 15
वैशाख शुक्ल चतुर्थी-4 16	वैशाख शुक्ल पंचमी-5 17	वैशाख शुक्ल षष्ठी-6 18	वैशाख शुक्ल सप्तमी-7 19	वैशाख शुक्ल अष्टमी-8 20	वैशाख शुक्ल नवमी-9 21	वैशाख शुक्ल दशमी-10 22
वैशाख शुक्ल एकादशी-11,12 23	वैशाख शुक्ल त्रयोदशी-13 24	वैशाख शुक्ल चर्तुदशी-14 25	वैशाख शुक्ल पूर्णिमा 26	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा 27	वैशाख कृष्ण द्वितीया-2 28	वैशाख कृष्ण तृतीय-3,4 29

मई 2021

बरूथिनी एकादशी
मई 7, 2021, शुक्रवार
वैशाख, कृष्ण एकादशी

अक्षय तृतीया
मई 14, 2021, शुक्रवार
वैशाख, शुक्ल तृतीया

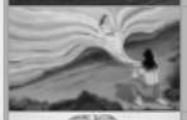

गंगा सप्तमी
मई 18, 2021, मंगलवार
वैशाख, शुक्ल सप्तमी

मोहिनी एकादशी
मई 22, 2021, शनिवार
वैशाख, शुक्ल एकादशी

नरसिंह जयन्ती
मई 25, 2021, मंगलवार
वैशाख, शुक्ल चतुर्दशी

चन्द्र ग्रहण *पूर्ण
मई 26, 2021, बुधवार
पूर्णिमा के दौरान

नारद जयन्ती
मई 27, 2021, बृहस्पतिवार
ज्येष्ठ, कृष्ण प्रतिपदा

परशुराम जयन्ती
मई 14, 2021, शुक्रवार
वैशाख, शुक्ल तृतीया

वृषभ संक्रान्ति
मई 14, 2021, शुक्रवार
सूर्य का मेष से वृषभ राशि में प्रवेश

सीता नवमी
मई 21, 2021, शुक्रवार
वैशाख, शुक्ल नवमी

गौण मोहिनी एकादशी
मई 23, 2021, रविवार
वैशाख, शुक्ल एकादशी

बुद्ध पूर्णिमा
मई 26, 2021, बुधवार
वैशाख, शुक्ल पूर्णिमा

वैशाख पूर्णिमा
मई 26, 2021, बुधवार
वैशाख, शुक्ल पूर्णिमा

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/3766

ISSN No. 2581-3528

मई, 2021
वर्ष : 21 अंक : 05

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
अणंज कुमार त्यागी

संपादक
कृपाशंकर

केशव संवाद पत्रिका प्रमुख
डॉ. प्रियंका सिंह

संपादक मंडल
डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. अखिलेश मिश्र
डॉ. नीलम कुमारी

पृष्ठ संयोजन
वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201301
फोन नं. 0120 4565851, 2400335
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernashodh.com

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक सुखवीर प्रकाश द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105, आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

संपादकीय		04
भारत की पहचान : एकात्म मानव दर्शन	- नरेन्द्र भदौरिया	05
सांस्कृतिक क्षेत्र में भारत उदय	- अशोक सिन्हा	07
वैभव नव भारत का	- प्रो. अनिल निगम	09
ग्रामोदय से भारत उदय की ओर बढ़ता भारत	- प्रमोद भार्गव	10
प्राचीन भारतीय चिकित्सा विधाओं	- अनुपमा अग्रवाल	13
हमारे प्रमुख त्यौहार	- अरूण कुमार सिन्हा	15
क्वैड एवं समुद्री संसाधन	- डॉ. अखिलेश मिश्र	18
पुस्तक समीक्षा	- डॉ. निर्भय प्रताप सिंह	19
संविधान निर्माता बाबा साहब अम्बेडकर	- डॉ. प्रदीप कुमार	21
हम सबके राम	- रमेश चन्द्र शर्मा	23
आचार्य चाणक्य	- प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह	25
स्वःकी पहचान-आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश	- डॉ. प्रियंका सिंह	28
एक भारत, श्रेष्ठ भारत के निहितार्थ	- डॉ. उर्विजा शर्मा	29
प्रथम महिला चिकित्सक - डॉ आनंदी जोशी	- डॉ. नीलम कुमारी	30
हिन्दू पुनर्जागरण का अश्वमेघ यज्ञ	- मृदुल त्यागी	32
राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 मातृभाषा से...	- डॉ. मीनाक्षी लोहनी	33
मीडिया के क्षेत्र में भारत उदय	- दीपिका मनोहर	35
नये भारत की बेजोड़ नारियां	- अनीता चौधरी	36
लोकलालित्य के लुप्तप्राय अध्याय	-हरि प्रसाद सिंह	38
कैंच द रेन- जल संरक्षण उदीप्तिमान मंत्र	- डॉ. रमाशंकर विद्यार्थी	39
वैश्विक आर्थिक परिदृश्य पर उभरता भारत	- मोनिका चौहान	40
चिकित्सा के क्षेत्र में भारत उदय	- संजीव कुमार बंसल	42
क्रांतिकारियों के सिरमौर वीर सावरकर	- महावीर सिंघल	43

संपादकीय.....

अजय्यां च विश्वस्य देहीश शक्ति सुशीलं जगद्येन नम्रं भवेत्

हमें ऐसी अजेय शक्ति दीजिए कि सारे विश्व में हमें कोई न जीत सके और ऐसी नम्रता दे कि पूरा विश्व हमारी विनयशीलता के सामने नतमस्तक हो। ऐसी ही संस्कृति है भारत राष्ट्र की। भारत की संकल्पना विविधता में एकता की है जिसमें प्रत्येक धर्म, जाति, भाषा, संप्रदाय, रीतियों की विविधता समाहित है। यहीं नहीं भौगालिक दृष्टि से व्यापक विस्तार परिलक्षित होता है। विविध कलाओं, नैसिर्गिक सुन्दरता से परिपूर्ण भारत जैसा राष्ट्र निश्चित रूप से पूरे विश्व में नही है। धर्म, ज्ञान और विज्ञान के संदर्भ में भारत राष्ट्र की समृद्धि व सम्पन्नता उसकी संस्कृति में परिलक्षित होती है। वर्तमान में कोविड महामारी के कारण पूरा विश्व संकट की घड़ी में बेबस सा खड़ा है वहीं भारत ने संयम के साथ अपनी आंतरिक शक्ति को दृढ़ किया एवं सभी क्षेत्रों में साहस व धैर्य से काम लिया। निश्चित तौर पर हम एक कठिन परिस्थिती का सामना कर रहे परंतु आत्मविश्वास व आत्मबल से भारत उदयीमान हो रहा है। जिस प्रकार सूर्य के उदय होने से वातावरण शुद्ध और अद्भुत हो जाता है। हर ओर लालिमा छा जाती है। जीवन स्त्रोत रूपी ऊर्जा का संचार और सकारात्मकता का प्रसार होता है। ठीक उसी प्रकार भारद उदयीमान है जो द्योतक है कि अब वह प्रतिपल गतिमान रहेगा और बढ़ता ही रहेगा।

सदियों से भारत भूमि हर क्षेत्र में समृद्ध रही है परन्तु समय-समय पर आक्रांताओं ने इसनमें विष घोलने का कार्य किया।

सदैव नैतिक मूल्यों को सर्वोपरि रखने वाला भारत आज एक राष्ट्र के रूप में आत्मविजेता है और वैश्विक हित को ध्यान में रखते हुए सबसे आगे बढ़कर अपने पड़ोसी देशों को न केवल दवाईयां उपलब्ध कराई अपितु टीके सहित अन्य आवश्यक वस्तुएं भी भेजकर एक सकारात्मक का संदेश दिया। उससे वह विश्वविजेता के पथ पर अग्रसर है। आज एक बार पुनः भारत स्वयं को पुनः गढ़ने के क्षेत्र में दृढ़ संकल्पित हो कर गतिमान हो रहा है।

डॉ. प्रियंका सिंह
पत्रिका प्रमुख एवं अंक संपादक

भारत की पहचान : एकात्म मानव दर्शन

नरेन्द्र भदौरिया
संपादक, नागरिक टाइम्स

संसार में दो पक्ष सदा से रहे हैं। सृष्टि ने इनमें से किसी एक को मिटाना कभी उचित नहीं समझा होगा। तभी दोनों का अस्तित्व हर कालावधि में मिलता रहा है। एक पक्ष में क्रोध, घृणा और स्वार्थ का आधिपत्य है। दूसरे पक्ष में प्रेम, परमार्थ और त्याग के भावों का प्राबल्य है। सृष्टि के विकास के संग इन दोनों पक्षों में सन्तुलन की बात उठी होगी। तभी धर्म शब्द की व्युत्पत्ति हुई। धर्म को नानाविधि शब्दावलियों में बांधने के यत्न हुए। जिससे उसे भाषित किया जा सके। सबसे सरल परिभाषा यह कि धर्म वह जो प्रेम, परमार्थ और त्याग की ओर प्रवृत्त कर सके। क्रोध, घृणा और स्वार्थ के दलदल से बचा सके। भारत के एक महान चिन्तक, विचारक और उन्नायक का नाम स्मृतियों को चमत्कृत करता है, यह नाम है दीन दयाल उपाध्याय का। उपाध्याय जी का जीवन काल मात्र 52 वर्ष का रह सका। उनकी हत्या राजनीतिक षड्यन्त्रकारियों ने करा दी थी। वह 1916 में जन्मे और 1968 में कालकल्वित हो गये। दीन दयालजी का किसी से बैर भाव नहीं था। वह भारत के लोगों को यह बता रहे थे कि अपने आपको पहचान लेना ही सबसे बड़ा ज्ञान है। लोग जान सकें कि वह किस पक्ष में खड़े हैं। कहीं क्रोध, लोभ और घृणा से गर्त में तो नहीं धंसते जा रहे हैं। वह कहते थे कि धर्म का एक मात्र उपयोग यह है कि उसके सिद्धान्तों के अनुरूप अपने जीवन का संयोजन किया जाय। विचित्रता यह है कि बहुत बड़ा वर्ग यह हठ ठाने बैठा है कि धर्म के नियमों को वह अपने अनुरूप गढ़ेगा।

दीनदयाल जी ने भारत के राजनीतिक विचारकों को एक कसौटी सौंपी थी। दो नारे दिये थे। पहला नारा था अन्त्योदय और दूसरा एकात्म मानवदर्शन। दोनों नारे भारतीय सनातन संस्कृति की मौलिकता से उपजे हैं। यह सच है कि उस मौलिकता को उपाध्याय जी ने नवीन और अत्याधुनिक चिन्तन धारा का स्वरूप प्रदान कर दिया था। सृष्टि की विविधता को विसंगति नहीं कह सकते। विविधता में एकात्मता सृष्टि का सुघड़ सिद्धान्त है। इसी बात को विस्तार देते हुए दीन दयाल जी ने कहा कि समन्वय से समरसता बढ़ेगी। तब विसंगतियां निर्मूल होंगी। अन्त्योदय का चिन्तन उनका मौलिक विचार था। इसका भाव यह था कि समाज की सबसे अन्तिम सीढ़ी पर निराश खड़े लोगों पर ध्यान दो। उनके विकास की प्राथमिकता को महत्व दो। इसे विकास का मापदण्ड मानकर योजनाओं का सृजन किया जाय। उन योजनाओं को परिणिति तक पहुँचाया जाय। यही है महात्मा गाँधी के रामराज्य की परिकल्पना को साकार करने का सीधा राजमार्ग। अन्त्योदय के नारे को अलग अलग शब्दावलियां देकर भारत के राजनीतिक दलों ने अपनी विचारधाराओं को धार देने का प्रयत्न तो किया तथापि उनकी परिणिति पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया। महात्मा गाँधी, डॉक्टर राम मनोहर लोहिया, डॉक्टर भीम राव बाबा अम्बेडकर ऐसे महान राजनेता थे जिन्होंने दीन दयाल उपाध्याय के अन्त्योदय के सिद्धान्त के समानार्थी चिन्तन को अपने उद्‌बोधनों में पिरोया । गाँधी का रामराज्य तो निर्धन और हरिजन की झोपड़ियों की पीड़ा देखकर ही प्रस्फुटित हुआ था। डॉक्टर लोहिया ने अनेक बार कहा था कि विकास की गाड़ी तब तक गतिमान नहीं होगी जब तक 95 प्रतिशत निर्बल वर्ग पर ध्यान नहीं दिया जाता। बाबा साहब ने वंचितों के लिए विकास के विचार का निरूपण किया तो साथ ही उपेक्षा, घृणा और असमानता की वैमनस्य फैलाने वाली सोच को भी तिलांजलि देने के ऐसे सूत्र बताये जो युगान्तर परिवर्तनों को भारत की धरा पर उतारने की राह बन गये । दीन दयाल जी 1916 में जन्मे, गाँधी बाबा 1869 में, डॉक्टर लोहिया 1910 में और बाबा भीमराव अम्बेडकर का जन्म 1891 में हुआ। दीन दयाल जी असमय मार न डाले गये होते तो अन्त्योदय के विकास रथ को इन महान नायकों की सम्मति से आगे बढ़ते पिछली पीढियां देख चुकी होतीं। दीनदयाल जी पर स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉक्टर हेडगेवार, गुरुजी गोलवरकर की गहरी छाप रही। गुरुजी के संग उन्होंने संघ के प्रचारक का त्यागमय जीवन जिया। गुरुजी ने ही

उन्हें भारत के राजनीतिक समरांगण में प्रवेश करने की प्रेरणा दी थी। स्वामी विवेकानन्द जी का जीवन दीन दयाल जी के जन्म से 14 वर्ष पहले 1902 में पूर्ण हो गया था। परन्तु संघ ने ऐसी परिपाटी डाली कि भारत की नयी पीढियां प्रेम, समरसता, परमार्थ और त्याग की सनातन संस्कृति को जानने लगीं। भारतीय लोकतन्त्र के संख्याबल के सिद्धान्त का विकृत रूपान्तरण का कालखंड आया तो प्रेम, त्याग, परमार्थ और समरसता की बातों का लोप सा हो गया। घृणा, स्वार्थ और क्रोध की अग्नि में पवित्र सिद्धान्तों की पोटलियां भस्म की जाती रहीं। निर्धन, निर्बल और वंचितों की बातें तो बहुत हुईं परन्तु एक ओर खोखले शब्दों की वर्षा दूसरी ओर स्वार्थ की आँधियों ने भ्रष्टाचरण को लोकाचरण बना दिया।

भारत का लोकतन्त्र अपनी विशिष्टताओं को पुनः जगा रहा है। इसी का परिणाम है कि सूर्योदय की भाँति मौलिक सूत्रों की धूल झाड़ी जा रही है । भारतीय संस्कृति की नाविन्यता का प्रमाण भी यही है कि जब कहीं विचलन दिखा तो नया मार्ग भी प्रसूत होता रहा। उदभट चिन्तक दीन दयाल जी का दूसरा सर्वकाल सिद्ध सिद्धान्त एकात्म मानव दर्शन का है। यह दर्शन पूर्ण रूपेण भारतीय संस्कृति के आधारभूत सिद्धान्तों का वैज्ञानिक विवेचन है।

दीन दयाल जी ने बहुत सरल रीति से इसको 1965 के एक अधिवेशन में निरूपित किया था। यह अधिवेशन भारतीय जनसंघ का था। जिसके वह अध्यक्ष बने थे। उन्होंने बताया कि विकास का मौलिक भारतीय चिन्तन एकात्म मानव दर्शन पर टिका है। उन्होंने बताया कि केन्द्र स्थान पर मानव को रख कर देखें। उसके सबसे निकट एक घेरा है जो परिवार का है। परिवार के घेरे के बाद जाति का घेरा है। इसके उपरान्त गांव या बस्ती का सामाजिक घेरा है। इसके बाद का घेरा देश का , फिर संसार का और अन्ततः सृष्टि अर्थात ब्रह्माण्ड का घेरा है। ये सब घेरे परस्पर विलग नहीं अपितु सम्बद्ध हैं। एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती। मण्डला कृति के इन घेरों की सम्बद्धता को दीन दयाल जी ने भारतीय संस्कृति के मौलिक चिन्तन से आबद्ध करके संसार को समझाया। यह उस कालखण्ड की बात है जब भारत में साम्यवाद, समाजवाद, पूँजीवाद जैसे वादों पर चर्चा छिड़ी हुई थी। उपाध्याय जी ने यद्यपि मौलिक दर्शन की व्याख्या की थी तद्यपि वादों की चर्चा में उलझे लोगों ने इस दर्शन को भी एक वाद बता डाला। सच पूछो तो एकात्म मानव दर्शन को वाद की संज्ञा ही अनुचित है। दीन दयाल उपाध्याय जैसे मनीषी को राजनीति के एक दल का नायक भर मान लेना भी अनुचित है। उनके चिन्तन की व्याख्या जागृत पीढ़ियाँ करती रहेंगी। इसमें तनिक भी सन्देह अथवा विवाद नहीं है कि वह आधुनिक समर्थ भारत, सर्वश्रेष्ठ भारत की कल्पना को साकार करने की आधारशिलाएं नये भारत के कर्णधारों के हाथों में थमा गये हैं। दीन दयाल जी का आग्रह सदा इस बात पर रहता था कि भारत का विकास मॉडल भारत के लोगों की मौलिक चिन्तन धाराओं के मेल से खोजा जाना चाहिए। दूसरे देशों से आयातित विचार और वाद हमारे काम के नहीं हैं। हमें अपनी आवश्यकताओं और परिस्थितियों को परख कर अपनी मौलिकता को बिगाड़े बिना आगे बढ़ना चाहिए। संसार जब भोगवाद पर केन्द्रित होकर चिन्तन कर रहा था तब दीनदयाल जी ने त्याग, परमार्थ और प्रेम की आधारशिला का महात्म्य समझाया। यह बड़ी बिडम्बना है कि आज संसार के अनेक वाद भोगवादी सोच के कारण ज्वलन्त प्रश्नों पर निरुत्तर खड़े हैं। विनाश की घण्टियाँ जब जब बजने लगती हैं संसार के अनेक वाद असहाय्य मुद्रा बनाकर खड़े हो जाते हैं। तब लगता है कि दीनदयाल जी के एकात्म मानव दर्शन की ओट ली होती तो आज इस दशा तक नहीं पहुँचते। नैराश्य के इन पलों से संसार को भारत की चिन्तन धारा ही बाहर निकाल सकती है। जब जब दीनदयाल जी की पुस्तकों के पन्ने संसार के लोग पलटेंगे उन्हें यह महा मानव सही राह पर चलना सिखाता रहेगा। ऐसी राह जिसमें सृष्टि के प्रत्येक अवयव के कल्याण और सबकी आवश्यकताओं की सम्पूर्ति का मूल भाव समाहित होगा। श्रीराम चरित मानस में गोस्वामी तुलसी दास जी ने रामराज्य की परिकल्पना बड़े सुन्दर ढंग से बतायी है।

अल्प मृत्यु नहिं कवनिउ पीरा ।
सब सुन्दर सब विरुज शरीरा ।।
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।
नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना ।।

■

पत्र

केशव संवाद पत्रिका का अप्रैल 2021 का अंक मिला इस अंक में "पर्यावरण" लेख द्वारा लेखिका ने पर्यावरण की सार्वभौमिकता जो आज के आधुनिक अंधाधुंध विकास के कारण विषय की गंभीरता एवं विषय की परिसीमाओं पर लेखिका का प्रयास पूर्णतः गंभीर एवं मन के हर कोने को झिझोड़ रहा है परंतु पर्यावरण पर इतिहास के शासकों का प्रभाव अक्षुण है। हम सभी ने अपने इतिहास की पुस्तकों में बारहवीं सदी से पहले पढ़ा है कि कैसे कुशल शासन काल में ग्राम, तहसील, जिला व राज्यों की पूर्ण नगरीय परिकल्पना का विकास करा था उसने एक कोस प्रणाली के आधार पर जी टी रोड (ग्रैंड टैंक रोड़) के किनारे निश्चित दूरी पर ग्राम, तहसील व जिले का निर्माण किया था। हर 7 कोस मतलब करीब 11 मील पर एक गांव, तहसील व्यवस्थित की परंतु आज के राजनितिज्ञ आजादी के 70 साल पूर्ण होने के बावजूद भी गांव, शहर, तहसील, बड़े शहर, छोटे शहर को परिभाषित भी नहीं कर पाए हैं क्योंकि वह प्रशासनिक अधिकारियों के साथ मिलकर पूर्ण रूप से स्वपोषित, स्वयं विकास में लगे हुए हैं। शहरीकरण का आज के लिए सच्चा उदाहरण नोएडा विकास प्राधिकरण, ग्रेटर नोएडा विकास प्राधिकरण, यमुना विकास प्राधिकरण के उत्तरोत्तर विकास को देखकर हम समझ सकते हैं कि इनके मास्टर प्लान के तहत किए जा रहे आधुनिक विकास के रूप में एक उच्च बहु–बहुमंजलीय सोसाइटी के विकास को ही हम भारतीयों ने अपना विकास मान लिया है। जहां एक गांव के पूर्ण रकबे को देखा जाए तो पर्यावरण की दृष्टि से व्यवस्थाओं को एक छोटे से कंक्रीट भवन में हम किस तरह से पर्यावरण को बचाएंगे और एक निश्चित दूरियों पर एक ग्रीन जोन का विकास कर पाएंगे जिससे पृथ्वी सांस ले पाए और अपने पारिस्थितिक तंत्र को विकसित कर सके।

- मोनिका चौहान, नोएडा

सांस्कृतिक क्षेत्र में भारत उदय

अशोक कुमार सिन्हा
प्रमुख, विश्व संवाद केन्द्र, अवध
एवं पूर्व प्रशासनिक अधिकारी, उत्तर प्रदेश

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम प्रधान संस्कृति है। सम्पूर्ण भारत खण्ड की सांस्कृतिक प्रथाओं, भाषाओं, रीति–रिवाजों आदि में विविधता में भी एकता का दर्शन एक महान विशेषता मानी जाती है। 'सर्व खल्वमिदं ब्रह्म' अलग–अलग वस्तुओं में निरन्तरता और परस्पर अवलम्बिता देखना, सम्बद्धता देखना और तद्नुरूप विश्वास रख कर आचरण करना भारत का अनूठा विश्वास है। देश काल में रहते हुये देशकाल का अतिक्रमण करते रहने का सामर्थ्य भी हमारी सांस्कृतिक विशेषता है। जहां रहे, जब रहें, उनके साथ संगति बिठा कर रहें, उसकी अपेक्षाओं को पूरा करें, पर उस देश काल के आगे की सम्भावनाओं का भी ध्यान रखे और जहां कहीं असंगति या कुछ असंतुलन आ रहा है, वहां देशकाल से आगे चले जाने का साहस करें, यह बोधिसत्व दिखाना भारतीय संस्कृति है। चित्तवृत्ति की गम्भीर–से–गम्भीरतर साधना के बिना संस्कृति का उच्चतर प्रयोजन सिद्ध नहीं होता है। भारतीय संस्कृति किसी न किसी उच्चतर जीवन उद्देश्य या मूल्य से प्रेरित है। अपने लिये जीना सार्थक जीना नहीं है। गतिशीलता ही संस्कृति है। ठहराव इसी संस्कृति के अनुसार चलने पर बनी हुई कुछ राहें हैं, आचरण के बने हुये कुछ सांचे हैं। संस्कृति मानव चित्त की खेती है। खेत की उर्वरता को बार–बार सुनिश्चित करने के लिये जोता जाता है, नीचे की मिट्टी ऊपर कर बीज रोपित किये जाते हैं। इस प्रक्रिया में नये किसलय निकलते है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति को 'नित नूतन–चिर पुरातन' कहा जाता है।

भारत की संस्कृति बहुआयामी है जिसमें भारत का महान इतिहास, विलक्षण भूगोल, प्राचीनतम, सुविकसित सभ्यता, वैदिक युग की प्राचीनतम विरासत, एवं विश्व को मनवता का शिक्षा व संदेश देने की क्षमता विद्यमान है। भारत कई धार्मिक प्रणालियों और पंथों का जनक है, जिससे पूरा विश्व प्रभावित हुआ है। यहां कर्म की प्रधानता है। संस्कृति की प्राचीनता के साथ अमरता है जो कई क्रूर थपेड़ो को खाती हुई आज भी जीवित है। जगतगुरु होना इसकी नियति है। सर्वांगीणता, विशालता, उदारता, प्रेम और सहिष्णुता इसकी संगठित शक्ति है।

समय की गति तथा विश्व की समयानुकूल बदलती संरचना साम्राज्यवाद, साम्यवाद, समाजवाद, भौतिक क्रान्ति तथा 1200 वर्षों की क्रूर, गुलामी ने इस देश की संस्कृति, सभ्यता, मानवबिन्दुओं और मनोबल को क्रूरतापूर्वक दबाया, कुचला और नष्ट करने का बहुविध प्रयास किया। इसमें भारतीय संस्कृति धूमिल अवश्य हुई परन्तु काल उसे मिटा नही सका। भारतीय दर्शन, धर्म, समाज, परिवार, परम्परा एवं रीति, वस्त्र विन्यास, साहित्य, इतिहास, महाकाव्य, संगीत, नृत्य, नाटक, रंगमंच, चित्रकारी मूर्तिकला, वास्तुकला, मनोरंजन, खेल, सिनेमा, रेडियो और मीडिया सब स्मृति श्रुति, स्मृति आचरण व विचार में अक्षुण रहे। वर्तमान युग को हम भारतीय संस्कृति के पुनरोदय काल के अन्तर्गत विभाजित कर सकते हैं। स्वतन्त्रता के बाद भारत ने बहुआयामी सामाजिक और आर्थिक प्रगति की है। कृषि में भारत आत्मनिर्भर बना है और औद्योगिक क्षेत्र में इसकी महान उपलब्धियों ने दुनिया का एक अग्रणी देश बना दिया है। भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा बलवती होने लगी है तथा भारत की छवि विश्व में तेजी से बदली है। सिन्धुघाटी सभ्यता, वैदिक सभ्यता, स्वर्णयुग, बौद्धयुग, सिकन्दर का आक्रमण, गुप्त साम्राज्य, हर्षवर्द्धन, विक्रमादित्य, मौर्य साम्राज्य आदि के बाद भारतीय संस्कृति के पुनरोदय का वर्तमान काल मील के पत्थर सिद्ध हो रहे हैं। आज भी भारत राम–कृष्ण का देश कहा जाता है। हिन्दू शब्द पूरे विश्व में भारत का पर्याय माना जाता है। आर्यावर्त, भारत खण्डे, जम्बू द्वीपे यह हमारा संकल्पीय पहचान है। धीरे–धीरे हम जिसे विस्मृत करते जा रहे थे अब पुनः उसका पुनरोदय होने लगा है। अपनी भाषा, अपनी पहचान तथा अपनी संस्कृति पर गर्व का भाव उदय होने लगा है।

भारतीय मेधाशक्ति ने सम्पूर्ण विश्व में चमत्कार कर विज्ञान प्रौद्योगिकी, धर्म, संस्कृति और सभ्यता में भारत का मस्तक ऊंचा किया है। स्वामी विवेकानन्द ने जो विश्व का ध्यान इस प्राचीनतम संस्कृति की ओर खींचा था, अब उस ताप को विश्व अनुभव करने लगा है। यहां के साधू, संतों, योगियों ऋषियों, संन्यासियों सहित यायावर सांस्कृतिक महापुरुषों ने विश्व के समस्त देशों में भ्रमण कर भारतीय ज्ञान–विज्ञान, आध्यात्म योग और विश्व बन्धुत्व का संदेश दिया और दे रहे है जिसे अब विश्व स्वीकार करने लगा है।

विश्व के 171 देशों ने संयुक्त राष्ट संघ में विश्व योग दिवस के पक्ष में मत दे कर योग की महता स्वीकार की। पूरा विश्व अब योग विज्ञान को मानवता के लिये लाभकारी मानने लगा है जिसमें कई इस्लामिक राष्ट्र भी सम्मिलित थे। यह भारतीय संस्कृति का पुनरोदय है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया" का भारतीय उदघोष अब भारत के बाहर सम्पूर्ण विश्व में फैल रहा है। अब एकजुट सांस्कृतिक भारत की गरिमा का प्रमाण भारतीय नागरिकों को एयरपोर्ट पर दिखाई देता है जब उनको सम्मानपूर्वक दूसरे देशों में प्रवेश मिलता है। यहां के राजनैतिक नेतृत्व का लोहा पूरा विश्व मान रहा है। सम्पूर्ण विश्व में कोरोना महामारी के समय वैक्सीन की जब महती आवश्यकता थी तो भारत संकटमोचन बन कर सबसे

पहले टीका विकसित कर पूरे विश्व में भेजने का सम्मान प्राप्त कर चुका है। जीवन रक्षक क्लोरोहाइड्रोक्वीन दवा को भारत ने ही सर्वत्र मांग के अनुसार भेजा जिससे भारत के "सर्वे संतु निरामया" के उदघोष की सार्थकता सिद्ध हुई।

विगत 490 वर्षों से अटका रामजन्म भूमि का विवाद अन्ततः सम्पूर्ण विश्व के समक्ष शान्तिपूर्ण ढंग से सुलझा लिया गया। मन्दिर निर्माण प्रारम्भ हुआ और जिस हनक और गरिमा से भारत के प्रधानमंत्री तथा राष्ट्र स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत द्वारा 5 अगस्त 2020 को उसका भूमि पूजन हुआ, वह राम राज्य के शंखनाद के रूप में दुनिया ने देखा। भारतीय संस्कृति के पुनरोदय का यह काल है। 21वीं सदी भारतीय संस्कृति की सदी के रूप में स्थापित हो रही है। विश्व को यदि शान्ति और सुख चाहिये तो उसे भारत की संस्कृति की ओर ही वापस लौटना होगा।

भारत ने दुनिया के हृदय में स्थान बनाया है। साम्राज्यवादियों और जिहादियों की भांति किसी की भी भूमि नही हड़पी है। परमाणु शक्ति सम्पन्न देश होते हुये भी अपनी संस्कृति की गरिमा पर भारत आज भी दृढ़ है। जम्मू–कश्मीर में धारा–370 व 35ए को समाप्त कर विश्व को बता दिया गया है कि भारत किसी के आगे झुकने वाला नही है। खीर भवानी मन्दिर हो या शंकराचार्य मन्दिर, कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। यह ऋषि कश्यप का बसाया क्षेत्र है। भारत आतंकवाद का समूल नाश करने पर लगा हुआ है। भारतीय संस्कृति शान्ति और सुरक्षा के साथ रहने और जीवन यापन करने का संदेश देती है।

'शस्त्रेण रक्षिताम् राष्ट्र' राष्ट्र की रक्षा शस्त्र से होती है– इस क्षेत्र में भारतीय सैन्य बल को मजबूत कर भारत अस्त्र–शस्त्रों के मामले में तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। चीन और पाकिस्तान जैसे विश्व के अन्य देश भी अब भारत को और भारतीय सांस्कृतिक पहचान को समझने लगे है। इतिहास का पुर्नलेखन हो रहा है। भारत का गौरव पूर्ण इतिहास विश्व के समक्ष रखा जा रहा है। वामपंथियों के द्वारा शिक्षा और इतिहास के साथ जो क्षद्म खेल विगत 70 वर्षों में खेला गया था, अब भारत नई शिक्षा नीति और इतिहास संकलन व पुर्नलेखन के माध्यम से उसे ठीक करने में लगा है। मथुरा–काशी के मन्दिरों के पुनरुद्धार की मांग जोर पकड़ रही है। राष्ट्र विरोधी शक्तियाँ हतोत्साहित हो रही है। भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में सबल बन कर विश्व को अपना विराट रूप दिखाने की ओर अग्रसर है। राष्ट्रीय शक्तियां जाति, पंथ, मजहब की सीमा तोड़ कर एक होने का प्रयास कर रही है। रामसेतु और राम को काल्पनिक मानने वालों का मनोबल टूट रहा है और वे सांस्कृतिक राष्ट्र की शक्ति के आगे नतमस्तक हो रही हैं।

राष्ट्र रामन्दिर के रूप में राममन्दिर का अयोध्या में जब निर्माण प्रारम्भ हुआ तो पूरे विश्व से धनसंग्रह अभियान में गरीब–पिछड़े–अगड़े सभी ने योगदान दिया। काकोरी और सुहेलदेव के इतिहास प्रकाशित होने लगे। लॉकडाउन काल में स्वच्छता–सफाई और एक दूसरे की परस्पर सहायता का जो भाव जगा उसने जाति–वर्ण को बहुत पीछे छोड़ दिया। भारत एक है और वह किसी संकट का सामना करने में सक्षम है, यह स्वाभिमान जगा है। स्वाभिमानी राष्ट्र के रूप में भारत की पहचान बनी है। यही भारत का सांस्कृतिक पुनरोदय है। ■

मंथन

वैभव नव भारत का

डॉ. अनिल निगम
डीन, पत्रकारिता तथा जनसंचार विभाग
आईआईएमटी कॉलेज, ग्रेटर नोएडा

"भारत-वैभवं"

वन्दे नितरां भारतवसुधाम्।
दिव्य हिमालय-गंगा-यमुना-सरयू-
कृष्णशोभितसरसाम्।।

अर्थात भारत की उस वैभवपूर्ण धरा को प्रणाम, जहां पर दिव्य हिमालय विराजमान है और गंगा, यमुना, सरयू और कृष्णा जैसी नदियां प्रवाहित होती हैं। उक्त श्लोक निःसंदेह भारत के प्राचीन वैभव को दर्शाता है, लेकिन आज एक बार फिर नए भारत का उदय हो रहा है। ज्ञान गंगा का प्रवाह अविरल बह रहा है। भारतीय संस्कृति एवं परंपरा का प्रभुत्व बढ़ रहा है। आज हमने औद्योगिक उत्पादन के मामले में आत्मनिर्भरता की ओर मजबूत कदम बढ़ा दिए हैं। हालांकि भारत भी वैश्विक महामारी कोरोना की गिरफ्त में है। बावजूद इसके भारत 'वसुधैव कुटुंबकम्' के सिद्धांत का पालन करते हुए सभी जरूरतमंद देशों को पहले कोरोना की दवाएं और अब उसकी वैक्सीन उपलब्ध करा रहा है। भारत की इस मानवीय उदारता ने उसको विश्व पटल पर एक नई पहचान दिलाई है।

गौरवशाली ज्ञान परंपरा के चलते प्राचीनकाल से भारत की पहचान जगत् गुरू के तौर पर रही है। हमारी ज्ञान परंपरा और संस्कृति ही हमें अन्य राष्ट्रों से अलग करती है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति पुरातन होते हुए भी चिर नवीन बनी हुई है। वैदिक काल की अनेक परंपराओं का पालन आज भी किया जाता है। देश, काल और परिस्थितियों के अनुरूप उसमें परिवर्तन अवश्य किया गया है। इसी का परिणाम है कि भारत की अनेक परंपराओं पर देश और विदेश में अनुसंधान किया जा रहा है। जब वर्ष 1992 में ब्राजील के शहर रियो डी जिनेरो में विश्व पृथ्वी सम्मेलन आयोजित हुआ तो वहां पर उपस्थित विश्व के सभी देशों के वैज्ञानिकों ने अथर्ववेद में उल्लेखित पृथ्वी सूक्त को पृथ्वी संरक्षण और पर्यावरण में सुधार के लिए आदर्श आधार के रूप में स्वीकार किया। वृक्षों के पर्यावरणीय महत्व को पश्चिमी जगत अब स्वीकार कर रहा है जिसे भारतीय शास्त्रों ने सहस्त्रों वर्षों पूर्व उद्घोषित किया था। इसी तरह से योग की महत्ता को समझते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता दी है।

चीनी वायरस (कोविड–19) नामक महामारी संपूर्ण विश्व के लिए एक बड़ी चुनौती बनकर उभरी है। यद्यपि भारत सरकार देश में बीमारी आने के साथ ही सचेत हो गई थी। यही कारण है कि प्रारंभ में इस महामारी का असर हमारे देश में अन्य देशों के मुकाबले मंद गति से हुआ था। लेकिन आज जब हमारे पास इस बीमारी से लड़ने का अनुभव और वैक्सीन दोनों हैं, समाज के विभिन्न वर्गों की लापरवाही के चलते देश में कोरोना के मामले उफान पर हैं और हमारे ऊपर एक बड़ा खतरा मंडराने लगा है।

यह भी सच है कि महामारी से लड़ाई लड़ने में समाज के विभिन्न अंगों ने अहम भूमिका निभाई। इस लड़ाई के असली योद्धा चिकित्सा और पैरा मेडिकल स्टाफ है। हालांकि इसमें लोकतंत्र के चौथे स्तंभ मीडिया ने भी काफी दिलेरी दिखाते हुए पल–पल की जानकारी लोगों तक पहुंचाई। महामारी के दौरान फ्रंट मोर्चे पर तैनात अनेक योद्धाओं को अपने जीवन को भी कुर्बान करना पड़ा। लेकिन इस महामारी ने भारत को एक बहुत बड़ी सीख दी और उसको आत्मनिर्भर बनने का एक दर्शन भी दिया।

24 मार्च 2020 से पहले हमारी निर्भरता चीनी माल पर बहुत अधिक थी। लेकिन देश में लॉकडाउन लगाने के बाद भारत ने अनेक क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनने की राह पर कदम बढ़ाए। इसका नतीजा यह हुआ कि

आज भारत मास्क, कोविड की जांच किट, वेंटीलेटर, पीपीई किट, कोरोना की वैक्सीन सहित विभिन्न क्षेत्रों में न केवल आत्मनिर्भर बन चुका है, बल्कि उसने वैक्सीन सहित तमाम चीजें अनेक देशों को उपलब्ध कराकर विश्व में अपनी अलग छाप बना ली है।

भारत ने अमेरिका, इस्राइल, सउदी अरब, अफ्रीका, ब्राजील, मोरक्को, म्यांमार, भूटान और नेपाल जैसे देशों को पहले हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन दवाएं और बाद में कोरोना की वैक्सीन देकर खूब वाहवाही लूटी। भारत ने अपनी वैश्विक जिम्मेदारी का अहसास करते अनेक देशों को दवाओं की खेप भेजी। यही कारण है कि सभी देशों ने इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भूरी–भूरी प्रशंसा की और उन्हें विश्व नायक का दर्जा दिया। निःसंदेह, प्रधानमंत्री के इस प्रयास ने भारत को विश्व के फलक पर एक बार फिर विशाल बना दिया है।

सर्वविदित है कि विकसित देशों सहित अनेक पश्चिमी देश भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के मुरीद हैं। हजारों युवा जोड़े भारत में न केवल यहां की रीति–रिवाज से वैवाहिक बंधन में बंधते हैं बल्कि वे भारत में आकर बसने की भी तीव्र इच्छा भी रखते हैं। इसके विपरीत कई बार तथाकथित चंद उन्नत भारतीय नए प्रतिमानों को आंख मीचकर स्वीकार कर रहे हैं। इसी के चलते हमारे समाज में अनेक बुराइयां और कुरीतियां व्याप्त हो गई हैं। वास्तविकता तो यह है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत समृद्ध एवं गौरवशाली है। इसमें समाज और राष्ट्र निर्माण का वृहद और उदात्त दर्शन अंतर्निहित है। विश्व हमारी परंपराओं का अनुकरण और अनुशीलन करने को तत्पर है। आज आवश्यकता है कि भारत के नीति नियंता और समाज को नेतृत्व प्रदान करने वाले लोग आत्मावलोकन करें और भारत को पुनश्च जगत् गुरू बनाने में अग्रदूत की भूमिका का निवर्हन करें। ■

ग्रामदोय से भारत उदय की ओर बढ़ता देश

प्रमोद भार्गव
वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार

ऋग्वेद की एक ऋचा है, ' विश्व पुष्टं ग्रामीण आसमिन अनातुरम' अर्थात मेरे गांव से ही मुझे विश्व के होने की पुष्टि होती है। मसलन खुशहाली और समृद्धि से परिपूर्ण ऐसे गांव हों, जहां से विश्व के उत्थान और संपन्नता का रास्ता खुलता हो। एक समय हमारे गांव वास्तव में समृद्धि के ऐसे ही स्रोत थे, इसीलिए देश सोने की चिड़िया कहलाता था। ऋग्वेद के इसी मंत्र से प्रेरणा लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 'ग्राम उदय से भारत उदय' की रचनात्मक पहल की है। यह निश्चय ही स्वागत योग्य है। इस लिहाज से जरूरी है कि 15 लाख गांवों को कृषि और कृषि आधारित उन लघु–कुटीर उद्योगों की श्रृंखला से जोड़ा जाए, जिनके चलते देश अतीत में सोने की चिड़िया कहलाता था।

भारत के गांव कितने समृद्धिशाली थे, इस तथ्य की पड़ताल यदि अतीत से करें तो पता चलता है कि ब्रिटेन का औद्योगिक साम्राज्य हमारे गांवों से लूटी गई धन–संपदा की ही नींव पर खड़ा हुआ था। अंग्रेजों की इस लूट का हैरत अंगेज खुलासा यहां अंग्रेज लेखकों की पुस्तकों से करते हैं। ब्रुक्स एडम्स ने अपनी पुस्तक 'द लॉ ऑफ सिविलाइजेशन एंड डीके' में लिखा है, 'शायद दुनिया के शुरू होने से अब तक कभी भी किसी भी पूंजी से इतना लाभ किसी भी व्यवसाय में नहीं हुआ है, जितना भारतवर्ष की लूट से अंग्रेजों को हुआ। क्योंकि यहां करीब 50 साल तक इंगलिस्तान से कोई मुकाबला करने वाला नहीं था। इस लूटे गए धन का उपयोग 1760 से 1815 के बीच अंग्रेजों ने अपने देश के औद्योगिक विकास में लगाया। वाकई ब्रिटेन का यही वह समय था, जब वहां आश्चर्यजनक उन्नति हुई। अकेली मुर्शिदाबाद की लूट का हवाला देते हुए अंग्रेज इतिहासकार ऑर्म ने अपनी किताब 'हिस्ट्री ऑफ हिंदुस्तान' में लिखा है, 6 जुलाई 1757 तक कलकत्ते की अंग्रेज कमेटी के पास चांदी के सिक्कों के रूप में 72 लाख 71 हजार 666 रुपए पहुंच गए थे। यह खजाना 100 संदूकों में भरकर 100 किश्तियों के जरिए नदिया पहुंचाया गया। वहां से अंग्रेजी जंगी जहाजों के मार्फत झंडे फहराते व विजय का डंका पीटते हुए इस धन को ब्रिटेन रवाना किया गया। इससे पहले अंग्रेज कौम को एक साथ इतना अधिक नगद धन कहीं से नहीं मिला था।' विलियम डिग्बे ने लिखा है, 'प्लासी से वाटर लू तक यानी 1757 से 1815 के बीच करीब एक हजार मिलियन पौंड यानी 15 अरब रूपए भारत से लूटकर इंगलिस्तान भेजे गए। मसलन इन 58 वर्षों में 25 करोड़ रुपए सालाना कंपनी के अधिकारी भारतीयों को लूटकर ब्रिटेन भेजते रहे। इस लूट की तुलना में महमूद गजनवी और मोहम्मद गौरी की लूटों की तुलना के बरक्स पहाड़ की तुलना राई से करने जैसी है।

इन बानगियों से स्पष्ट होता है कि भारत के गांवों में न केवल खेती–किसानी उन्नत थी, बल्कि लघु व कुटीर उद्योग भी गुणवत्तापूर्ण उत्पादकता के चरम पर थे। उस समय तक न तो हमारे यहां उद्योगों का यांत्रिकीकरण हुआ था और न ही हम वस्तुओं का आयात दूसरे देशों से करते थे। बावजूद ज्ञान परंपरा के बूते आत्मनिर्भर थे। स्वाधीनता के बाद जगह–जगह कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान व अनुसंधान केंद्र और प्रशिक्षण केंद्र खोले गए। इन संस्थागत ढांचों ने हमारी पारंपरिक खेती का अध्ययन किए बिना ही विदेशी तकनीकों को

अपनाकर खुद अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारने का काम किया। इस तकनीक से 50 साल के भीतर ही शत–प्रतिशत खेती का यांत्रिकीकरण हो गया। किसान को कर्ज देकर ट्रेक्टर व अन्य कृषि उपकरण खरीदवाए गए। तब यह वातावरण बन गया था कि ट्रेक्टर प्रगतिशील कृषक की निशानी है। किंतु कालांतर में यही लाभदायी दर्शन, महंगी खेती का कारण तो बना ही, किसान की अर्थव्यवस्था को चौपट करने का सबब भी बना। इस आग में घी डालने का काम रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाओं ने किया। इन उपायों ने एक ओर जहां भूमि की सेहत खराब की,वहीं दूसरी तरफ कर्ज का मारा किसान आत्महत्या को विवश हुआ। बावजूद हमारी नीतियां खेती में मशीनीकरण को बढ़ावा देने में लगी हैं। कृषि विवि वही पाठ्यक्रम पढ़ा रहे हैं,जो अमेरिका और ब्रिटेन की कृषि एवं अर्थव्यवस्था के अनुरूप बने हैं। हमारी पारंपरिक खेती में रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों का उपयोग वर्जित है। क्योंकि हमारे यहां केचुएं जैसे कीट खेत की मिट्टी को जैविक तरीके से उपजाऊ बनाने का काम करते हैं। लेकिन आयातित शिक्षा के अनुरूप जब हमने कीटनाशकों का उपयोग बड़े पैमाने पर शुरू कर दिया तो हमारे खेतों से केंचुआ लुप्त हो गया। अमेरिकी जमीन में कीटनाशक इसलिए लाभदायी हो सकते हैं, क्योंकि वहां बर्फीली भूमि और तापमान कम होने के कारण केंचुआ पाया ही नहीं जाता है। गोया कृषि पाठ्यक्रमों को भी भारतीय भूमि और भूगोल के अनुसार बदलने की जरूरत है ?

हालांकि अब बदलाव आ रहा है। वर्मी कॉम्पोस्ट प्रक्रिया के जरिए केंचुए पैदा करके खेतों में डाले जा रहे हैं। रासायनिक खाद के बदले गोबर, गौमूत्र और नीम के घोल के उपयोग किए जाने लगे हैं। किंतु यह परिवर्तन तब आया, जब हमने पंजाब की बरबादी से सबक लिया। पंजाब भारत में रासायनिक खादों और कीटनाशकों का सबसे ज्यादा इस्तेमाल करने वाला राज्य है। पंजाब में भी इसका सबसे अधिक उपयोग मालवा क्षेत्र में हुआ। इनकी अधिकता ने मानव स्वास्थ्य और स्थानीय पर्यावरण को इतना नुकसान पहुंचाया कि आज पूरा मालवा क्षेत्र कैंसर के भयावह संकट से जूझ रहा है। यहां की मिट्टी की उर्वरा क्षमता का नाश हो चुका है। बावजूद अभी कृषि नीतियों में व्यापक बदलाव के संकेत नहीं मिल रहे हैं।

भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के बाद अंग्रेजों ने बड़ी चतुराई से पहले भारत में देशी उपकरणों व तरीकों से की जाने वाली खेती को समझा और फिर उसे मशीनीकरण में बदलने के षड्यंत्रकारी उपाय किए। भारत की खेती को उन्नत और वैज्ञानिक बताते हुए 1795 में कैप्टन थॉस हालकॉट ने कंपनी को लिखे एक पत्र में लिखा, 'अब तक मैं मानता था कि कतारबद्ध जुताई एवं बुवाई आधुनिक यूरोप का आविष्कार है, लेकिन अभी मैं दक्षिण भारत के एक खेत से गुजरा तो खेती की तकनीक देखकर हैरान रह गया। मैंने पंक्तिबद्ध हल–बैलों से जुताई देखी। वह अद्वितीय हल भी देखा, जो बेहद कलात्मक तरीके से बनाया गया था। किसानों से पूछने पर पता चला कि इसी तरीके से पूरे देश में जुताई व बुवाई होती है। कई प्रकार के अनाज, दालों, कपास, सन और तिलहन फसलें उगाई जाती हैं। बीज बोने की यहां जो तकनीक हाथ से अमल में लाई जाती है, वह ब्रिटेन में अपनाई जाने वाली यांत्रिकीकरण से कहीं ज्यादा कारगर है। यहां प्रयोग में लाया जाने वाला हल भी हमारे यांत्रिक हल से कहीं ज्यादा बेहतर, सस्ता और सरल है। इसे खराब होने पर स्थानीय बढ़ई ही दुरूस्त कर देते हैं।'

इस जानकारी के बाद फिरंगियों ने ब्रिटेन में निर्मित खेती के काम आने वाले यांत्रिक उपकारणों को भारत लाना और उनसे खेती करने का रास्ता प्रशस्त करने की विधि अपनाई। इसके बाद उत्तरोत्तर ऐसा मशीनीकरण होता चला आ रहा है कि हम आजादी के 70 साल बाद भी उससे छुटकारा नहीं पा पाए हैं। आज कृषि और किसान की दुर्दषा का यही यांत्रिकीकरण प्रमुख कारण है।

ग्राममोदय से भारतोदय करना है तो कृषि को देशज उपायों से उन्नत करने के साथ लघु एवं कुटीर उद्योगों को भी ग्राम व कस्बाई स्तर पर सक्षम करना होगा। क्योंकि अकेली फसल उगाकर किसानों के समृद्धि

की बात तो छोड़िए, उन्हें पेट पालना भी मुश्किल है। अंग्रेजों के हुक्मरान बनने से पहले तक हम वस्त्र, लौह, जहाजरानी, चीनी और कागज निर्माण के उद्योगों में अग्रणी देश थे। वस्त्र रंगाई की कला में हमारे शिल्पकार अत्यंत निपुण थे। यही वजह है कि आज भी वाराणसी, चंदेरी और महेश्वर में उच्च गुणवत्ता की साड़ियां हथकरघों से बनाई जा रही हैं। ज्ञान परंपरा से दक्ष इन कारीगरों से सीखने की बजाए हम कौशल प्रशिक्षण में करोड़ों रुपए खर्च कर रहे हैं। संस्थागत प्रशिक्षक सैद्धांतिक ज्ञान तो साझा कर सकते हैं, लेकिन प्रायोगिक ज्ञान में वे सर्वथा अनभिज्ञ होते हैं। नतीजतन हमारे जिला उद्योग केंद्र अर्जियों को कर्ज हेतु बैंकों तक पहुंचाने का जरिया भर बनकर रह गए हैं। तकनीक के व्यावहरिक ज्ञान में यह पूरा संस्थागत ढ़ांचा लगभग शून्य है। वैसे भी कोई एक दिमाग हजारों प्रकार के वस्तु निर्माण की जानकारी देने में निपुण नहीं हो सकता है। अंग्रेजी शिक्षा और आयातित तकनीक के मोह ने हमें इतना दिग्भ्रिमित कर दिया है कि आज हम यह मानने को शायद ही तैयार हों कि लघु उद्योगों की तकनीकें फिरंगियों ने हमसे चुराई थीं। भारत वस्तुओं के निर्माण में अपनाई जाने वाली तकनीक की दृष्टि से कितना बहुआयामी देश था, इसे पहले अंग्रेजों की भाषा में ही जानते हैं।

उद्योगों से जुड़ी तकनीकों के रहस्य–सूत्र पहले फिरंगियों ने शिल्पकारों से रजामंदी से जानना चाहे, किंतु जब इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली तो उन पर अमानुषिक जुल्म ढाए गए। जे.बी. कीथ ने 7 सितंबर 1891 के 'पायनियर' में लिखा है, 'हर कोई जानता है कि शिल्पकार एवं कारीगर अपने पेशागत रहस्यों को सावधानीपूर्वक छिपाकर रखते हैं। यदि आप डूल्टन के मिट्टी के बरतनों के कारखानों को देखने जाएं तो सौजन्यता के साथ आपको टाल दिया जाएगा। फिर भी हिंदुस्तानी कारीगरों को मजबूर किया गया कि वे अपने कपड़ों के थानों को धोकर सफेद करने के तरीके और अपने दूसरे औद्योगिक रहस्य मैनचेस्टर वालों को प्रकट कर दें। अंततः उन्हें रहस्य खोलने पड़े। इंडिया हाउस के महकमे ने एक कीमती संग्रह तैयार किया, ताकि उसकी मदद से मैनचेस्टर दो करोड़ पौंड अर्थात 30 करोड़ रुपए सालाना भारत के शिल्पकारों से वसूल सकें। इस तकनीकी अध्ययन संग्रह की प्रक्रिया ब्रिटेन के व्यापारियों के संगठन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स को मुफ्त भेंट की गई और देश की प्रजा को उसकी कीमत चुकानी पड़ी। संभवतः राजनीति के अर्थशास्त्र की दृष्टि से यह सब जायज हों, किंतु वास्तव में इस तरह के काम में प्रच्छन्न रूप से लूट की हैरतअंगेज भावना अंतनिर्हित है।

इस संग्रह में 700 प्रकार की वस्तुओं के नमूने और तरीके 18 बड़ी जिल्दों में इकट्ठे किए गए। संग्रह की 20 प्रतियां तैयार की गईं। इनमें से 18 जिल्दें ब्रिटेन के औद्योगिक प्रतिष्ठानों में रखी गईं। इस संग्रह को तैयार करके अंग्रेजों ने एक तीर से दो निशाने साधे। एक तो ब्रिटेन के कारीगरों को इस तकनीक में दक्ष किया और फिर वैसी ही वस्तुओं का निर्माण कराया। इसी प्रकारांतर में फिरंगियों ने भारतीय शिल्पकारों पर इतने जुल्म ढ़ाए कि आजीविका से तो उन्हें हाथ धोने ही पड़े,उनके अंग–भंग भी किए गए। यहां तक कि जिन्होंने विद्रोही तेवर दिखाए, उन्हें प्राण भी गंवाने पड़े। कालांतर में 11 सितंबर 1813 को मार्क्विस हेस्टिंग्स गवर्नर जनरल की हैसियत से भारत आया तो उसने अपने पूर्ववर्तियों की बर्बरतापूर्ण कार्यवाहियों को एक ऐसी नीति का रूप दे दिया, जिससे भारत के उद्योग–धंधे चौपट होते चले गए और ब्रिटेन के उद्योगों व उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं की उन्नति होने लग गई। इस बाबत यूरोपियन लेखक रॉबर्टसन ने लिखा है, '1760 तक ब्रिटेन में सूत कातने के यंत्र आविष्कार की अत्यंत आरंभिक अवस्था में तो थे ही, बेडौल भी थे, जबकि भारत में यही यंत्र बेहद उन्नत किस्म के थे।'

गोया, जब ब्रिटेन हमारे कपड़ा उद्योग पर अतिक्रमण कर रहा था, तब हमारे यहां 2400 और 2500 काउंट के महीन धागे बनाने में जुलाहे निपुण थे। केवल एक ग्रेन में 29 गज लंबे धागे हमारे कारीगर बना लिया करते थे। जबकि आज हम जिस कंप्यूटराइज्ड उन्नत व आधुनिकतम तकनीक की बात करते हैं, उसके जरिए भी 400 से 600 काउंट तक के धागे बनाए जाना संभव हो पा रहा है। ढाका और मुर्शिदाबाद में 2400 से लेकर 2500 काउंट तक के महीन धागे बनाए जाते थे। कारीगरों की इस दक्षता को नष्ट करने के लिए अंग्रजों द्वारा निर्ममतापूर्वक उनके अंगूठे काट दिए थे। इस दुष्टता के बाद भारत में ब्रिटेन के कपड़ा उद्योग को स्थापित करने का मार्ग खुल पाया था।

चार्ल्स ट्रेविलियन ने 1884 में एक रोजनामचे में लिखा है, '1816 में जितना सूती कपड़ा बंगाल से विदेशों को भेजा गया, उसका मूल्य 1,65,94,380 रुपए था। इसके बाद यह घटकर 1832 में 8,32,891 रुपए रह गया। इसके विपरीत ब्रिटेन का बना हुआ जो कपड़ा बंगाल में आया, उसका मूल्य 1814 में महज 45000 रुपए था, जिसकी खपत 1816 में बढ़कर 3,17,603 रुपए हो गई।' 1828 में यही खपत बढ़कर 79,96,383 रुपए हो गई। भारत वस्त्र निर्माण में इतना सक्षम देश था कि उसे 1832 तक एक गज सूत भी विदेश से आयात करने की जरूरत नहीं पड़ती थी, किंतु 1828 में करीब 80,00000 रुपए के कपड़ों के अतिरिक्त 35,22,640 रुपए का सूत भी ब्रिटेन से बंगाल आया। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि जो देशी वस्त्र बुनकर तथा कपास व सूत उत्पादक किसान इस व्यवसाय से करीब 1,80,00000 रुपए की पूंजी का वार्षिक उत्पादन किया करते थे, उनके आर्थिक स्रोत छिनने के बाद वे किसी बदहाली में रहे होंगे ? गोया, हमें घरेलू स्तर पर आयात के नीतिगत उपायों को ग्रामीण अर्थव्यवस्था की लाभ–हानि के स्तर पर समझना होगा ? इस दृष्टि से नरेंद्र मोदी नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार ने अहम् निर्णय बीते सालों में लिए हैं। किसान की आय बढ़ाने से लेकर फसल पर न्यूनतम मूल्य भी बढ़ाए हैं। ग्रामीण स्त्रियों को गेस सिलेंडर और शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाएं देकर उनके जीवन को सुरक्षित बनाने के सार्थक उपाय किए हैं। आयुषमान योजना भी गरीब, किसान और मजदूरों को गंभीर बीमारियों से निजात दिलाने का काम कर रही है। युवाओं को डिजीटल मध्ययमों में आर्थिक छूट देकर ग्रामीण उद्यमिता के लिए प्रोत्साहित किया है। इन संदर्भों में यदि चीन से लघु व कुटीर उद्योगों से जुड़ी सामग्री आयात करना बंद कर दिया जाए तो इन योजनाओं की उपलब्धियां सार्थक दिखने लग जाएंगी। ■

प्राचीन भारतीय चिकित्सा विधाओं के अभ्युदय से भारत उदय'

अनुपमा अग्रवाल
वरिष्ठ लेखिका एवं समाज सेविका

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा विधाएं हैं जो विशुद्ध रूप से भारतीय ऋषि मुनियों की देन हैं। जिसने विश्व को, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में बहुत कुछ दिया है जो अतुलनीय और अविस्मरणीय है और अभी भी मानव जीवन के लिए उतनी ही उपयोगी और कारगर है जितनी उस समय थी। योग, आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति, प्रकृति के अनुरूप जीवन जीने वाले व्यक्ति के शरीर की समस्त कोशिकाओं व शारीरिक तंत्र को न केवल पूरी तरह नियंत्रित और संतुलित रखती हैं बल्कि स्वस्थ रखते हुए शतायु प्रदान करती है। आयुर्वेद जहां प्राकृतिक जड़ी बूटियों से रोगों का उपचार करता है वहीं योग, श्वसन सम्बन्धी विभिन्न क्रियाओं के द्वारा मनुष्य को स्वस्थ रहने के तरीके सिखाता है जबकि प्राकृतिक चिकित्सा, बिना दवाओं के अर्थात प्राकृतिक रूप से काया को निरोगी रखना सिखाती है।

प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य

स्वास्थ्य रक्षणमातुरस्य विकारप्रशमनं च। (च.सू- 30.26)

अर्थात आयुर्वेद का पहला प्रयोजन ही व्यक्ति को रोगों से बचाकर उसे स्वस्थ रखना है।

चिकित्सा शास्त्र के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति ईसा पूर्व प्रथम सदी में हुई जबकि चरक व सुश्रुत जैसे सुप्रसिद्ध आचार्यों ने आयुर्वेद विषयक अपने ज्ञान से सम्पूर्ण विश्व को आलोकित किया। चरक की 'कृति चरक संहिता' कार्य चिकित्सा का प्राचीनतम प्रामाणिक ग्रन्थ है जो महर्षि आत्रेय के उपदेशों पर आधारित है। चरक संहिता का न केवल भारतीय अपितु सम्पूर्ण विश्व के चिकित्सा जगत के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है तथा इसका विभिन्न विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हो चुका है। भारतीय चिकित्सा शास्त्र का तो यह एक तरह से विश्वकोश ही है। चरक के कुछ समय पश्चात सुश्रुत का आविर्भाव हुआ। चरक कार्य चिकित्सा के प्रणेता थे तो सुश्रुत शल्य चिकित्सा थे। आयुर्वेद की आठ शाखाओं में से शल्य तंत्र अत्यंत महत्वपूर्ण विधा रही है। आचार्य सुश्रुत (500 ई.पू) ने सुश्रुत संहिता की रचना की जो शल्य चिकित्सा के मूल सिद्धांतों की उपयुक्त जानकारी देती है। इस दृष्टि से भारतीय शल्य विज्ञान, यूरोपीय शल्य विज्ञान से अठारहवीं सदी तक आगे रहा कहा तो यहां तक जाता है कि ईस्ट इंडिया कम्पनी के चिकित्सकों ने भी भारतीयों से इस विधा को सीखने में गर्व का अनुभव किया था।

हिन्दू धर्म के चार वेदों ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद में आयुर्वेद का वर्णन है, ऐसा आयुर्वेद का इतिहास गवाही देता है। बीमारी, चोट, असुरक्षा, पवित्रता व स्वस्थ रहने के तरीकों के अतिरिक्त त्रिदोष–वात, कफ, पित्त पर चर्चा व इनसे होने वाले विभिन्न रोगों के उपचार में प्रयुक्त होने वाली जड़ी बूटियों आदि की जानकारी भी ऋग्वेद में मिलती है। आयुर्वेद में रोगों की पहचान विभिन्न प्रश्नों और आठ परीक्षणों जैसे नाड़ी, मल, मूत्र, जिह्वा, स्पर्श, नेत्र, आकृति व शब्द द्वारा की जाती है। यह पद्धति केवल शरीर के उपचार तक ही सीमित नहीं है बल्कि व्यक्ति के मन, आत्मा व परिवेश पर भी पूर्ण दृष्टि रखती है तथा उपचार पद्धति में विभिन्न औषधीय गुण रखने वाली

वनस्पतियों व जड़ी बूटियों का इस्तेमाल किया जाता है। ऋषि चरक व सुश्रुत ने अपने ग्रंथों में औषधीय वनस्पतियों व जड़ी बूटियों का उल्लेख किया है। आयुर्वेद का मानना है कि मानव शरीर में वात, कफ व पित्त आवश्यक रूप से पाए जाते हैं जिनसे समस्त शारीरिक क्रियाएं नियंत्रित होती हैं परंतु इन तीनों का असंतुलन ही शरीर में प्रत्येक बीमारी का मूल कारण है। आयुर्वेद के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को छह रसों खट्टा, मीठा, खारा, कड़वा, तीखा, कसैला युक्त आहार ग्रहण करना चाहिए परन्तु किसी एक रस का कम या अधिक सेवन शरीर के लिए हानिकारक बन जाता है। अतः भोजन में ऐसे फल, सब्जी, अनाज, मसालों को सम्मिलित करना चाहिए जिससे शरीर में इन रसों का संतुलन बना रहे।

विभिन्न वनस्पतियों एवं जड़ी बूटियों से तैयार आयुर्वेदिक दवाएं न् केवल रोग को जड़ से समाप्त करती हैं बल्कि शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में भी वृद्धि करती हैं जिसका जीता जागता उदाहरण हमें गतवर्ष कोरोना महामारी के समय देखने को मिला। जब आयुर्वेद के बल पर भारत जैसे अत्यधिक जनसंख्या वाले देश में, अन्य देशों की अपेक्षा सबसे कम मृत्यु दर देखी गई। इसका सबसे बड़ा कारण यहां के लोगों का खानपान, रहन–सहन व प्राचीन चिकित्सा पद्धति पर विश्वास एवं भरोसा था। कोरोना काल में आयुर्वेदिक दवाओं ने लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने के साथ न केवल उनमें आत्मविश्वास पैदा किया बल्कि स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूक किया। प्रत्येक भारतीय परिवार की रसोई में इस्तेमाल होने वाला अनाज, दाल, सब्जी व मसाल दानी का प्रत्येक मसाला और विशेष रूप से गरम मसाला अपने आप में पूर्ण दवाई है। ये सभी मसाले न केवल भोजन को स्वादिष्ट और आकर्षक बनाते हैं बल्कि सुपाच्य और पौष्टिक भी बनाते हैं। हल्दी जहां एंटीबायोटिक का काम करती है वहीं सौंफ, अजवाइन, मेथी दाना पित्त को नियंत्रित करते हैं तो जीरा,धनिया पाचन में सहायक होते हैं जबकि लहसुन, अदरक, पुदीना वात को कम करते हैं। भोजन को सुगन्धित बनाने वाला गरममसाला तो पूर्ण औषधीय गुण लिए हुए है। इसी तरह प्रत्येक घर की बगिया में उगने वाली गुणकारी तुलसी, गिलोय, नीम व ग्वारपाठा आदि पौध का इस्तेमाल आयुर्वेदिक दवाओं में तो होता ही है साथ ही रसोई में भी इनका इस्तेमाल होता है। कहने का तात्पर्य है कि आयुर्वेदिक दवाओं में इस्तेमाल होने वाली ज्यादातर सभी जड़ी बूटियां एवं वनस्पतियां प्रत्येक भारतीय घर में प्रतिदिन उपयोग में लाई जाती हैं जो अंग्रेजी दवाओं की भांति शरीर पर विपरीत प्रभाव डाले बगैर शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करती है।

योग, हजारों वर्षों से भारतीय जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा रहा है ज्ञान, कर्म और भक्ति का मिश्रण योग, केवल भारत की धरोहर ही नहीं अपितु पूरी मानव जाति को एकजुट करने की शक्ति रखता है।योग में क्रमशः संयम, नियम, आसन, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि व प्राणायाम शामिल हैं। खासकर योग और प्राणायाम शरीर को हष्टपुष्ट रखकर बीमारियों से लड़ने में सहायक बनाते हैं। योग के विभिन्न आसनों से पेट, लिवर, आंतों को स्वस्थ रखने व प्राणायाम के द्वारा शरीर में प्राणवायु का उचित संचार करके व्यक्ति को आंतरिक रूप से सबल रखने का प्रयत्न किया जाता है। कोरोना काल में विश्वभर के लोग जो मानसिक रूप से हार मान चुके थे, योग और प्राणायाम ने उनमें नकारात्मक ऊर्जा का उत्सर्जन कर सकारात्मक ऊर्जा का संचार किया। आज भारत की योग पद्धति की महत्ता को पूरा विश्व पहचान चुका है और उससे स्वास्थ्य लाभ ले रहा है।

बाहरी दवाओं का इस्तेमाल किये बगैर प्राकृतिक पदार्थों से रोगों का निवारण प्राकृतिक चिकित्सा कहलाता है। इसके अनुसार मनुष्य में समस्त रोगों का मूल कारण अनुचित खानपान, अव्यवस्थित जीवनशैली तथा शरीर में उपस्थित मल है। तीर्थ स्थलों पर घूमना, उपवास रखना, संतुलित आहार ग्रहण करना, आश्रम में रहना, पैदल भ्रमण करना, सूर्य जल अग्नि व पेड़ पौधों की पूजा आदि प्राकृतिक चिकित्सा के उपचार के ही अंग हैं। जबकि भाप, गरारे, कुंजल, गर्म पानी का सेवन, नेती, नाक में तेल आदि प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के द्वारा कफ को कम अथवा समाप्त किया जाता है इसके अतिरिक्त मिट्टी के लेप, एनीमा, विभिन्न प्रकार के स्नान,पेट पर गर्म अथवा ठंडी पट्टी द्वारा पेट के रोगों का इलाज किया जाता है जबकि उपवास,फलाहार व सात्विक भोजन के द्वारा पित्त को नियंत्रित किया जाता है।प्राकृतिक चिकित्सा व्यक्ति की जीवन शैली में सुधार कर उसके पाचन तंत्र को मजबूत बनाते हुए उसे प्रकृति के नजदीक लाती है।

हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं कि प्राचीन भारतीय चिकित्सा विधाओं के अभ्युदय से भारत उदय संभव हो रहा है। कोरोना काल में व्यवस्थित जीवनशैली, संतुलित भोजन, नियमित योग व प्राणायाम के बलबूते ही देश में न केवल मृत्यु दर नियंत्रित रही बल्कि आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति को अपनाने व उसे जीवन में उतारने से महामारी को परास्त करने में सफलता मिली। कोरोना वैक्सीन का सफल परीक्षण तत्पश्चात दुनिया के देशों को वैक्सीन उपलब्ध कराकर भारत, सेवा की अग्रणी भूमिका में विश्व का प्रतिनिधित्व करता नजर आ रहा है साथ ही चिकित्सा संबंधी सामग्री का बड़ा निर्यातक देश बन आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। जरूरत है तो केवल इस बात की कि भारत सरकार प्राचीन भारतीय चिकित्सा विधाओं को आधुनिक वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति के अनुरूप अनुसंधानात्मक प्रमाणिकता प्रदान करे तथा आयुर्वेद के क्षेत्र में शोध करके उसे नए स्वरूप में देश व समाज के सम्मुख प्रस्तुत करे। ■

पौराणिक कथाएं

हमारे प्रमुख त्योहार

अरूण कुमार सिन्हा
वरिष्ठ लेखक, चिंतक एवं समाजसेवी

भारत त्योहारों का देश है यहाँ की संस्कृति सदियों पुरानी है। त्यौहार मानने की परम्परा नें सभी परिवारों के सदस्यों को एक साथ जोड़नें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। देश में सभी त्योहारों को उत्साह पूर्वक परिवार मिलकर एक साथ मनाते हैं। सभी त्योहार हमारे संस्कारों तथा वैदिक परंपराओं को आज की नयी पीढ़ी तक पहुँचाने का एक माध्यम भी हैं। देश अपने सांस्कृतिक और पारंपरिक त्योहारों के रूप में विख्यात है। यहां हर महीने त्योहारों का आनंद प्राप्त होता है। प्रत्येक उत्सव को अलग–अलग रीति–रिवाजों, विश्वासों और इसके पीछे के महत्वपूर्ण इतिहास के अनुसार अलग–अलग तरीकों से मनाया जाता है। हिंदू सनातन धर्म के मुख्य संप्रदाय वैष्णव, शैव, शाक्त और ब्रह्म सम्प्रदाय में अलग–अलग पर्व, त्योहार, व्रत या उत्सव का प्रचलन है। विश्व की तुलना में यहां अधिक त्यौहार मनायें जाते हैं। प्रत्येक त्यौहार का अलग अवसर से सम्बन्ध है, कुछ ऋतुओं का, फसल की कटाई का, वर्षा ऋतु के आगमन का अथवा पूर्णिमा, अमावस्या का स्वागत करते हैं। एकादशी हो, प्रदोष हो, अमावस्या हो सभी कहीं ना कहीं त्योहार के रूप में ही मनायें जाते हैं। जैसा पहले बताया कि प्रत्येक दिन ही उत्सव होते पर कुछ मुख्य मनाये जाने वाले त्योहार यहां वर्णित है –

मकर संक्रांति - सूर्य के उत्तरायण हो जाने पर पर्व मनाया जाता है। शीत काल के समाप्ति पर सूर्य मकर रेखा को काटते हुए उत्तर दिशा की ओर हो जाता है, इसे ही उत्तरायण कहते हैं। यही समय एक फसल कटने के बाद दूसरे फसल के लिए बीज बोने का भी समय होता है। 12 संक्रांतियों में मकर संक्रांति का महत्व अधिक है, क्योंकि यहीं से पवित्र शुभ काल आरम्भ होता है। उत्तरायण देवताओं के काल के रूप में भी माना जाता है। मकर संक्रांति के बाद से सभी त्योहार आरम्भ होते हैं। मकर संक्रांति का त्योहार पूरे देश में बड़े धूम धाम से मनाया जाता है। परम्परा के अनुसार तिल के बने लड्डू खाए जाते हैं। यह पर्व बसंत ऋतु के आगमन तथा गर्मी की शुरुआत भी मानी जाती है। मौसम बदलने से खान पान में बदलाव और आदतों में बदलाव की आवश्यकता को यह पर्व दर्शाता है। यह त्योहार पतंगों का त्योहार भी माना जाता है जिसमें हर्षों उल्लास से पतंगें उड़ाए जाते हैं।

बसंत पंचमी– माता सरस्वती की आराधना करने के दिन को तथा बसंत ऋतु के आगमन के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला त्योहार देश के बड़े भूभाग में धूमधाम से मनाया जाता है। मुख्य रूप से इस दिन माता सरस्वती की आराधना की जाती है। इसके पीछे एक पौराणिक कथा है की माघ माह के शुक्ल पक्ष के पंचमी को माँ सरस्वती ब्रह्मा जी के मुख से प्रकट हुई थी, इसी कारण इस दिन माता सरस्वती की आराधना की जाती हैं। देवी सरस्वती ज्ञान और विद्या की देवी मानी जाती हैं।

महाशिवरात्रि– शिव के इस पर्व को देश के कई राज्यों में मनाया जाता है। प्राचीन काल से कहा जाता है कि इस रात्रि में शक्ति और शिव का मिलन होता है। फाल्गुन महीने के कृष्ण पक्ष के चतुर्दशी को त्योहार मनाया जाता है। इस दिन शिव भक्त मंदिरों में शिव लिंग पर जल, दूध, तथा अन्य सामग्री अर्पित करते हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार इसी दिन शिव जी प्रकट हुए थे।

होली- होली का त्योहार सभी के जीवन में खुशियों का रंग भरता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार हिरण्य कश्यप और हिरण्याक्ष की बहन होलिका यह साबित करने के लिए विष्णु भगवान अपने भक्त प्रह्लाद को बचा लेंगे। अपने भाई के बच्चे प्रह्लाद, जो विष्णु भक्त थे, को गोदी में लेकर भाई के कहने पर होलिका में बैठ गयी थी होलिका तो जल गयी परन्तु प्रह्लाद वैसे ही सकुशल बैठे रहे।

होलिका दहन उसी उपलक्ष्य में मनाया जाता है और अग्नि की पूजा होती है। दूसरे दिन रंगों का त्योहार रंगों और गुलाल से होली त्योहार (रंगोत्सव) मनाया जाता है। यह लोकप्रिय और हर्षोल्लास से परिपूर्ण त्योहार है। विश्वास के अनुसार होली के चटक रंग ऊर्जा, जीवंतता और आनंद के सूचक हैं। सभी एक दूसरे को गुलाल और रंग लगाते है तथा गले मिलते हैं। इस त्योहार में विभिन्न प्रकार के पकवानों को बनाना तथा सभी का मिल कर स्वाद लेना भी मुख्य माना जाता है।

राम नवमी- भगवान राम के जन्म दिन के रूप में मनाया जाता है। हिन्दू कलेंडर के हिसाब से शक सम्वत् का प्रारम्भ इसी माह होता है। परम्परा के अनुसार इस दिन घर के रसोई में भोजन ना बनकर परिवार किसी बगीचे में आवलें के पेड़ के नीचे भोजन बनाते है। कहते है कि इस दिन आँवले के पेड़ में भगवान विष्णु और भगवान शिव का वास होता है। इसका वैज्ञानिक आधार है कि बदलते मौसम में आवलें के पेड़ के नीचे भोजन बनने से कुछ पत्तियाँ भोजन में बनाते समय गिरती है। आँवले में विटामिन सी बहुतायत में प्राप्त होती है जिनके सेवन मात्र से बहुत सी बीमारियों का आयुर्वेदिक इलाज हो जाता है तथा पेट के होने वाले आसन्न विकारों पर भी रोक लगती है।

ओणम - ओणम केरल का एक प्रमुख त्योहार है। ओणम केरल राज्य का भी पर्व है। यह उत्सव सितम्बर में राजा महाबली के स्वागत में आयोजित किया जाता है उत्सव दस दिनों तक चलता है।

श्री कृष्णा जन्माष्टमी- भगवान श्री कृष्ण का जनमोत्सव को कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है। जन्माष्टमी देश में बहुत ही प्रचलित है तथा बड़ी श्रद्धा से मनाया जाता है। बड़े एवं बच्चे प्रेम पूर्वक झांकी सजाते हैं जिसमें श्री भगवान कृष्ण के जीवन से सम्बंधित कथा कहानियों को दर्शाते हैं। हिन्दु पौराणिक कथा के अनुसार श्री कृष्ण का जन्म, मथुरा के असुर राजा कंस, जो उसकी सदाचारी माता का भाई था, का अंत करने के लिए हुआ था। बड़े धूमधाम से मनाए जाने वाले त्योहार में भक्त दिन भर का उपवास करते है और रात में बारह बजे भगवान का जन्म मनाते हैं।

पोंगल - तमिल हिन्दुओं का प्रमुख त्योहार पोंगल है। साधारणतया यह 14–15 जनवरी को मनाया जाता है। सूर्यभगवान को समर्पित त्योहार अन्न धन का दाता सूर्यदेवता को मान कर चार दिनों तक इसका उत्सव मानाया जाता है।

गुरू नानक जयन्ती - यह पर्व सिक्ख पंथ के संस्थापक गुरू नानक देव जी के जयंती के उपलक्ष्य में मनाई जाती है। गुरू नानक देव जी का जन्म वर्ष 1469 में लाहौर के निकट तलवंडी नामक स्थान पर हुआ था। इन्होंने एक प्रभुजो कि शाश्वत सत्य है के आधार पर धर्मस्थापना करने की प्रेरणा दी। गुरू नानक जयन्ती में तीन दिन का अखण्ड पाठ किया जाता है। पावन गुरू ग्रंथ साहिब को फूलों से सुरुचि पूर्व सजा कर बहुत ही शानदार जुलूस निकला जाता है। सभी गुरुद्वारों को सजाया जाता है तथा तरह तरह के कार्यक्रम लोगों के भलाई के भी चलाये जाते हैं।

वट सावित्री व्रत - सुहागन औरतों द्वारा मनाया जाने वाला यह त्योहार वट वृक्ष के पूजन से प्रारम्भ होती है। सुहागिन महिलाएँ लोक गीत गाते हुए वट वृक्ष के सात चक्कर लगाते हुए कच्चे सूत, जो पीलेरंग में रंग होता है, को वृक्ष के तने पर लपेटती है। धागे को लपेटते हुए लोक गीत में महिलाएँ अपने अपने सुहाग के रक्षा की कामना करती हैं। कहा जाता है की सावित्री ने वट वृक्ष के नीचे मृत पड़े अपने पति को पुनः जीवित किया था। महिलाएँ ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी को व्रत रख कर पूजन करती हैं। यह त्योहार गुजरात और उत्तर प्रदेश में अधिक मनाया जाता है।

जगन्नाथ यात्रा- वैसे तो जगन्नाथ भगवान की रथ यात्रा सभी जगह निकलती है लेकिन इसे भुवनेश्वर में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। बड़े–बड़े रथों का निर्माण किया जाता जिसे लोगों के द्वारा खींचा जाता है हर्षोल्लास के साथ मनाया जाने वाला यह पर्व पूरे भारत में मनाया जाता है।

रक्षा बंधन - भाई और बहनों का यह रक्षा बंधन त्योहार बड़े धूम धाम से मनाया जाता है। रक्षाबंधन का त्योहार श्रावण पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। रक्षाबन्धन पर्व में राखी का सबसे अधिक महत्त्व है। इस पवित्र दिन बहनें अपने भाई के हाथों में रक्षा सूत्र, राखी बांधती हैं और उनकी आरती उतारती हैं और इसके बदले वे अपने भाई से अपनी रक्षा का वचन मांगती है। राखी कच्चे सूत जैसे सस्ती वस्तु से लेकर रंगीन कलावे, रेशमी धागे, तथा सोने या चाँदी जैसी महँगी वस्तु तक की भी हो सकती है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भी अपने द्वारा मनाए जाने वाले छह पर्वों में इस पर्व को बड़े धूम धाम से मानता है। इस दिन सभी स्वयं सेवक एक दूसरे के कलाई पर राखी बांध कर एक दूसरे की रक्षा का संकल्प लेते हैं।

गणेश चतुर्थी- गणेश चतुर्थी हिन्दुओं के

प्रमुख त्योहारों में से एक है जो देश के विभिन्न भागों में बड़े धूम–धाम से मनाया जाता है। शास्त्रों के अनुसार भगवान गणेश का अवतरण इसी दिन हुआ था। स्थापित किए गए गणेश प्रतिमा की नौ दिन तक बड़े विधि विधान से पूजन किया जाता है। सुविधानुसार विशेष कारणों से एक दिन, तीन दिन, पाँच दिन में भी कई परिवार स्थापित प्रतिमा का विसर्जन करते हैं। नौ दिन बाद ढोल मजीरों तथा धूम धाम के साथ गणेश जी की मूर्ति को जल में विसर्जित किया जाता है। महाराष्ट्र में इस पर्व की अधिक मान्यता है।

नवरात्रि - देवियों का महत्व देश की संस्कृति पर सबसे ज्यादा है। प्रत्येक वर्ष आती है वो माघ, चैत्र, आषाढ़ और अश्विन माह में आती हैं। इनमें दो गुप्त नवरात्रि होती हैं माघ और चैत्र महीने की नवरात्रि त्योहार को बड़े धूम धाम से मनाया जाता है। यह नौ दिन तक चलनेवाला त्योहार बड़े भक्ति और सभी मान्यताओं को मानते हुए मनाया जाता है। देवी भक्तों द्वारा घट की स्थापना की जाती है तथा अखंड ज्योति जलाई जाती है जो लगातार नौ दिन तक प्रज्ज्वलित रहती है। देवी भक्त श्रद्धा पूर्वक नौ दिन तक उपवास करते हैं। नौवें दिन माँ गौरी की पूजा अर्चना के बाद छोटी बच्चियों को प्रसाद खिलाया जाता है तथा सामर्थ अनुसार दान भी करते हैं। नवरात्रि पर्व देश के विभिन्न भागों में अलग– अलग ढंग सेमनायी जाती है। गुप्त नवरात्रि को अधिकतर साधु महात्मा ही मनाते हैं।

दुर्गापूजा - दुर्गापूजा का पर्व हिन्दू देवी दुर्गा की बुराई के प्रतीक राक्षस महिषासुर पर विजय के रूप में मनाया जाता है। दुर्गा पूजा बुराई पर भलाई की विजय के रूप में भी जाना जाता है। बंगाल में माँ दुर्गा के विशाल मूर्तियों की पंडालों में स्थापना तथा विधि विधान से सार्वजनिक पूजन की जाती है।

दशहरा - दशहरा हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। भगवान राम ने इसी दिन रावण का वध किया था। दशहरा अश्विन शुक्ल पक्ष दशमी को मनाया जाता है। दशमी से लगभग सप्ताह पूर्व ही रामलीला प्रारम्भ हो जाता है जो दशहरा तक चलता है। रावण के पुतले का वध तथा बाद में भगवान श्रीराम द्वारा जलाना वास्तव में बुराई पर अच्छाई का प्रतीक होता है। कई स्थानों पर विजय दशमी को क्षत्रिय लोग अपने अस्त्र – शस्त्रों की पूजा भी करते है। देश के लगभग सभी नगरों, कस्बों में दशहरा मेलों का आयोजन भी किया जाता है।

करवा चौथ - यह व्रत कार्तिक माह के चतुर्थी को सुहागिनें अपने पति के लम्बे उम्र और अखण्ड सौभाग्य के प्राप्ति के लिए करती हैं। नारी शक्ति को दर्शाने वाला यह पर्व पौराणिक कथाओं के अनुसार माता पार्वती द्वारा भगवान शिव को तप द्वारा प्राप्त करने के दिन के रूप में मनाते हैं। रात में जब कभी भी चाँद के दर्शन होते है सुहागिनें उसके पूजन दर्शन के उपरांत ही व्रत का पारण करती हैं। चंद्रमा के साथ भगवान शिव, माता पार्वती, श्री गणेश जी, कार्तिके य जी की भी पूजा की जाती है।

अहोई अष्टमी - देश के बड़ेभाग में माताएँ अपनी अपनी सन्तानों की दीर्घ आयु और मंगलमय जीवन एवं आर्थिक समृद्धि के कामना के साथ एक दिन का उपवास रखती हैं। कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष के अष्टमी के दिन रात में तारे देखने के बाद ही व्रत का पारण पुत्रवती माता होई देवी का पूजन के पश्चात करती हैं। कहीं कहीं इसे कार्तिक कृष्ण अष्टमी के नाम से भी जाना जाता है।

दीवाली - शरद ऋतु में मनाया जाने वाला एक प्रसिद्ध हिन्दु त्योहार है। हमारे देश की सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक दीपावली लगभग पूरे भारत में मनाया जाता है। यह त्योहार भगवान राम के 14 वर्ष के वनवास के बाद अपने राज्य में वापस लौटने की स्मृति में मनाया जाता है। दीवाली का अर्थ है प्रकाश का त्योहार। यह त्यौहार नेपाल, सिंगापुर, श्रीलंका, इंडोनेशिया, सूरीनाम, त्रिनिदाद और अन्य देशों में जहाँ वर्षों से देश के लोग बस गए है वहां भी बड़ी धूम धाम से मनाया जाता है। दिवाली के अवसर पर सभी एक दूसरे को शुभ कामनाएँ देते हैं, मिठाइयों की अदला बदली करते हैं तथा परिवार, मित्रों के साथ पटाखे चलाते हैं।

छठ पूजा - छठ पूजा एक प्राचीन महोत्सव एवं पर्व है जिससे दिवाली के छठे दिन मनाया जाता है। छठ पूजा को सूर्य छठ या डाला छठ के नाम से भी संबोधित किया जाता है। इस पूजा की बहुत मान्यता है। सूर्य देवता को समर्पित तथा प्रकृति, जल, वायु तथा छठी मैया के आशीर्वाद से मानये जाने वाला पर्व, देवताओं को उनके द्वारा पृथ्वी पर किए उपकार से उपकृत के आभार के रूप में मनाया जाता है।

चार दिनों तक कठोर तपस्या से मनाया जाने वाले पर्व में कोई मूर्ति पूजा नहीं होती। त्योहारों में ये त्योहार पर्यावरण संरक्षण के लिए भी जाना जाता है। पूर्व में ये पूजा मुख्य रूप से बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ राज्यों में मनाया जाता था परन्तु धीरे धीरे पूरे देश में पूरी आस्था से प्रवासियों के आगमन से मनाया जाने लगा है।

कार्तिक पूर्णिमा - एक प्रसिद्ध त्योहार माना जाता है। इसे त्रिपुरी पूर्णिमा या त्रिपुरारी पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। प्रचलित है कि भगवान शिव नें त्रिपुरास राक्षस पर विजय प्राप्त की थी उसी का जश्न इस दिन मनाया जाता है। कार्तिक पूर्णिमा जब कृतिका नक्षत्र में पड़ती है तो इसे महा कार्तिक कहा जाता है। ■

वैश्विक परिदृश्य

क्वैड एवं समुद्री संसाधनः भारत के लिए अवसर एवं चुनौतियां

डॉ. अखिलेश मिश्र
एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष (अर्थशास्त्र)
एस. डी. पी. जी. कॉलेज, गाजियाबाद

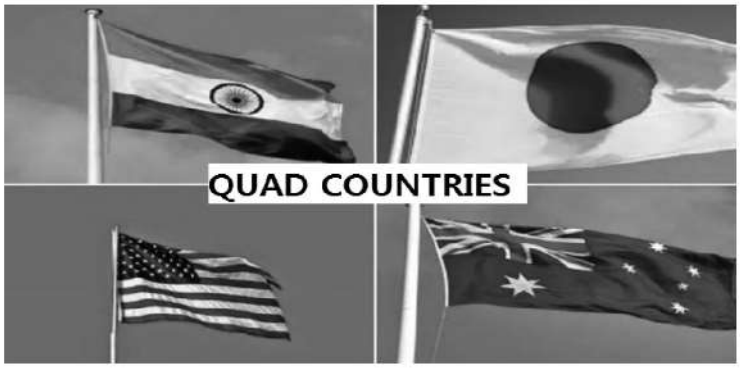

पिछले अंक में मैंने क्वैड के इतिहास एवं परिस्थितियों की विस्तृत चर्चा की थी अब आगे...

भारतीय वांग्मय में समुद्र को रत्नगर्भा कहा गया है। समुद्र के लिए सागर, पयोधि, उदधि, पारावार, नदीश, जलधि, सिंधु, रत्नाकर, वारिधि आदि नामों का उल्लेख मिलता है। भगवान् विष्णु ने मानवता के उत्थान एवं विकास के लिए देवताओं को समुद्र मंथन का सुझाव दिया था। ऋग्वेद के अनुसार वरुणदेव, जल के देवता एवं सागर के सभी मार्गों के ज्ञाता हैं। इसी ग्रन्थ में नाव द्वारा समुद्र पार करने के कई उल्लेख मिलते हैं। सामुद्रिक मार्ग, भारत के लिए व्यापार के साथ–साथ देश की सुरक्षा एवं संरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है किन्तु इस्लामिक शासनकाल में भारतीय सामुद्रिक सीमाओं के विकास की काफी उपेक्षा की गयी। यही कारण था कि यूरोपीय व्यापारी जो भारत में समुद्री मार्ग से व्यापार के लिए आये उन्होंने धीरे धीरे देश में राजनैतिक सत्ता स्थापित कर ली।

इंडो–पेसिफिक क्षेत्र में आर्थिक सहयोग, सागरीय शांति एवं सुरक्षा की सम्भावनाओं को देखते हुए प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी ने सन् 2015 में 'सागर' (Security and Growth for All in the Region- 'SAGAR') की अवधारणा विश्व के समक्ष रखी। इस अवधारणा के पीछे इस क्षेत्र के देशों के मध्य आपसी सहयोग एवं समन्वय के माध्यम से आर्थिक पुनरुद्धार, व्यापार, पूंजी निवेश, कनेक्टिविटी, संस्कृति, और सामुद्रिक सम्पत्तियों के विवेकपूर्ण दोहन एवं उसके उपयोग को बेहतर बनाना था। किन्तु, इस क्षेत्र के देशों के मध्य विश्वास की कमी, चीन के भय एवं दबाव के कारण भारत द्वारा अनेकों सार्थक पहल के बावजूद भी इष्ट क्षमता का उपयोग नहीं हो पाया है। जबकि, चीन के पिछले तीन दशक में हुई प्रगति में सागर मार्ग एवं सागरीय संसाधनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय मेरीटाइम ऑर्गनाइजेशन (IMO) एवं अंकटाड रिपोर्ट के अनुसार सन् 2019 में दुनिया के कुल व्यापारिक परिवहन का 90 प्रतिशत से अधिक हिस्सा समुद्री मार्ग के द्वारा किया गया। समुद्र के रास्ते होने वाले व्यापारिक परिवहन का एक तिहाई से अधिक हिस्सा (37 प्रतिशत) दो संकरे समुद्री मार्गों मलक्का जलडमरू मार्ग एवं स्वेज नहर से होता है। अत्यंत सकरा होने के बावजूद भी, चीन के प्रभुत्व वाले मलक्का जलसन्धि (हिंद महासागर, दक्षिण चीन सागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाला अत्यंत महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार मार्ग) का कुल समुद्री व्यापार परिवहन में हिस्सा 25 प्रतिशत से अधिक है। इस मार्ग से लगभग एक लाख से अधिक समुद्री मालवाहक जहाज गुजरते है। जबकि, दुनिया के दूसरे सबसे बड़े एवं व्यस्त व्यापारिक मार्ग 'स्वेज नहर' के रास्ते 12 प्रतिशत से अधिक परिवहन के उपयोग में लाया जाता है। 'मलक्का स्ट्रेट' एशिया एवं प्रशांत महासागर के मध्य चीनी व्यापार का 'चिकेननेक' माना जाता है क्योंकि इसके माध्यम से चीन, उर्जा एवं अन्य कच्चा माल का आयात एवं उत्पादित वस्तुओं का निर्यात करता है। बढ़ते 'ट्राफिक' एवं दक्षिण चीन महासागर में क्वैड के मंच पर दुनिया के चार महाशक्तियों भारत, चीन आस्ट्रेलिया एवं अमेरिका के एक साथ मंच पर आने से चीन बहुत अधिक व्यग्र हो रहा है।

मार्च 2021 के तीसरे सप्ताह में ताइवान का एक जहाज 'एमवी एवरग्रीन' स्वेज नहर में फंस गया। इस जहाज के फंस जाने के कारण, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला अवरुद्ध हो जाने का खतरा उठ गया जिसकी अंतराष्ट्रीय मीडिया में काफी चर्चा रही। शिपिंग कम्पनी एवं व्यापार के आंकड़े उपलब्ध कराने वाली संस्था 'लायड' के अनुसार इस अवरोध से प्रतिदिन 6 बिलियन डॉलर का नुक्सान हुआ। इस अवरोध ने अफ्रीका एवं एशिया को जोड़ने वाली 'स्वेज नहर' के रास्ते विश्व के दूसरे सबसे बड़े एवं व्यस्त व्यापारिक मार्ग पर, दुनिया अति निर्भरता एवं उसे संभावित संकट ने विश्व को सकते में डाल दिया। इस घटना से सर्वाधिक व्यग्रता चीन के नेताओं में दिखी। चीन को अब यह डर सता रहा है कि यदि एशिया एवं पसिफिक के देश विशेष रूप से

क्वैड के देश कृतिम रूप से यदि मलक्का जलडमरू बाधित कर देते है तो उसकी अर्थव्यवस्था तहस नहस हो सकती है एवं उसकी सुरक्षा पर गंभीर संकट उत्पन्न हो सकता है। इसी आशंका से उबरने के लिए 1 ट्रिलियन डॉलर निवेश के लक्ष्य के साथ चीन नें ओबोर ('वन बेल्ट वन रोड') जैसी स्थल मार्गीय महात्वाकांक्षी योजना को मूर्त रूप देने में लग गया था किन्तु, कोरोना के कारण यह योजना खटाई में पडती नजर आ रही है। जब तक ओबोर मूर्त रूप नहीं ले पाता है तब तक चीन अपने पड़ोसियों विशेषतौर पर दक्षिणी चीन सागर के देशों को सैन्य अभ्यास, सेनाओं एवं युद्धपोतों की तैनाती एवं सीमा अतिक्रमण जैसी ओछी हरकते कर उन्हें डराना चाहता है। कोरोना काल में भारत पर दबाव बनाने के लिए एवं भारत के नेतृत्व में "क्वैड" मूर्त रूप न ले सके इसके लिए पहले डोकलाम एवं बाद में तिब्बत एवं अरुणांचल सीमा पर सैनिक जमावड़ा बढ़ाया किन्तु, प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चीन को न केवल सैनिक प्रत्युत्तर दिया गया बल्कि, कूटनीति के तहत क्वैड की पहली औपचारिक बैठक सम्पन्न हुई जिसमे भारत की अगुवाई में दीर्घकालीन सुरक्षा, सहयोग एवं समन्वय की रणनीति पर सहमति भी बन गयी। इसी रणनीति के तहत भारत के सुझाव पर पूर्वी एशिया के महत्वपूर्ण देशों (आशियान) को शामिल करते हुए क्वैड प्लस पर भी गंभीर विचार हुआ। यदि क्वैड प्लस मूर्त रूप ले लेता है तो यहाँ की कम्पनियों से भारत में निवेश बढेगा। भारत इन देशों की कम्पनियों को बेहतर एवं उच्च गुणवता श्रम शक्ति की आपूर्ति कर सकता है एवं दुनिया का मैन्युफैक्चरिंग हब बनने के लिए उपयुक्त स्थान भी है। इस हेतु, आर्थिक एवं तकनीकी सहयोग को और अधिक सुदृढ़ किये जाने की आवश्यकता है। अच्छे समन्वय एवं संचार हेतु आवश्यकता है शीघ्रातिशीघ्र क्वैड कार्यालय एवं स्थाई सचिवालय के साथ साथ मंत्री स्तरीय एवं अधिकारी की वार्ता को नियमित बनाने की। यदि सागर एवं क्वैड अपेक्षित स्वरुप में आ जाते है तो जहां इस क्षेत्र में चीन के आतंक से पडोसी देशों को मुक्ति मिलेगी वहीं सागर के क्षेत्र में भारत उदय की नई इबारत लिखी जायेगी। ■

पुस्तक समीक्षा

भारत का पुनर्जन्म

डॉ. प्रताप निर्भय सिंह
सामान्य अध्येता
भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली

श्री अरविंद को कौन नहीं जानता? वे भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अग्रदूत होने के साथ–साथ भारत की आध्यात्मिक सम्पदा के प्रतिनिधि भी हैं। वर्ष 1893 में जब स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय संस्कृति का डंका शिकागो की धर्म संसद में बजाया था, उसी वर्ष एक नवयुवक इंग्लैंड से शिक्षा पूर्ण कर भारत में लौटा था और उसने मां भारती की पराधीनता को हृदय की गहराइयों में अनुभव किया। बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक तक भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में क्रान्तिकारी गतिविधियों में तथा बाद में अपनी सन्यास साधना के द्वारा माँ भारती के पुनरुत्थान के लिए समर्पित हो गया।

योगी श्री अरविंद भारत के युवाओं की क्रान्तिकारी विचारधारा के साथ साथ भारत की अनुपम आध्यात्मिक धरोहर के भी संवाहक हैं। उनकी यह पुस्तक सभी युवाओं को भारत को उसकी चेतना के रूप में आत्मसात करने में सहायक सिद्ध होगी।

पुस्तक के लेखक श्री अरविंद के जीवन का विशिष्ट पहलू यह रहा है कि उनके पिता ब्रिटिश सेवा में थे और चाहते थे कि अरविंद भी ब्रिटिश सेवा में रहकर एक प्रशासनिक अधिकारी बने, और इसी हेतु से उन्होंने बालक अरविंद को अंग्रेजी और यूरोपीय पद्धति की शिक्षा हेतु इंग्लैंड भेजा, जहां 13 वर्ष तक शिक्षा प्राप्त कर वे 1893 में भारत लौटे। भारत की चेतना ने किस प्रकार से अंग्रेजी प्रणाली में शिक्षित व्यक्ति को भारतीयता में दीक्षित कर दिया यह पुस्तक इसका एक श्रेष्ठ उदाहरण है। विशेष रुप से कान्वेंट स्कूल में पढ़े हुए उन युवाओं को यह पुस्तक हमारी मातृभूमि, हमारे महान राष्ट्र भारत के पुनरुत्थान में प्रवृत्त करेगी जो अंग्रेजी शिक्षा पद्धति तथा पाश्चात्य जीवन शैली में अपने व्यक्तित्व एवं भविष्य को खोजते हैं। एक प्रकार से यह पुस्तक श्री अरविंद के जीवन में तत्कालीन परिस्थितियों से उत्पन्न विचारों और घटनाओं का क्रमबद्ध संकलन है, जो हमें 19 वीं शताब्दी के अंत और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ के भारत से परिचित कराता है।

पुस्तक का नाम : भारत का पुनर्जन्म
लेखक का नाम : श्री अरविंद
प्रथम संस्करण : विक्रमी संवत 2052, कुल पृष्ठ-292
पुस्तक का विषय क्षेत्र : श्री अरविंद की दृष्टि में भारत
वर्तमान उपलब्ध संस्करण: ईस्वी सन् 2007 (अमेजन पर उपलब्ध)
प्रकाशक : मीरा आदिति केन्द्र - मैसूर
मूल्य : 349 रूपये (पेपर बैक)

यह पुस्तक हमें बताती है कि किस प्रकार से श्री अरविंद, मां भारती की पराधीनता को अपने समक्ष विश्लेषण करते हुए भारत की भौतिक स्वतन्त्रता के साथ–साथ भारत की आध्यात्मिक चेतना को स्वयं के भीतर आरूढ़ करने हेतु एक क्रान्तिकारी जीवन से एक योगी जीवन में रूपांतरित हुए।

इस पुस्तक को श्री अरविंद के लेखन से लिए गए उद्धरणों द्वारा तिथि कालक्रम अनुसार संजोया गया है। इनसे हमें उनके जीवन का क्रमबद्ध वैचारिक दर्शन भी प्राप्त होता है जो तत्कालीन परिस्थितियों में एक नए अरविंद को गढ़ रहा था, उनका युवा चित् कैसे परिपक्व हो

रहा था यह प्रत्येक युवा को वर्तमान भारत से सम्बद्ध कर समझना आवश्यक है। उस युवक में यूरोप की विश्लेषण क्षमता भी थी और भारतीय संस्कृति की संश्लेषणात्मक कुशलता भी। वे एक ऐसे दूरदृष्टा थे जो पराधीनता की बेड़ियों से मां भारती को स्वतन्त्र कराने के पश्चात उसके भावी स्वरूप को भी देख रहे थे।

पुस्तक छह अध्यायों में विभाजित है जिनमें से प्रथम अध्याय में 1893 से 1910 तक श्री अरविंद की क्रान्तिकारी गतिविधियों में संलग्नता तथा उनके वैचारिक बोध का दर्शन होता है। यह प्रखर ऊर्जावान युवा का अपने राष्ट्र की भौतिक दशा को देखते हुए किया गया समग्र चिंतन है।

दूसरा अध्याय वर्ष 1910 से 1922 तक के 12 वर्ष का जीवनकाल है जिसमें वे मानसिक और बौद्धिक रूप से अधिक चिंतनशील हुए हैं, उन्होंने यह अनुभव किया कि राजनीति के माध्यम से वास्तविक परिवर्तन कदापि सम्भव नहीं है, क्योंकि भारत एक आध्यात्मिक चेतना वाला देश है जब तक भारत की चेतना को न समझा जाएगा तब तक भारत अपने वास्तविक अर्थ में विकसित नहीं हो सकेगा। इस काल में किस प्रकार से उनका व्यक्तित्व शुद्ध भारतीय चिंतन से अनुप्राणित होता है वह उनके लेखों एवं पत्रों के माध्यम से प्रकट होता है। आर्य नाम के पत्र में लिखे उनके लेख तत्कालीन परिस्थितियों का भौतिक एवं आध्यात्मिक विश्लेषण करते हुए समस्याओं का मूल समाधान धार्मिकता में निहित करते हैं किन्तु यह धार्मिकता रूढ़िवादी धार्मिकता नहीं है अपितु विचारशील तथा नवीन परिदृश्य में नवीनता को आत्मसात करते हुए स्वयं के साथ की गई एक अनूठी यात्रा है। इस अध्याय के अंत तक 1922 तक पहुंचते–पहुंचते हम उनके भीतर उदित होते हुए भारत को देखने लगते हैं। राष्ट्रवाद, मानववाद, हिन्दुत्व और शिक्षा से सम्बन्धित उनके विचार पुस्तक के इस भाग में दृष्टिगोचर होते हैं।

पुस्तक का तीसरा अध्याय 1923 से 1926 तक अपने शिष्यों के साथ विभिन्न विषयों पर की गई उनकी चर्चाएं, तत्कालीन राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियां, भारत की राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था और आध्यात्मिक सम्भावनाओं पर श्री अरविंद के विचारों को प्रकट करता है। यह उनके जीवन का वह काल है जब उन्होंने भारत की आध्यात्मिकता तथा सम्पूर्ण वैश्विक तंत्र की बौद्धिक अवधारणाओं का अपने अन्तर्जगत में विश्लेषण कर लिया था।

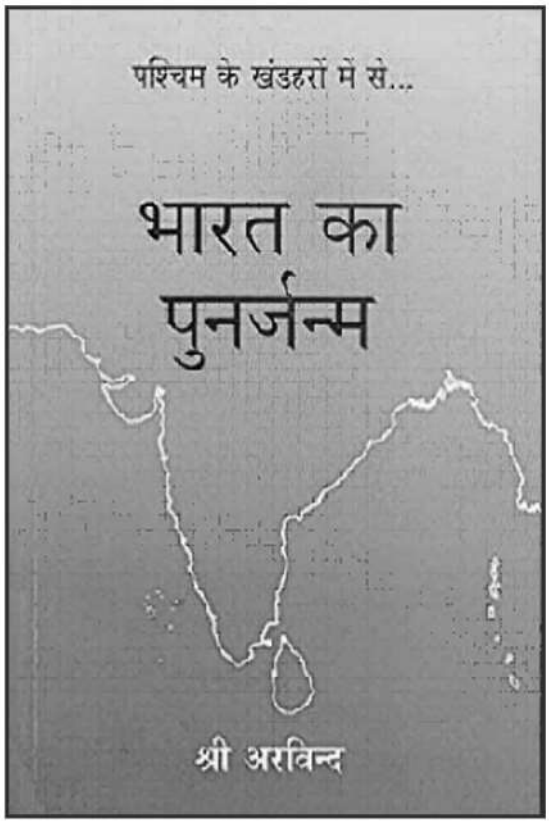

पुस्तक के चतुर्थ अध्याय में वर्ष 1938 तक श्री अरविंद के उस जीवन का परिचय मिलता है जिसमें वे क्रान्तिकारी अरविंद से पूरी तरह से योगी अरविंद में रूपान्तरित हो चुके थे और इस काल में केवल पत्रों के माध्यम से ही अपने विचारों को प्रगट करते थे। अब वे जीव, जगत, ईश्वर, माया, धर्म, संस्कृति और दिव्यता से सम्बन्धित आत्म विश्लेषण में समर्पित थे। उनके जीवन का यह पक्ष उनके भीतर दिव्य जीवन के प्राकट्य को प्रकट करता है।

पांचवे अध्याय में वर्ष 1938 से 1940 के जीवनकाल का वैचारिक दर्शन मिलता है। यह वह काल है जब ध्यान में चलते हुए श्री अरविंद गिर गए थे और उनके पैर में चोट लग गई थी जिसके पश्चात अपने शिष्यों, परिचारकों एवं चिकित्सक के साथ भारतीय राजनैतिक परिदृश्य, नाजीवाद और द्वितीय विश्व युद्ध पर श्री अरविंद के विचार विमर्श का दर्शन उपलब्ध है। अंतिम अध्याय छह में वर्ष 1940 से 1950 तक श्री अरविंद की रचनाओं, पत्रों एवं संदेशों से लिए गए उद्धरण है।

इस पुस्तक को धीरे धीरे पढ़कर समाप्त करते हैं तो हमारे भीतर भी हमें अपने क्रान्तिकारी मन और उस क्रान्तिकारी मन के भीतर छुपी हुई चेतना के शनैः–शनैः उदित होने का आभास होता है जो मुख्यतः भारत माता की मूल चेतना है, जो भारत का सम्पूर्ण विश्व को सन्देश है, जो स्वयं के साथ–साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण का पथ प्रशस्त करता है। इस पुस्तक को "अतीत के खण्डहरों से भारत का पुनर्जन्म" कहा गया है, जिसका स्पष्ट अर्थ है कि हमारे प्राचीन वैभवशाली, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का खण्डहर भी हमारे भीतर नई ऊर्जा का संचार कर हमें पुनर्जीवन देने वाला है क्योंकि हमारी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत सत्य सनातन है, चेतनरूप है। भौतिक रूप से खण्डहर के रूप में होते हुए भी वह आध्यात्मिक रूप से प्रज्वलित उस चिंगारी के समान है जो हमारे भीतर दिव्य जीवन के आध्यात्मिक स्वरूप के रूप में स्थापित है। यह हमारे भीतर के भारत का उदय करती है। ऐसे ही भारत का उदय करना हमारे लिए परम आवश्यक है, और निश्चित रूप से यह उदय केवल भारत का ही उदय नहीं होगा अपितु सम्पूर्ण विश्व के नवजीवन का उदय होगा। तभी हम इस अनुभूति से आह्लादित होंगे कि कैसे अतीत के खण्डहरों से नित–नूतन नवजीवन का सतत सृजन होता रहता है। हमारे भारतीय होने का और हमारे भीतर भारत के उदय होने का गहरा अर्थ क्या है। ■

ऐतिहासिक व्यक्तित्व

संविधान निर्माता बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर

डॉ. प्रदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
सत्यवती कॉलेज (सांध्य) दिल्ली विश्वविद्यालय

संविधान निर्माता बाबा साहब भीमराव अंवेडकर ने न केवल देश को सामाजिक समानता का रास्ता दिखाया अपितु उन्होंने विज्ञान और तकनीक के जरिये देश के विकास का सपना भी देखा था। हम सम्मान से उन्हें बाबा साहब कहते हैं। प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ, विधिवेत्ता होने के साथ–साथ वे समाज सुधारक भी थे। भारत में उन्हें दलितों के मसीहा, सामाजिक समानता के लिए संघर्षशील, समाज सुधारक एवं भारतीय संविधान के प्रमुख निर्माता के रूप में जाना जाता है। डॉ. अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को मध्यप्रदेश में इंदौर के पास महू छावनी में हुआ। इनके बचपन का नाम भीम सतपाल था। हाईस्कूल पास करने के बाद बड़ौदा के महाराजा गायकवाड़ ने उनकी प्रतिभा को देखते हुए उन्हें छात्रवृत्ति उपलब्ध कराई। इस कारण वे स्कूली शिक्षा समाप्त कर मुंबई के एल्फिस्टन कॉलेज में आ गये। महाराजा की सहायता से उच्च शिक्षा प्राप्त की एवं गायकवाड़ छात्रवृत्ति पर ही कोलंबिया विश्वविद्यालय में प्रवेश मिला जहाँ से पीएचडी की उपाधि ग्रहण की। वे भारत के पहले अछूत थे जो पढ़ने के लिए विदेश गये थे।

अम्बेडकर जी ने अपने जीवन में अनेक ऐसे कार्य किए जिनकी वजह से उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया और समाज में उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। उन्होंने "मूकनायक" (साप्ताहिक) एवं 1927 में बहिष्कृत भारत (मासिक) पत्र का प्रकाशन किया। 1936 में "इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी" की स्थापना की जो दलित वर्ग, मजदूर व किसानों की समस्याओं से सम्बंधित थी। इसी संस्था का नाम 1942 में अखिल भारतीय अनुसूचित जाति संघ कर दिया गया था। अंग्रेजों द्वारा आयोजित तीनों गोलमेज सम्मेलन में अनुसूचित जाति के प्रतिनिधि के रूप में अम्बेडकर जी ने भाग लिया। स्वतंत्र भारत के केन्द्रीय मंत्रिमंडल में अम्बेडकर जी प्रथम विधि मंत्री नियुक्त किये गये। 5 फरवरी 1951 को संसद में अम्बेडकर जी ने "हिन्दू कोड बिल" पेश किया जिसके असफल हो जाने पर मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया। 1955 में उन्होंने भारतीय बौद्ध धर्म सभा कि स्थापना की तथा नागपुर में 5 लाख व्यक्तियों के साथ

बौद्ध धर्म ग्रहण किया। इनका प्रसिद्ध कथन था कि "मैं हिन्दू धर्म में पैदा हुआ हूँ लेकिन मैं मरूँगा बौद्ध धर्म में"। 1956 में इस महामानव की मृत्यु हो गयी।

भीमराव के सामाजिक विचार : सामाजिक क्षेत्र में अम्बेडकर जी को महान समाज सुधारक माना जाता है। इन्होंने दलितों, पिछड़ों एवं अस्पृश्यों के विरुद्ध हो रहे अन्याय का सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक धरातल पर भी विरोध किया। आन्दोलनों के माध्यम से शोषित वर्ग में आत्मबल तथा चेतना जागृत करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इन्होने प्रचलित वर्ण व्यवस्था का विरोध किया एवं चार वर्ण व्यवस्था के नियम को पूर्णतया अवैज्ञानिक, अव्यावहारिक, अन्यायपूर्ण व गरिमाहीन माना।

अम्बेडकर जी के अनुसार अस्पृश्यता की जड़ें वर्ण व्यवस्था में है अतः समाज के उत्थान के लिए अस्पृश्यता का निवारण अति आवश्यक माना। वे जाति व्यवस्था के भी तीव्र विरोधी थे उन्होंने कहा कि जातीय व्यवस्था में सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए कोई स्थान नहीं है एवं हिन्दू समाज की अनेक विकृतियों और अन्याय के लिए जाति व्यवस्था उत्तरदायी है। अम्बेडकर जी ने दलितों के विकास के लिए अंतर्जातीय विवाह, दलितों की शिक्षा, संघर्ष और संगठन पर बल, व्यवस्थापिका, कार्यपालिका तथा राजकीय सेवाओं में उनके पर्याप्त प्रतिनिधित्व का समर्थन किया। नारी गरिमा के भी वे समर्थक थे। उन्होंने ब्राह्मणवादी व्यवस्था पर आक्रमण किया और शूद्रों को निम्न स्थान दिए जाने के आधार पर भी विरोध किया।

शिक्षा संबंधी विचार : किसी समाज की प्रगति उस समाज के बुद्धिमान, कर्मठ और उत्साही युवाओं पर निर्भर करती है और इन सबका निर्माण शिक्षा के द्वारा संभव है। शिक्षा के विषय में अम्बेडकर जी ने कहा था कि– 'शिक्षा शेरनी के दूध के समान है, जिसे पीकर हर व्यक्ति दहाड़ने लगता हैं। यह प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचानी चाहिए।' शिक्षा सस्ती से सस्ती हो जिससे निर्धन व्यक्ति भी इसे प्राप्त कर सके। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है इसके मार्ग सभी के लिए खुले होने चाहिए। उन्होंने कहा था मैंने जिस प्रकार से शिक्षा प्राप्त की है आप भी प्राप्त कीजिये। केवल परीक्षा पास करने तथा पद प्राप्त करने से शिक्षा का क्या उपयोग? आपको यह याद रखना चाहिए कि कोई समाज जागृत, सुशिक्षित और स्वाभिमानी तभी होगा जब उसका विकास होगा। गरीब और अज्ञानी भाईयों की सेवा

करना प्रत्येक शिक्षित नागरिक का प्रथम कर्तव्य है। बड़े अधिकार के पद पाते ही शिक्षित भाई अपने अशिक्षित भाईयों को भूल जाते हैं यदि उन्होंने अपने असंख्य भाईयों की ओर ध्यान नहीं दिया तो समाज का पतन निश्चित हैं। इसीलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि अपने बच्चों को विद्यालय जरुर भेजें, उन्हें शिक्षित बनाएं, शिक्षा के बिना समाज को सुधारने का और कोई विकल्प नहीं है।

धर्म के प्रति विचार व्यक्त करते हुए बाबा साहब ने कहा था की मनुष्य एवं उसके धर्म को समाज के द्वारा नैतिकता के आधार पर चयन करना चाहिये। अगर धर्म को ही मनुष्य के लिए सब कुछ मान लिया जायेगा तो किन्ही और मानको का कोई मूल्य नहीं रह जायेगा। लोग और उनके धर्म सामाजिक मानकों द्वारा सामाजिक नैतिकता के आधार पर परखे जाने चाहिए। मैं ऐसे धर्म को मानता हूँ जो स्वंतत्रता, समानता और भाईचारा सिखाता है। यदि हम एक संयुक्त एकीकृत आधुनिक भारत चाहते हैं तो सभी धर्मों के शास्त्रों की संप्रभुता का अंत होना चाहिए। उन्होंने कहा था जन्म से एक को श्रेष्ठ और दूसरे को नीच बनाए रखे, वह धर्म नहीं अपितु गुलाम बनाए रखने का षड़यंत्र है।

उन्होंने साप्ताहिक पत्र हरिजन के अंक में जाति प्रथा के विषय में कहा था कि अछूत लोग जाति प्रथा की उपज हैं। जब तक जातियां हैं तब तक अछूत भी रहेंगे। जाति प्रथा का नाश हुए बिना अछूतों की मुक्ति संभव नहीं है। हिंदू धर्म में से जब तक इस घृणित और पापपूर्ण सिद्धांत का उन्मूलन नहीं किया जाता तब तक आने वाले संघर्ष में हिंदुओं को कोई चीज बचा नहीं सकती और यह धर्म जिंदा नहीं रह सकता।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि डॉ. अंबेडकर ने सर्वाधिक महत्व स्वाध्याय एवं अध्ययन को दिया। उनका अपना जीवन अध्ययन और लेखन से भरपूर रहा है। उनके द्वारा लिखा गया साहित्य एक व्यक्ति के संकल्प शक्ति के सामर्थ्य को प्रकट करता है। अपने विचारों की धार को तीक्ष्ण करने के लिए स्व. श्री अंबेडकर न केवल गहन अध्ययन करते हैं अपितु सूक्ष्म दृष्टि से विश्लेषण भी करते हैं। तत्कालीन समय में उन्होंने बाल्यावस्था से ही अनेक प्रकार की सामाजिक कुरीतियों विशेष रूप से जाति प्रथा पर आधारित भेदभाव और अस्पृश्यता को बहुत निकटता से अनुभव किया और यह पाया कि भारतीय समाज में एक ऐसा वर्ग है जो मनुष्य होते हुए भी पशुओं से बदतर जीवन जी रहा है क्योंकि इस सब का कटु अनुभव उनका स्वयं का अनुभव रहा इसलिए उनका विरोधी होना स्वाभाविक था। उन्होंने भारतीय समाज की ऐसी दीन–हीन परंपरा का भीषण प्रतिरोध किया और अपने विचारों को मुखरता से सामने रखते हुए यह घोषणा की कि वे इस प्रकार की किसी भी धार्मिक परंपरा में आस्था नहीं रखते हैं जो मनुष्य मनुष्य के बीच इस प्रकार का भेद उत्पन्न करती है। तात्कालिक परिस्थितियों में उनकी इसी मानसिक पीड़ा ने उन्हें हिंदू धर्म का विरोध करने पर मजबूर किया।

उन्होंने व्यावहारिकता पर आधारित मनुष्य के जीवन दर्शन का अनुभव किया और यह पाया कि धार्मिक मान्यताएं और अवधारणाएं मनुष्य को स्वतंत्र नहीं रहने देते हैं, तत्कालीन समाज में हिंदू धर्म पाखंड और कुरीतियों का शिकार हो चुका था, पुरोहित वर्ग शोषण और दमन पर आधारित धार्मिक रीति–रिवाजों को बढ़ावा दे रहा था और समाज का एक वर्ग सामान्य जीवन जीने से भी वंचित था। डॉ. अंबेडकर का जन्म ऐसे ही वर्ग में हुआ था, और धार्मिक सामाजिक कुरीतियों ने उन्हें भीतर तक चोट पहुंचाई थी यही कारण था कि डॉ. अंबेडकर ने तत्कालीन समाज में व्याप्त कुरीतिपूर्ण हिंदू धार्मिक मान्यताओं के आधार पर हिंदू धर्म का बहिष्कार किया, तथा भारत भूमि पर ही विकसित भगवान बुद्ध के द्वारा दिखाए गए व्यवहारिक जीवन दर्शन को अपनाकर भगवान बुद्ध के अनुयाई बने। भगवान बुद्ध का दर्शन मनुष्य को परलोक के स्थान पर व्यवहारिक जगत में सामंजस्य तथा तर्क आधारित जीवन प्रणाली हेतु प्रेरित करता है और अपने जीवन का मार्ग प्रशस्त करने हेतु प्रत्येक व्यक्ति को 'आप्पो दीपो भवः' का संदेश देता है। यह डॉ.अंबेडकर की दूरदृष्टि ही थी कि उन्होंने भारत भूमि के बाहर उत्पन्न ईसाई एवं इस्लाम धर्म को न अपनाते हुए भारत भूमि से सम्बद्द बौद्ध धर्म को ही अपनाया। वे जानते थे कि हिंदू धर्म में तात्कालिक कुरीतियां हैं, पाखंड है, आडंबर है परंतु फिर भी भारत भूमि की सामाजिक समरसता इस्लाम और ईसाइयत द्वारा निर्धारित समरसता से बिल्कुल अलग है। भगवान बुद्ध संपूर्ण प्राणीजगत को दया, करुणा और प्रेम के सामानभाव से पोषित करते हैं जो हिंदू जीवन पद्धति का हिंदू जीवन दर्शन का मूल आधार है। भारत के वंचित वर्ग के मसीहा तथा वैज्ञानिक दृष्टि वाले नए भारत के निर्माण और भेदभाव रहित समाज का स्वप्न देखने वाले राजनैतिक दार्शनिक डॉ. भीमराव अंबेडकर को हम श्रद्धा पूर्वक नमन करते हैं।

S.N.	Books	Publication date
1.	Castes in India: Their Mechanism, Genesis and Development	1916
2.	Mook Nayak (weekly)	1920
3.	The Problem of the Rupee: its origin and its solution	1923
4.	Bahishkrut Bharat (India Ostracized)	1927
5.	Janta (weekly)	1930
6.	The Annihilation of Caste	1936
7.	Federation Versus Freedom	1939
8.	Thoughts on Pakistan	1940
9.	Ranade, Gandhi and Jinnah	1943
10.	Mr. Gandhi and Emancipation of Untouchables	1943
11.	What Congress and Gandhi have done to the Untouchables	1945
12.	Pakistan Or Partition Of India	1945
13.	State and Minorities	1947
14.	Who were the Shudras	1948
15.	Maharashtra as a Linguistic Province	1948
16.	The Untouchables	1948
17.	Buddha Or Karl Marx	1956
18.	The Buddha and his Dhamma	1957
19.	Riddles in Hinduism	2008
20.	Manu and the Shudras	–

हम सबके राम

डॉ. रमेश चन्द्र
उ.प्र. रत्न सम्मानित पूर्व शिक्षक

वेदों में हमारी संस्कृति को विश्व की प्रथम संस्कृति कहा गया है – 'स प्रथमा संस्कृति विश्ववारा' यजुर्वेद 7/14। विश्वबन्ध स्वामी विवेकानन्द ने कहा था "भारत राष्ट्र समस्त राष्ट्रों में अत्यधिक सदाचारी और धार्मिक राष्ट्र है। किसी दूसरे राष्ट्र से हिन्दुओंकी तुलना करना ईश–निन्दा के समान होगा। (बी.स. 4/259)। श्रीमती एनीबेसेन्ट ने कहा था कि जब धरती पर एक के बाद एक रष्ट्र अस्तित्व में आ रहे थे तभी ईश्वर की ओर से उनको एक–एक शब्द प्रदान किया जा रहा था। जिसके द्वारा उन्हें एक विशेष संदेश देना था। प्राचीन काल में मिश्र को रिलीजन, ईरान को पवित्रता, केरेडिया को विज्ञान, ग्रीक को सौन्दर्य, रोम को कानून शब्द प्रदान किया गया और परमात्मा के श्रेष्ठ सन्नति भारत को ईश्वर ने एक शब्द प्रदान किया, जिसमें सभी अन्य सभी संदेशों का समुच्चय था। वह शब्द था 'धर्म'। धर्म का अर्थ है कर्तव्य की संहिता। ईश्वर के प्रति समाज के प्रति, पशुओं के प्रति, पक्षियों के प्रति कर्तव्य अर्थात् सारी सृष्टि के प्रतिकर्तव्य। भारत शताब्दियों से इस सर्वभूतहितरत व्रत का पालन करता चला आ रहा है। (चमन लाल इंडिया मदर ऑफ अस ऑल)।

इसी महाव्रत का पालन करने हेतु त्रेतायुग में अयोध्या की पवित्र धरती पर महाराज दशरथ और देवी कौशल्या के यहां सृष्टि के मुकुटमणि महापुरुष श्रीराम का अवतरण हुआ। महर्षि वाल्मीकि जी ने श्रीराम को "मूर्तिमान धर्म रामो विग्हनवान धर्म साधु, सत्य पराक्रमाः" भगवान श्री कृष्ण ने 'रामः मृतामहम', देवी सुमित्रा ने 'न हि रामात् परो लोके विद्यते सत्पथे स्थितः' आचार्य शुक्ल ने 'न राम सदृश्यो राजा पृथिव्यां नीतिमान भूत' कहकर अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। श्रीराम में असंख्य गुण थे। वे व्यक्ति, समाज, धर्म राजनीति आदि जीवन के सभी पक्षों को स्पर्श करते है। उनकी देहयष्टि सुन्दर और आकर्षक थी। वे वेद–वेदांग, तत्वज्ञ, धर्मज्ञ, प्रजापालक, सर्वजनप्रिय थे। वे विष्णु भगवान के समान बलवान और चन्द्रमा के समान प्रिय, क्रोध में कालाग्नि के समान, क्षमा में पृथ्वी, त्याग में कुबेर और सत्य में द्वितीय धर्मराज के समान थे।

उत्तर से लेकर दक्षिण तथा समस्त भारत श्रीराम के पराक्रमपूर्ण कार्यों से धन्य हुआ था। अयोध्या, विश्वामित्र का आश्रम, अहिल्या आश्रम, दण्डकारण्य, चित्रकूट, प्रयागराज, जनकपुर, किष्किन्धा, रामेश्वरम, श्रीलंका आदि में जहां–जहां भी वे गये है, लीलाएं की है, साधुओं का उद्धार और दुष्टदलन का कार्य किये हैं। वे सभी इन महाभाग इनके श्रीचरण पड़ने से तीर्थस्थल हो गए है। श्रीराम आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श राजा, योद्वा, धर्म रक्षक, प्रजापालक थे। आजतक हम रामराज्य स्थापना का स्वपन साकार करने का प्रयत्न कर रहे हैं। इन पंक्तियों को लिखते समय मैं उन सहस्त्रों–सहस्त्रों संतो, वीरों, बलिदानियों का भी पुण्य स्मरण करूंगा जिन्होंने विधर्मियों द्वारा श्रीरामभूमि की क्षतिग्रस्त छवि को पुनः उज्जवल और साकार किया। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ श्रीरामभूमि को पुनः स्वर्णयुग में पहुंचा रहे हैं। सारा विश्व एक नया भारत देख रहा है। स्वर्गसम कश्मीर जो बुरी तरह घायल कर दिया गया था, आज पुनः धारा 370 तथा 335 ए की समाप्ति के फलस्वरूप धरती का स्वर्ग बन रही है राष्ट्रनिर्माता लोकमान्य तिलक ने

गीता रहस्यं में शूद्रकमलाकर में एक श्लोक को उद्धृत किया –

"अपहाय निजं कर्म कृष्ण कृष्णेति वादिनः।

ते हरे द्वेंशिणह पापाः धर्मार्थं जना य धरे।।" (गीता रहस्य पृ. 506)

अर्थात् अपने सुधर्मोक्ति कर्मों को छोड़ केवल 'कृष्ण–कृष्ण' कहते रहने वाले लोग हरी के द्वेषी और पापी है क्योंकि स्वयं हरी का जन्म भी तो धर्म की रक्षा करने के लिएहीहोता है। श्रीराम जन्मभूमि के उद्धारकर्ताओं ने

'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।'
(गीता 4/8)।

ईवश्री व्रत का पालन करके अक्षय कीर्ति अर्जित की है।

आज समग्र भारत राममय प्रतीत होता है। हिमालय की कन्धराओं, विंध्यपर्वत श्रेणी, गोदावरी और कावेरी तटों पर सर्वत रामनाम गूंज रहा है। कन्याकुमारी, रामेश्वरम, पंजाब, राजस्थान, अंग भंग–कलिंग सब में ही राम का जयघोष गूंज रहा है। तक्षशिला, लाहोर (लवपुर), कसूर (कुशपुर) श्रीराम के वंशजों ने बसाये थे। हमारे पर्वों नाम– नवरात्र, रामनवमी, विजयदशमी, दीपावली, सभी में श्रीराम का यश समाया हुआ है। विदेशों की सभी भाषाओं में राम का प्रताप समाया हुआ है। भारत की सभी भाषाओं में उनकी कीर्ति गूंज रही है। संतों ने श्रीराम के निर्गुण रूप को तथा वैष्णव कवियों ने उनके सगुण रूप को अर्ध्य प्रदान है। बौद्ध सम्प्रदाय में दशरथ जातक और जैन सम्प्रदाय में 'पउनचरिउ' श्रीराम की छटा विकीर्ण कर रहे हैं। साक्षर, निरक्षर, कोल, भील, गौड सभी के मन–मंदिर में श्रीराम विराजमान है। अमेरिका के मैक्सिको में 'राम–सीतोत्सव' मनाया जाता है। पेरु का सूर्य मंदिर श्रीराम की ओर संकेत कर रहा है। एशिया के रिसर्चेज से पता चलता है कि यूनान, इटली, रोम, अमेरिका, चीन, जापान, रूस सभी की संस्कृतियां रामकथा का स्पर्श पाकर धन्य हुई हैं। एशिया के पश्चिम में 'रामसर', रामल्लाह में राम समनिष्ठ है। यूनान के महाकवि होमर का 'इलियड' महाकाव्य वाल्मिकीय रामयण को प्रतिध्वनित कर रहा है। जापान के राजा का सूर्यवंश और उत्तर में लक्ष्मी का मंदिर तथा ईरान के राजा का अपने को आर्यमिहिर (सूर्य) कहना सूर्यवंशोदभव श्रीराम का अवदान स्वीकार कर रह रहे हैं। सुमात्रा के मंदिर जावा के वोरोनुदूर आदि मंदिर, कम्बोडिया (कम्बुज) की राजधानी अयोध्या और वहां के मंदिर अंकोरवत आदि पर रामलीला का चित्रांगन है। श्याम और ब्रह्मा सर्वत्र राम ब्रह्म बनकर छाये हुए हैं।

इस प्रकार देखते हैं कि मानव मेदिनी का विशालतम भाग राममय है। उनका व्यक्तित्व निस्मीम है। उनके चरित्र में हिमालय का धैर्य और समुद्र का गाम्भीर्य है। उसमें गंगा की पावनता, सूर्य की प्रखरता और चन्द्रमा का आह्लाद है। ये अनुपम है। अप्रतिम सुन्दर है। उनकी मनोहर लीलाओं, पराक्रम पूर्ण कृत्यों, जीवमात्र के प्रति आत्मीयता पूर्ण चरित्र हम बिना कहे ही जानते हैं। वे ही ऐसे महाभाग्यवान पुरुषोत्तम है जिनका मधुर गान राजमहलों, कुटीरों तथा आश्रमों में समान रूप से गूंजता रहता है। उनका चरित्र स्पैक्ट्रम (सूर्य की रंग बिरंगी पेटिका) है जो हमारी संस्कृति के सब रूपों को एक साथ प्रकाशित करने में समर्थ है। उनका अवतरण अभिनन्दनीय है। बालपन लीलामय है, किशोरावस्था क्रान्तिकारी है। युवावस्था निष्काम कर्मयोग का विराट आयोजन है। समग्र जीवन यज्ञ में है,उसमें घृत की स्निगघ्ता, नवनीत की कोमलता, कमल की निर्लिप्तता है। सत्यम शिवम सुन्दरम से अलंकृत उनकी वाणी वैदिक संस्कृति का समागान है। ■

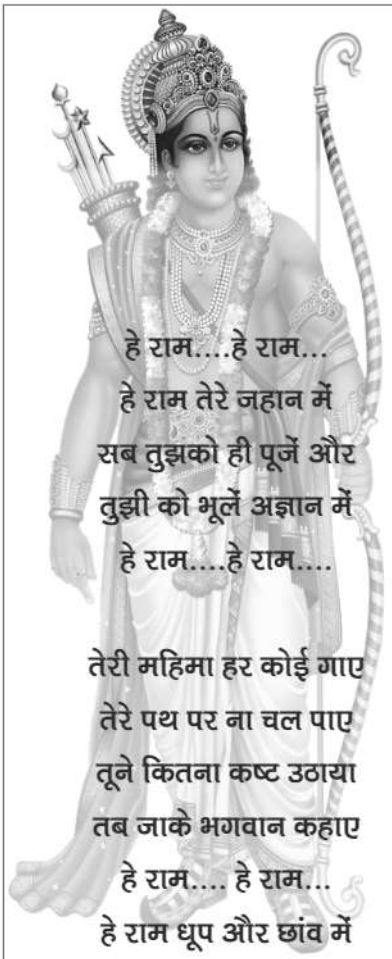

हे राम....हे राम...
हे राम तेरे जहान में
सब तुझको ही पूजें और
तुझी को भूलें अज्ञान में
हे राम....हे राम....

तेरी महिमा हर कोई गाए
तेरे पथ पर ना चल पाए
तूने कितना कष्ट उठाया
तब जाके भगवान कहाए
हे राम.... हे राम...
हे राम धूप और छांव में
तुम कभी ना डिगते
रहते तुम समभाव में
हे राम.... हे राम...

हमको भी तू शक्ति दे दे
फल अपनी भक्ति का दे दे
तुझमें ही हम रमते जाएं
जब भी तुझमें ध्यान लगाएं
हे राम.... हे राम....
हे राम तू मेरे मन में
ज्ञान का दीप जला दे
मैं ना रहूं अभिमान में
हे राम.... हे राम...

स्मिता श्रीवास्तव, लेखिका एवं कवियत्री

भारतीय शिक्षा शास्त्री

आचार्य चाणक्य

प्रोफेसर डॉ. हरेन्द्र सिंह
शिक्षाविद, शैक्षिक प्रशासक एवं चिन्तक

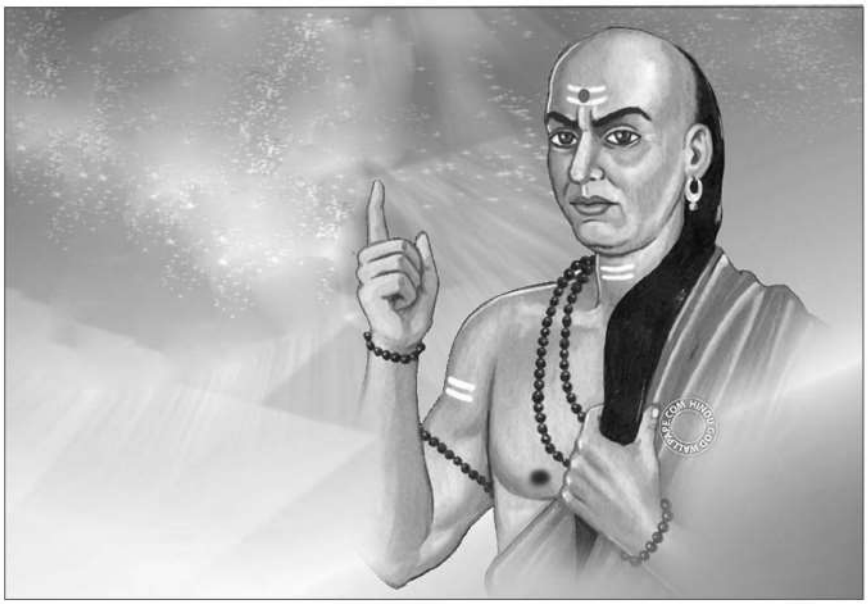

हमारी पवित्र भारत भूमि को यह श्रेय है कि असाधारण प्रतिभाशाली शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, तेजस्वी, सूक्ष्मदर्शी और ज्ञानावतार पंडितों व अनेक महान विभूतियों ने यहाँ जन्म लेकर इसे गौरवान्वित किया है। ऐसी विभूतियों की लेखनी में ओज, तेज, दृढ़ता, साहस, आत्मविश्वास तथा राष्ट्र सुधार की गहन लगन विद्यमान रही है साथ ही यह भी शाश्वत सत्य है कि ऐसे महापुरुषों का अपना कोई व्यक्तिगत जीवन नहीं रहा वे सदैव व्यक्ति, समाज और देश के लिए,समाज सुधार के लिए सर्वात्मना समर्पित रहे हैं। ऐसे ही एक अनमोल व्यक्तित्व थे आचार्य चाणक्य जिन्हें कौटिल्य, विष्णुगुप्त, वात्स्यायन, मलंग, द्रविमल, अंगुल, वारानक्, कात्यान इत्यादि भिन्न–भिन्न नामों से भी जाना जाता है, उनका मानना था कि शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्रीय एकता का विकास सम्भव है।

वैश्विक स्तर पर आचार्य चाणक्य एक प्रकाण्ड विद्वान तथा एक गंभीर चिंतक के रूप में जाने जाते हैं। आचार्य चाणक्य एक महान शिक्षक के साथ–साथ चतुर कूटनीतिज्ञ, कुशल राजनीतिज्ञ और प्रकांड अर्थशास्त्री के रूप में सुविश्वविख्यात हुये। इतनी सदियाँ गुजरने के बाद भी आचार्य चाणक्य के द्वारा बताए गये शैक्षिक विचार और नीतियाँ आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होने अपने गहन अध्ययन, चिंतन और जीवन के अनुभवों से अर्जित अमूल्य ज्ञान को पूरी तरह निस्वार्थ होकर मानवीय कल्याण के उद्देश्य से अभिव्यक्त कर राष्ट्रीय एकता के विकास पर बल दिया। पाश्चात्य देशों के सभी दर्शनिकों, राजनीतिज्ञों, वैज्ञानिकों, समाज–सुधारकों, मूर्धन्य विद्वानों एवं शिक्षाशास्त्रियों ने भी चाणक्य के ज्ञान और नीतियों को खुले ह्रदय से स्वीकार करते हुये इस तथ्य को स्वीकार किया है कि आचार्य चाणक्य जैसे दूरदर्शी राजनीतिज्ञ ने भी शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकीकरण पर बल दिया है।

कहा जाता है कि उनका मूल नाम विष्णुगुप्त ही था, जिसे उनके पिता ने रखा था। परन्तु उनके विभिन्न नामों जैसे विष्णुगुप्त, कौटिल्य और चाणक्य इत्यादि से संबंधित कई सन्दर्भ विभिन्न ग्रंथों में मिलते हैं। आचार्य चाणक्य के कौटिल्य का नाम, जन्मतिथि और जन्मस्थान तीनों ही विवाद के विषय रहे हैं। कुछ विशेषज्ञों के अनुसार, कौटिल्य का जन्म नेपाल के तराई में हुआ था, जबकि जैन धर्म के अनुसार, उनका जन्मस्थान मैसूर राज्य में श्रवणबेलगोला माना जाता है। कौटिल्य के नाम के संबंध में विद्वानों के बीच मतभेद पाया जाता है। परन्तु अधिकांश पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों ने 'अर्थशास्त्र' के लेखक के रूप में कौटिल्य नाम का ही प्रयोग किया है। कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' के प्रथम अनुवादक पंडित शामशास्त्री ने कौटिल्य नाम का प्रयोग किया है। 'कौटिल्य नाम' की प्रमाणिकता को सिद्ध करने के लिए पंडित शामशास्त्री ने विष्णु–पुराण का हवाला दिया है जिसमें कहा गया है–

"तान्नदान् कौटल्यो ब्राह्मणस्समुद्धरिष्यति।"

इस संबंध में एक विवाद और उत्पन्न हुआ है और वह है कौटिल्य और कौटल्य का। गणपति शास्त्री ने 'कौटिल्य' के स्थान पर 'कौटल्य' को ज्यादा प्रमाणिक माना है। उनके अनुसार कुटल गोत्र होने के कारण कौटल्य नाम सही और संगत प्रतीत होता है।

आचार्य चाणक्य या कहें कि विष्णुगुप्त अर्थात कौटिल्य ने तक्षशिला विश्वविद्यालय में वेदों का गहन अध्ययन किया तथा बाद में वे इसी विश्वविद्यालय में नीतिशास्त्र के आचार्य भी रहे। ऐसा

कहा जाता है कि वे व्यवहारिक उदाहरणों से पढ़ाते थे। उन्होंने अनेकों ग्रंथों कि रचना की। अर्थशास्त्र, लघु चाणक्य, वृहद चाणक्य, चाणक्य नीतिशास्त्र, चाणक्य सूत्र आदि इनके ग्रन्थ बताये जाते हैं। आचार्य चाणक्य ने कौटिल्य नाम से 'अर्थशास्त्र' एवं 'नीतिशास्त्र' लिखा। कहते हैं कि वात्स्यायन नाम से उन्होंने ही 'कामसूत्र' लिखा था। हालाँकि कौटिल्य की कृतियों के संबंध में भी कई विद्वानों के बीच मतभेद पाया जाता है। चाणक्य के शिष्य कामंदक ने अपने 'नीतिसार' नामक ग्रंथ में लिखा है कि विष्णुगुप्त चाणक्य ने अपने बुद्धिबल से अर्थशास्त्र रूपी महोदधि को मथकर नीतिशास्त्र रूपी अमृत निकाला। चाणक्य का 'अर्थशास्त्र' संस्कृत में राजनीति विषय पर एक विलक्षण ग्रंथ है, परन्तु साथ ही इस ग्रन्थ में उनके शैक्षिक विचार भी समाहित हैं। इसके नीति के श्लोक तो घर घर प्रचलित हैं। पीछे से लोगों ने इनके नीति ग्रंथों से घटा बढ़ाकर वृद्धचाणक्य, लघुचाणक्य, बोधिचाणक्य आदि कई नीतिग्रंथ संकलित कर लिए। चाणक्य सब विषयों के पंडित थे। 'विष्णुगुप्त सिद्धांत' नामक इनका एक ज्योतिष का ग्रंथ भी मिलता है। कहते हैं, आयुर्वेद पर भी इनका लिखा 'वैद्यजीवन' नाम का एक ग्रंथ है। न्याय भाष्यकार वात्स्यायन और चाणक्य को कोई कोई एक ही मानते हैं, पर यह भ्रम है जिसका मूल हेमचंद का यह श्लोक है–

"वात्स्यायन मल्लनागः, कौटिल्यश्चणकात्मजः।
द्रामिलः पक्षिलस्वामी विष्णु गुप्तोऽङ्गुलश्च सः।।"

कौटिल्य की कितनी कृतियाँ हैं, इस संबंध में कोई निश्चित सूचना उपलब्ध नहीं है। वैसे तो धातुकौटिल्या और राजनीति नामक रचनाओं के साथ कौटिल्य का नाम जोड़ा गया है। परन्तु कुछ विद्वानों का यह मानना है कि 'अर्थशास्त्र' के अलावा यदि कौटिल्य की अन्य रचनाओं का उल्लेख मिलता है, तो वह कौटिल्य की सूक्तियों और कथनों का संकलन हो सकता है।

आचार्य चाणक्य एक अध्यापक थे। जैसा कि सर्वविदित है कि शिक्षा एवं दर्शन पुर्णतः एक–दूसरे पर आश्रित हैं तथा एक के आभाव मे दूसरे का अस्तित्व असंभव है। इस सम्बन्ध मे पाश्चात्य विद्वान जेन्टाइल का कथन है कि, 'शिक्षा दर्शन की सहायता के बिना सही मार्ग पर नहीं बढ़ सकती है। शिक्षा की समग्र समस्याओं का समाधान कराना और उसको क्रियान्वित करना दर्शन का कार्य है तथा दर्शन की प्रवृतियों, समस्याओं एवं विचारों को कार्य–रूप मे परिणित करने का काम शिक्षा का है। जीवन रुपी शरीर का दर्शन मस्तिष्क है और शिक्षा उसके हाथ एवं पैर हैं। जिस प्रकार से शरीर हेतु समग्र अंगों का होना नितांत आवश्यक है उसी प्रकार से शिक्षा हेतु दर्शन और दर्शन हेतु शिक्षा का होना अति आवश्यक है। कतिपय दार्शनिकों के अनुसार शिक्षा एवं दर्शन एक आत्मा व दो शरीर हैं। आचार्य चाणक्य ने दर्शन को एक अलग विद्या के रूप में रखा, जबकि अधिकांश प्राचीन ऋषि एवं आचार्य आन्वीक्षिकी (दर्शनशास्त्र) को कोई स्वतंत्र विद्या या शास्त्र नहीं मानते थे।

आचार्य चाणक्य एक महान शिक्षक के साथ-साथ चतुर कूटनीतिज्ञ, कुशल राजनीतिज्ञ और प्रकांड अर्थशास्त्री के रूप में सुविश्व विख्यात हुये। इतनी सदियाँ गुजरने के बाद भी आचार्य चाणक्य के द्वारा बताए गये शैक्षिक विचार और नीतियाँ आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होने अपने गहन अध्ययन, चिंतन और जीवन के अनुभवों से अर्जित अमूल्य ज्ञान को पूरी तरह निस्वार्थ होकर मानवीय कल्याण के उद्देश्य से अभिव्यक्त कर राष्ट्रीय एकता के विकास पर बल दिया।

आचार्य चाणक्य अपने समय के एक प्रबुद्ध विचारक थे, उन्होंने अपने महान् ग्रन्थ 'अर्थशास्त्र में ज्ञान (विद्याओं) की जो चार शाखाओं का आन्वीक्षिकी (दर्शनशास्त्र), त्रयी (धर्म–दर्शन), वार्ता (अर्थशास्त्र), तथा दण्डनीति (राजनीतिशास्त्र) का वर्णन किया है उनमें उन्होंने आन्वीक्षिकी (दर्शनशास्त्र) के अन्तर्गत तर्क, विवेक एवं न्याय के सिद्धान्तों को, त्रयी (धर्म–दर्शन) के अन्तर्गत कौटिल्य के वेद–वेदांगों के ज्ञान के साथ–साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक व सामजिक विषयों का समावेश किया है, वार्ता (अर्थशास्त्र) के अन्तर्गत आचार्य चाणक्य (कौटिल्य) ने जहाँ एक ओर कृषि, पशुपालन, खनन उद्योग एवं व्यापार आदि का समावेश किया है जिनके द्वारा भौतिक साधनों एवं सम्पत्ति का अर्जन होता है, वहीं दूसरी ओर वनों, वन्य जीवों, धात्विक खनिजों तथा राज्य की आर्थिक व्यवस्था को भी सम्मिलित किया है तथा दण्डनीति (राज्यतंत्र एवं राजनीतिशास्त्र) को ज्ञान की उपरोक्त तीन शाखाओं–त्रयी, वार्ता तथा आन्वीक्षिकी के सही एवं सफल क्रियान्वयन के लिये उत्तरदायी माना है। अर्थात आन्वीक्षिकी में सांख्य, योग और लोकायत का ज्ञान है। त्रयी में धर्म और अधर्म का विवेक है। वार्ता यानि अर्थ और अनर्थ दोनों का समग्रता से विचार है। दण्डनीति में सुशासन और कुशासन, दोनों का विचार किया गया है।

आचार्य चाणक्य के अनुसार, "विद्याविनयहेतुरिंद्रियजयः कामक्रोधलोभमानमदहर्षत्यागात्कार्यः।" अर्थात काम, क्रोध, लोभ, मान, मद, एवं हर्ष का परित्याग कर विद्या विनय का हेतु इंद्रियजय प्राप्त करनी चाहिए। विद्यावान व चरित्रवान होने का अर्थ है – जितेंद्रिय होना। जितेंद्रियता से अभिप्राय है – काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, मद, एवं हर्ष जैसे दुर्गुणों पर विजय अथवा उनका परित्याग। इस परित्याग का उपाय है – पाँच ज्ञानेन्द्रियों – कर्ण, त्वचा, नेत्र, जिव्हा व नासिका – को उनके विषयों – श्रवण, स्पर्श, दर्शन, संवाद, सूंघना – में प्राप्त न होने देना। जब व्यक्ति ज्ञानेन्द्रियों को उनके विषयों से निवृत कर लेगा, अर्थात

व्यक्ति की विषय में आसक्ति ही नहीं होगी, तो फिर काम क्रोधादि अपने को स्थिर ही नहीं रख पायेंगे। जब व्यक्ति काम – क्रोधादि का परित्याग करने में समर्थ हो जायेगा, तब ही वह सही अर्थों में विद्वान व आचारवान कहलायेगा।

आचार्य चाणक्य कुशल अर्थशास्त्री होने के साथ साथ एक योग्य शिक्षक भी थे। आचार्य चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में शिक्षक थे, इसलिए वे शिक्षा के महत्व को जानते थे। उनके ग्रंथो में शिक्षा के महत्त्व को दर्शाते हुए श्लोक हैं जिनके अनुसार अंधकार को शिक्षा की रोशनी से ही दूर किया जा सकता है। जीवन में सफलता के लिए शिक्षित होना बहुत ही जरुरी है। शिक्षित व्यक्ति ही चीजों को बेहतर ढंग से समझ सकता है। शिक्षा से ही व्यक्ति की बुद्धि का विकास होता है। बुद्धि के विकास से जीवन में सफलता के मार्ग खुलते हैं। जिसके पास शिक्षा रूपी मशाल होती है, अंधेरा उससे कोसों दूर रहता है। इसलिए व्यक्ति को शिक्षा को ग्रहण करने के लिए सदैव तैयार रहना रहना चाहिए। जिस व्यक्ति के पास अच्छी शिक्षा होती है वे हर जगह सम्मान पाते हैं। शिक्षित व्यक्ति समाज में सम्मानित होते हैं। ऐसे लोगों का दूसरे लोग अनुकरण करते है। शिक्षित व्यक्ति ही समाज को नई दिशा प्रदान करते हैं।

आचार्य चाणक्य के अनुसार ज्ञान को प्राप्त करने के लिए गुरु की अनिवार्य आवश्यकता है। शिष्य को चाहिए कि वह समर्पित भाव से गुरु की सेवा में उपस्थित हो। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुरु और शिष्य का संबंध अति पवित्र, गौरवपूर्ण और मधुर माना जाता है। आचार्य चाणक्य अपने शिष्यों के प्रति स्नेह रखते थे और उन्हें सब प्रकार से योग्य बनाने की का प्रयास करते थे। आचार्य चाणक्य ने गुरु अर्थात शिक्षक के सम्बन्ध में भी कहा कि शिक्षक तभी गोरवान्वित हो सकता है जब ये राष्ट्र गौरवशाली होगा और ये राष्ट्र गौरवशाली तब होगा जब ये राष्ट्र अपने जीवन मूल्यों एवं परम्पराओं का निर्वाह करने में सफल एवं सक्षम होगा। राष्ट्र तभी सफल एवं सक्षम होगा, जब शिक्षक अपने उतरदायित्व का निर्वाह करने में सफल होगा और शिक्षक को सफल तब कहा जाएगा, जब वह राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति में राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करने में सफल हो। यदि व्यक्ति राष्ट्र भाव से शून्य है, राष्ट्र भाव से हीन है और अपनी राष्ट्रीयता के प्रति सजग नहीं है तो ये शिक्षक की असफलता है।

आचार्य चाणक्य के शैक्षिक श्लोकों व सूत्रों में जब मूल्य मीमांसा का दर्शन करते हैं तो पाते हैं कि सत्य व वास्तविकता की पहचान विद्यार्थियों को आध्यात्मिक दर्शन में तत्व मीमांसा से प्राप्त होती है। आचार्य चाणक्य ने विद्यार्थियों व देश के नागरिकों को शिक्षा देते हुए बताया कि व्यक्ति को सांसरिक विषय वासनाओं में लिप्त न रहकर मोक्ष प्राप्ति को ही परम लक्ष्य मानना चाहिए, उसे ईश्वर के प्रति समर्पण भाव व निष्ठा रखते हुए सहृदयता और प्रेमपूर्ण मित्रता के जल से समाज को सिंचित करना चाहिए तथा क्रोध की धूप से सदैव दूर रहना चाहिएस व्यक्ति को सदैव सत्संगति में रहने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि यह ही मुक्ति की युक्ति है। निश्च्छ्ल प्रेम की भावना सृष्टि के हर प्राणी में होनी चाहिए। आचार्य चाणक्य ने कर्तव्यबोध का संदेश देते हुए अपने ग्रंथों में इंगित किया है कि किसी भी व्यक्ति को छोटा नहीं समझना चाहिए, समय पड़ने पर छोटे से छोटा व्यक्ति भी बड़ा साधन सिद्ध हो सकता है। व्यक्ति को सूक्ष्म निरीक्षण के द्वारा परिवर्तित परिस्थितियों को पहचान कर उसके अनुरूप व्यवहार कर हमेशा आशावादी दृष्टिकोण रखना चाहिए और प्रशंसा को अंतिम सत्य न मानते हुए गुणों को अपने अन्दर विकसित करन चाहिए समनुष्य को ज्ञान प्राप्ति के लिए खोजी प्रवृति का होना चाहिए और ज्ञान प्राप्ति के प्रति उसकी तृष्णा कभी कम नहीं होनी चाहिए साथ ही व्यक्ति कितने भी श्रेष्ठ पद को प्राप्त कर ले उसमें अहम भाव नहीं आना चाहिए। विनम्रता ही व्यक्ति की सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है।

आचार्य चाणक्य के अनुसार भारत की राजनीतिक, नैतिकता, मनुष्यता और आध्यात्मिकता में कोई भेद नहीं है। ये सब अभिन्न अंग है। कर्तव्य पालन में जिस दृढ़ता की आवश्यकता है, वही अध्यात्म है। दृढ़ता अध्यात्म की ही देन है। दृढ़ता के बिना राष्ट्र नहीं रह सकता। आचार्य चाणक्य के शैक्षिक दर्शन के अनुसार मनुष्य सामाजिक विषमताओं जैसे हिंसाचार, स्वार्थ, अत्याचार, आत्मघात, गुटबाजी की राजनीति आदि के चंगुल में फँसकर असंबद्ध और अंधापन का जीवन जी रहा है। सामाजिक विषमताओं से मोक्ष की आकांक्षा आज के व्यक्ति का एक आवश्यक और अनिवार्य साध्य का विषय है। जीवन में आस्था जगाने के लिए, जीवन को उन्नतिपूर्ण बनाने के लिए तथा एक आंतरिक अनुशासन को पुनर्जागृत करने के लिए चाणक्य का शैक्षिक दर्शन आज भी सार्थक सिद्ध होता है। अतः आचार्य चाणक्य के शैक्षिक दर्शन के अनुसार शिक्षा या ज्ञान के द्वारा ही जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है।

नोट : उक्त आलेख के सन्दर्भ में मैं आचार्य मानिक (चाणक्य नीति, साधना पब्लिकेशन दिल्ली), विशाख दत्त (मुद्राराक्षस, चौखम्बा संस्कृत सीरिज, वाराणसी), रामावतार विद्याभास्कर (चाणक्य सूत्र संग्रह, आर. बी. एस. प्रकाशन, हरिद्वार), देवकान्ता शर्मा, (कौटिल्य के प्रशासनिक विचार, प्रिन्टवैल पब्लिशर्स, जयपुर), राधावल्लभ दास (चाणक्य नीति एवं व्यवहार शास्त्र, चिल्ड्रन बुक सेन्टर, दिल्ली), वाचस्पति गैरोला, (कौटिलीय अर्थशास्त्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी), ज्वाला प्रसाद मिश्र, (कामन्दकीय नीतिसार, खेमराज श्रीकृष्णदास पब्लिकेशन, बंबई), तथा अंतरताना व अंतर्जाल पर उपलब्ध ज्ञात व अज्ञात लेखकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी विषय सामग्री ने मुझे यह आलेख प्रस्तुत करने हेतु प्रेरणा एवं सहयोग किया ।

स्वः की पहचान - आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश

डॉ. प्रियंका सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
शम्भू दयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद

कहते हैं संघर्ष बिना जीवन के मूल मंत्र को हम नहीं समझ सकते। वही सबसे महत्वपूर्ण है स्वः की पहचान यदि हम स्वः के भाव को जान जाएंगे तो लक्ष्य प्राप्ति के लिए अतिरिक्त प्रयास नहीं करने पड़ेंगे। स्वयं के भाव की स्थिति में सर्वोत्तम योग्य कार्य कर विकासन्मुख बन सकते हैं। स्वयं का भाव अर्थात् अपना भाव और स्वः की पहचान का तात्पर्य अपनी योग्यता और कुशलता की पहचान करना। आत्म चिंतन व आत्म ज्ञान द्वारा ही हम स्वः के भाव का साक्षात्कार कर सकते हैं तभी हम स्वयं को परिपूर्ण बना पाते हैं और यही कार्य उत्तर प्रदेश के निवासियों ने किया। बदलती वैश्विक परिदृश्य में तथा कोरोना के संकट की विकट परिस्थिति के दौरान उत्तर प्रदेश राज्य ने जिस प्रकार अपनी क्षमता और दक्षता को दर्शाया है उससे स्वः के भाव की अनुभूति होती है। आज संपूर्ण भारत ही नहीं विश्व भी उत्तर प्रदेश की तरफ अपार संभावनाओं के दृष्टिगत रुचि रख रहा है। विश्व के समक्ष खड़ी आपदा में अवसर तलाशना शुरू किया और एक सकारात्मकता की ओर अग्रसर हुए। निश्चित रूप से यह सुशासन का जीता जागता प्रमाण है तथा चुनौतियों को अवसर में बदलने की चेष्टा।

उत्तर प्रदेश एक ऐसा राज्य है जिसने भारतीय राजनीति में अपना दमखम बहुत पहले से ही दिखाया है वहीं सांस्कृतिक विरासत में धनी उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिले का अपना इतिहास रहा है। वर्तमान समय में सांस्कृतिक विरासत को मूर्त रूप देने व उसकी महत्ता को विश्व के कोने कोने में जाने का उद्देश्य फलीभूत हो रहा है। वास्तव में अध्ययन की संस्कृति हमारे जीवन के संस्कारों और हमारे व्यक्तित्व के विकास से सीधी जुड़ी हुई है। उत्तर प्रदेश की संस्कृति व विरासत यहां के लोगों के संस्कारों में परिलक्षित होती है जो व्यक्तित्व विकास में सहायक है।

उत्तर प्रदेश में पर्यटन, शिक्षा संस्कृति के साथ–साथ निवेश में भी कई देश अपनी रुचि दिखा चुके हैं। उत्तर प्रदेश को अपनी प्राथमिकता वाला राज्य बताया है ऑस्ट्रेलिया के उच्चायुक्त बैरी ओ फैरल ने यहां पर निवेश की संभावनाओं पर विचार विमर्श किया। 'इज ऑफ डूइंग बिजनेस' से

उत्तर प्रदेश में निवेश ने लंबी छलांग लगाई है क्योंकि यहां इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र को मजबूत बनाने की दिशा में कार्य चल रहा है। यहां कई एक्सप्रेसवे हैं और अन्य पर कार्य चल रहा है। सभी मूलभूत सुविधाएं जैसे जमीन बिजली पानी आदि सुगमता से उपलब्ध है। तंत्र को पारदर्शी व भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के प्रयास से कार्यों की शिथिलता में भी कमी आई है जिसके कारण प्रशासन व शासन को सुशासन में बदलते देख जनमानस में नई ऊर्जा का संचार हुआ और लोगों ने पूरी लगन से अपनी क्षमता को दर्शाया भी। चाहे वो कृषि क्षेत्र से संबंधित हो या अन्य क्षेत्रों से। आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश अभियान का संकल्प उत्तर प्रदेश के प्रत्येक नागरिक का संकल्प है इसमें महिलाओं का योगदान भी अहम है। बहुत सी संस्थानों ने नवोन्मेष द्वारा नए कार्यों को परिणित किया जिसमें गोबर से दिए, गणेश की मूर्तियां बनाना हो या अन्य। उत्तर प्रदेश अपने प्राकृतिक दृश्य व संसाधनों से भी परिपूर्ण है जिस को दृष्टिगत रखते हुए सरकार ने फिल्म सिटी बनाए जाने की योजना को मूर्त रूप दिया है। जिस क्षेत्र में भी उत्तर प्रदेश राज्य की निर्भरता कहीं और है उस प्रकार का इंफ्रास्ट्रक्चर या लैब का अभाव रहा है उस क्षेत्र में भी निर्भर होने की दिशा में कार्य शुरू हो गया है जैसे पुणे में स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट आफ वायरोलॉजी (NIV) की तर्ज पर ही लखनऊ में भी केजीएमयू और सीडीआरआई मिलकर संस्थान बनाएंगे। उत्तर प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाएं एवं चिकित्सा सुविधा का विस्तार हुआ है तथा नए मेडिकल कॉलेज के खुलने से अच्छी चिकित्सा सुविधा लोगों को उपलब्ध होगी। शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता एवं उससे निकले छात्र पूरे विश्व में भी अपनी पहचान बनाए हुए हैं।

वही बीएचयू अपने स्मार्ट क्लास की संख्या के कारण दुनिया का इकलौता विश्वविद्यालय बन गया है। सरकार की महत्वाकांक्षी योजना एक जनपद एक उत्पाद से कई ऐसे हुनर को दिशा मिलेगी जो कहीं पीछे छूट गए। गुलाबी मीनाकारी का कार्य काशी में दशकों से हो रहा परंतु अब पूरे विश्व में अपनी पहचान बना रहा है। इसी प्रकार सिद्धार्थनगर के काला नमक चावल की खुशबू अब दक्षिण पूर्व एशिया तक पहुंचेगी। बौद्ध अनुयाई बाहुल्य देशों में महात्मा बुद्ध की उक्ति 'इस चावल की विशिष्ट महक हमेशा लोगों को मेरी (महात्मा बुद्ध की) याद दिलाएगी' के साथ प्रचारित व प्रसारित किया जा रहा है। इसी योजना के तहत 728 जिलों को सूचीबद्ध किया गया है जिससे कृषि क्षेत्र में निर्यात को बढ़ावा मिलेगा और किसानों की आय में वृद्धि होगी। उत्तर प्रदेश हुनर से भरा हुआ है जहां टेराकोटा शिल्प से लेकर लकड़ी के खिलौने, हस्तनिर्मित कागज, पत्थर शिल्प, वाद्य यंत्र, कालीन, जरी जरदोजी, चमड़ा उत्पाद, ताले व हार्डवेयर, काली मिट्टी की कलाकृतियां, हैंडलूम आदि सम्मिलित है। ■

एक भारत, श्रेष्ठ भारत के निहितार्थ

डॉ. उर्विजा शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
एस. डी. पी. जी. कॉलेज, गाजियाबाद

"अजय्यां च विश्वस्य देहीश शक्तिं सुशीलं उजगद्येन नम्र भवेत्।

श्रुत्रं चैव यत्कण्टकाकीर्ण मार्ग स्वयं स्वीकृतं नः सुगं कारयेत्।। (मंगल श्लोक संघ, प्रार्थना)

भारत राष्ट्र प्राचीन काल से ही अनेक विविधताओं से भरा रहा है। इस देश में सांस्कृतिक विविधता होते हुए भी 'एकत्व' दिखाई देता है। इसका कारण संभवतः वही प्रेरणा वही भाव, वही अनुभूमि है जो संभवतः प्राचीन समय से ही इसे देश का प्राण तत्व है।

गत दिनों 31 अक्टूबर को बल्लभ भाई पटेल जी के जन्मदिवस को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' घोषित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी द्वारा दिया गया वक्तव्य "विविधता से देश भरा है, अतः एकता को बढ़ाने वाले चीजों को कैसे बढ़ाया जाये, राज्यों के बीच समन्वय बनाने हेतु दूसरे राज्य की संस्कृति को अपनाया जाये।" इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। वस्तुतः कभी–कभी विविधता विघटन का कारण भी बन जाती है। इस कारण "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" जैसे अभियानों की आवश्यकता होती है। यदि हम चाहते हैं कि कश्मीर से कन्या कुमारी तक राष्ट्र में एकत्व का भाव रहे तो शिक्षा, संस्कृति, सोच, विमर्श एवं विचारों को भी समझने की आवश्यकता होगी। वैसे भी संस्कृति व भाषा सदैव सेतु का कार्य करती है। तदनन्तर सभ्यता विकसित होती जाती है। यह प्रयास गांव के छोटे से किसान से लेकर उच्च पदासीन अधिकारियों तक करना होता है। ध्यातव्य है कि भारत सरकार ने भी यही लक्ष्य लेकर प्रारंभिक शिक्षा के विद्यालयों से लेकर उच्च शिक्षा संस्थानों तक यह प्रयास किया। क्योंकि किसी भी व्यक्ति को दिशा देने का कार्य शिक्षा करती है। संभवतः इसी उद्देश्य को लेकर नई शिक्षा नीति 2020 का आगाज किया गया है।

यदि हम इतिहास पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि कहीं न कहीं 'एक भारत' वाली सोच न होने के कारण ही भारत ने निरंतर बाहय आक्रांताओं का सामना किया। सिकन्दर से लेकर महमूद गजनवी तक, मुहम्मद बिन कासिम से लेकर बाबर तक तथा कालान्तर में कभी पुर्तगाली, कभी फ्रांसीसी तथा अंततः अंग्रेजों द्वारा भारत की इसी कमजोरी का लाभ उठाया गया। संभवतः इसी से सबक लेकर पहले वल्लभभाई पटेल तो अब वर्तमान सरकार भारत के एकीकरण का प्रयास कर रही है। इसी के लिए कला, संस्कृति, भाषा, वेशभूषा, व्यंजनों के माध्यम से "एक भारत श्रेष्ठ भारत" को सही दिशा देने का प्रयास किया जा रहा है। ध्यातव्य है कि जब राष्ट्र किसी न किसी प्रकार विघटित होगा, तभी वह आन्तरिक व बाहय संघर्षों में लिप्त होगा।

शारीरिक भिन्नता के कारण ही उत्तर पूर्व के राज्यों के निवासियों के साथ सदैव भेदभाव होता रहा है। भाविक भिन्नता के कारण ही 'हिन्दी–तमिल' संघर्ष कराया जाता रहा है। सांस्कृतिक भिन्नता के कारण ही 'उत्तर–दक्षिण' को लेकर द्वेषभाव की राजनीति चरम पर रही है। इन सभी धर्म, जाति, सम्प्रदाय, रंगभेद, क्षेत्रीयता की राजनीतिक स्वार्थों की नीति का अंत होगा तभी राष्ट्र एकीकरण का भाव जाग्रत होगा। यह तो भारत की संस्कृति की विशालता तथा गहनता ही है कि वह पतित–पावनी गंगा के समान सबको समाहित कर लेती है। आवश्यकता इस बात की है कि उस विशेषता को आत्मसात करते हुए सांस्कृतिक वैविध्य को स्वीकार किया जाये। इस संदर्भ में मोदी जी कहते हैं कि "जब एक राज्य दूसरे राज्य की संस्कृति को आदर देकर सांस्कृतिक आदान–प्रदान करेगा, तभी विविधता में एकता का सही रूप सामने आ सकेगा।

आज इस बात की है आवश्यकता कि हम अपने व्यक्तिगत दुराग्रहों एवं स्वार्थों को त्यागकर राष्ट्रनिर्माण हेतु देश के प्रत्येक भाग में रहने वाले निवासियों का सम्मान करें। सांस्कृतिक आदान–प्रदान द्वारा यह संभव है राजनीतिक स्वार्थी को तिलांजलि देकर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के निर्माण के स्वप्न को साकार करें। इसके लिए हमें श्रीकृष्ण के श्रीमद्भागवत में दिये गये उपदेश "कर्मण्येमाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" का पालन करते हुए राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना होगा। इस देश की आत्मा इसकी गौरवशाली संस्कृति में निहित है। वह संस्कृति जो भावमय है, ज्ञानमय है, कर्ममय है। प्रत्येक पूर्वाग्रह एवं स्वार्थों को तिलांजलि देकर ही यह कर्तव्य निर्वहन हो सकता है। इसके लिए राजनीतिक प्रयास आवश्यक है। जब राजनीतिक एकीकरण होगा तभी विश्वस्तर पर भी भारत अपनी धाक जमा सकेगा। कब तक हम अपने निजी स्वार्थों एवं महित्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु बिना भारत के हित को जाने चीन जैसे देशों का समर्थन करते रहेंगे। वैसे भी स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही अनेक ऐसी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याऐं है जिनका निराकरण करना अपरिहार्य है। अब समय आ चुका है कि हम अपनी राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक विविधताओं को अपनी शक्ति बनाऐं, कमजोरी नहीं। तभी 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के सही अर्थ को चरितार्थ कर सकेंगे। भारतभूमि वेदों, पुराणों, रामायण, महाभारत की भूमि है। यहां आवश्यकता है समस्त द्वेषों, द्वंदों व अन्तर्विरोधों को तिलांजलि दी जाये। साम्प्रदायिकता, जातीयता, श्रेत्रीयता, को त्यागकर भारतीयता के मंत्र को स्वीकार करना ही होगा। तभी "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" बनकर विश्व में अपने गौरव का परचम लहरा सकेगा। ■

महिला प्रतिभाएं

प्रथम महिला चिकित्सक डॉ. आनंदी गोपाल जोशी

डॉ. नीलम कुमारी
विभागाध्यक्ष (अंग्रेजी विभाग)
किसान पोस्ट ग्रेजुएट कॉलज, सिम्भावली, हापुड़

महाकवि कालिदास ने 'कुमारसम्भव' महाकाव्य की पार्वती तपश्चर्याप्रकरण के शिव–पार्वती संवाद में एक महत्त्वपूर्ण उक्ति लिखी है– 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' जिसका अर्थ है – शरीर धर्म का प्रथम साधन है। लौकिक दृष्टि हो या आध्यात्मिक दृष्टि से अपने लक्ष्य की साधना के लिए अथवा गन्तव्य तक पहुँचने के लिए मनुष्य को स्वस्थ्य मन और स्वस्थ्य तन की नितान्त आवश्यकता है।

"व्यायामात् लभते स्वास्थ्यं दीर्घायुष्यं बलं सुखं।
आरोग्यं परमं भाग्यं स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम्।।"

अर्थात व्यायाम से स्वास्थ्य, लम्बी आयु, बल और सुख की प्राप्ति होती है। निरोगी होना परम भाग्य है और स्वास्थ्य से अन्य सभी कार्य सिद्ध होते हैं। अतः यह सर्वथा सत्य है कि निरोगी होना सौभाग्य की बात है और स्वस्थ शरीर ही सफल जीवन का आधार है। शायद यही कारण है कि हम प्रत्येक वर्ष सात अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाते है। इस समय जब पूरा विश्व कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा है तो ऐसे में इस दिन का महत्व और भी बढ़ जाता है। इस संकट काल मे जहां एक ओर अमेरिका, फ्रांस, इटली जैसे देशों ने अपने घुटने टेक दिए वहीं दूसरी ओर भारत की आयुर्वेद पद्धति ने इस महामारी की घोर निराशा और अंधकार में डूबी हुई मानवता को आशा की किरण देकर पुनः भारत को विश्व गुरु के शिखर पर स्थापित करने का कार्य किया है और यही नए भारत का उदय है। जब हम बात करते हैं कोरोना महामारी और भारत उदय की, तो इस संकट काल मे महिलाओं का योगदान को भला हम कैसे भूल सकते है। जिस प्रकार माँ काली ने दुष्टों का संहार कर देवों की रक्षा की थी ठीक उसी प्रकार इस कोरोना संकट काल मे भारतीय महिलाओं ने घर मे झाड़ू–पोंछे से लेकर परिवार जनों के लिए खाना बनाने जैसे दैनिक कार्य करते हुए ऑफिस का काम भी घर से कर के दो हाथों से आठ हाथों का काम कर अपने शक्ति स्वरूपा होने का परिचय दिया है। अपनी रसोई के मसाले काली मिर्च, लौंग, इलायची से बने काढ़े को औषधि के रूप में प्रयुक्त कर परिवार को जीवनदान दिया। इस तरह अगर देखा जाए तो भारतीय महिलाओं ने केवल घर में गृहणी का कार्य कुशलतापूर्वक किया बल्कि एक चिकित्सक के रूप में भी अपना अमूल्य योगदान दिया। यह उनके कार्य करने की क्षमता, दृढ़ संकल्प और दृढ़ इच्छाशक्ति को दर्शाता है। शायद यही कारण है उनके इसी

हौसले और जज्बे को सम्मान देने के लिए वर्ल्ड हेल्थ डे 2020 की थीम थी सपोर्ट नर्सर्स एंड मिडवाइफ।

वास्तव में भारतीय महिला त्याग, तपस्या व बलिदान की प्रतिमूर्ति है जिसने विभिन्न कालखण्ड में अपने हौसले व जज्बे से, दृढ़ संकल्प व इच्छाशक्ति से विश्व के सामने मिसाल कायम की है। एक ऐसी ही दृढ़ इच्छाशक्ति, दृढ़ संकल्प व हौसले की मिसाल हैं भारत की प्रथम महिला चिकित्सक डॉ. आनंदी गोपाल जोशी जी। आज का समय महिला सशक्तिकरण का समय है जहाँ महिलाओं को सब तरह के अधिकार व सुविधाएं उपलब्ध है, परंतु उस समय जब भारत में महिला की शिक्षा सपने से कम नहीं थी ऐसे में आनंदी गोपाल जोशी जी ने विदेश में जाकर डॉक्टर की डिग्री हासिल कर महिलाओं के लिए प्रेरणा श्रोत बनकर मिसाल कायम की।

डॉ. आनंदी गोपाल जोशी का जन्म 31 मार्च 1865 को महाराष्ट्र में पुणे के कल्याण कस्बे में (फिलहाल पुणे का वो हिस्सा कल्याण महाराष्ट्र के थाणे का हिस्सा है) एक साधारण जमीदार दक्षिणात्य ब्राह्मण प. गणपतराव अमृतेश्वर जोशी की दूसरी पत्नी से हुआ था। उनके बचपन का नाम यमुना था। उनका विवाह 9 साल की अल्पायु में ही उनसे करीब 20 साल बड़े पं. गोपाल राव से हो गया था जो कि डाक विभाग में बाबू थे, वे विधुर अर्थात उनकी पहली पत्नी का देहांत हो चुका था। विवाह के पश्चात गोपाल राव ने अपनी पत्नी यमुना का नाम बदलकर आनंदी रखा। गोपाल राव प्रगतिशील विचारों वाले व्यक्ति थे और महिलाओं की शिक्षा के हिमायती थे। पहले जमाने में जब महिला की शादी हो जाती थी तो उनका सिर्फ सरनेम ही नहीं बल्कि उनका नाम भी बदल दिया जाता था अब यमुना, आनंदी बेन गोपालराव जोशी हो चुकी थीं, जो कि आगे चलकर डॉ. आनंदी गोपाल जोशी के नाम से जानी गयीं।

आनंदी गोपाल जोशी जी का प्रारम्भिक जीवन संघर्षों से भरा था। जिस घटना ने उन्हें चिकित्सक बनने के लिए प्रेरित किया वह उनके जीवन की बहुत दुःखद घटना थी। यह घटना उस समय की है जब वह वह मात्र 14 साल की आयु में माँ बनी परंतु दुर्भाग्यवश उनकी एकमात्र संतान की मृत्यु 10 दिनों में ही हो गई। इस बात से उन्हें गहरा आघात लगा और उन्होंने यह प्रण लिया कि वह एक दिन डॉक्टर बनेगी और ऐसी असमय मौत को रोकने का प्रयास करेंगी। उनके स्थान पर अगर और कोई होता तो हताश हो जाता, टूट जाता मगर उन्होंने हिम्मत नही हारी और अपने बारे में न सोचकर दूसरों की भलाई के बारे में सोचा। उनका मानना था कि जिस पीड़ा से वो गुजरी हैं कोई और न गुजरे। यह उनकी सकारात्मक सोच और मानवता के प्रति समर्पण भाव को दर्शाता है। उनके चिकित्सक बनने की इच्छा में उनके पति गोपाल राव जी ने भी उनका भरपूर सहयोग दिया और उनका हौसला बढ़ाया।

आनंदी गोपाल जोशी का व्यक्तित्व

महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत है। उन्होंने 1886 में अपने सपनों को साकार रूप दिया। मेडिकल क्षेत्र में शिक्षा पाने के लिए वह अमेरिका गई। उस समय उनके इस निर्णय की समाज में काफी आलोचना हुई थी कि वह एक शादी शुदा हिंदू स्त्री विदेश के शहर पेनिसिल्वेजनिया जा कर क्यों पढ़ाई करे ? लेकिन आनंदीबाई एक दृढ़ निश्चयी महिला थी, उन्होंने आलोचनाओं की तनिक भी परवाह नहीं की। और यही कारण है कि उन्हें पहली भारतीय महिला चिकित्सक होने का गौरव प्राप्त है। पति गोपाल राव जी ने आनंदीबाई का उत्साहवर्धन करते हुए उनको डॉक्टरी का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया। यहां एक बात और अवलोकन करने की है कि आनंदीबाई जी ने कमजोर स्वास्थ्य होने के बावजूद भी चिकित्सा अध्ययन का निश्चय किया और रूढ़िवादी समाज के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया।

1880 में गोपालराव ने एक प्रसिद्ध अमेरिकी मिशनरी रॉयल वाइल्डर को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने संयुक्त राज्य में औषधि अध्ययन में आनंदीबाई की रुचि के बारे में बताया। वाइल्डर ने उनके पत्र को प्रिंसटन की मिशनरी समीक्षा में प्रकाशित कराया। सौभाग्य की बात है कि थिओडिसिया कार्पेन्टर जो कि रोजेल, न्यू जर्सी की निवासी थी, उन्होंने अपने दंत चिकित्सक के लिए इंतजार करते वक्त वह पत्र पढ़ा तो औषधि अध्ययन के लिए आनंदीबाई कि वह प्रबल इच्छा और पति गोपाल राव के समर्थन से प्रभावित होकर उन्होंने अमेरिका में आनंदीबाई के लिए आवास की पेशकश की।

बात उन दिनों की है जब जोशी युगल कोलकाता में थे तो आनंदी बाई जी का स्वास्थ्य कमजोर हो रहा था वे निरंतर सिर दर्द, कभी–कभी बुखार और कभी–कभी सांस की बीमारी वजह से दिनों–दिन कमजोर होती जा रही थी। पश्चिम में उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए आनंदीबाई की योजनाओं के बारे में जानने पर रूढ़िवादी भारतीय समाज ने उन्हें बहुत दबाने का प्रयास किया, परंतु उनके निश्चय को यह रूढ़िवादी समाज भी नहीं दबा पाया। थोर्बोर्न नामक एक चिकित्सक जोड़े ने आनंदीबाई को पेंसिल्वेनिया के महिला चिकित्सा महाविद्यालय में आवेदन का सुझाव दिया।

आंनदी बाई ने सेरामपुर कॉलेज (पश्चिम बंगाल) के हॉल में पूरे समुदाय को संबोधित करते हुए अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय दिया जिसमें उन्होंने अमेरिका जाने और मेडिकल डिग्री प्राप्त करने के अपने फैसले को भी समझाया उन्होंने इस बात को भी स्पष्ट किया कि भारत में महिला डॉक्टर की नितांत आवश्यकता है। उन्होंने भारत में महिलाओं के लिए मेडिकल कॉलेज खोलने के अपने लक्ष्य के बारे में भी बताया। पूरे भारत मे उनके भाषण को बाद में प्रचारित व प्रसारित किया गया और उनके इस कदम को काफी सराहा गया।

आनंदी बाई ने कोलकाता से पानी के जहाज के माध्यम से न्यूयॉर्क की यात्रा की। आनंदीबाई ने पेंसिल्वेनिया की वूमन मेडिकल कॉलेज में अपने चिकित्सा कार्यक्रम में भर्ती होने के लिए नामंकन किया, जो कि दुनिया में दूसरा महिला चिकित्सा कार्यक्रम था। कॉलेज के डीन राहेल बोडले ने उन्हें नामांकित किया। अमेरिका में ठंडे मौसम और अपरिचित आहार के कारण उनका स्वास्थ्य खराब हो गया था। उन्हें तपेदिक हो गया था फिर भी उन्होंने एमडी से स्नातक किया। उनकी थीसिस का विषय था 'आर्यन हिंदुओं के बीच प्रसूति'। इनके स्नातक स्तर की पढ़ाई पर रानी विक्टोरिया ने उन्हें एक बधाई संदेश भेजा था। 1886 के अंत में आनंदीबाई भारत लौट आयी जहां उनका भव्य स्वागत हुआ। कोल्हापुर की रियासत ने उन्हें स्थानीय अल्बर्ट एडवर्ड अस्पताल की महिला वार्ड के चिकित्सक प्रभारी के रूप में नियुक्त किया। अगले वर्ष 26 फरवरी 1887 को आनंदीबाई की 22 साल की उम्र में तपेदिक से मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु पर पूरे भारत में शोक व्यक्त किया गया। उनकी राख को थिओडिसिया कार्पेन्टरके पास न्यूयॉर्क भी भेजा गया। थिओडिसिया कार्पेन्टर ने उनकी राख को परिवार के कब्रिस्तान में रखा और शिलालेख में लिखा गया कि 'आनंदी जोशी एक हिंदू ब्राह्मण लड़की थी जो विदेश में शिक्षा प्राप्त करने और मेडिकल डिग्री प्राप्त करने वाली पहली भारतीय महिला थी' यह मात्र शब्द नहीं है बल्कि आनंदीबाई की जिजीविषा और उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति को प्रकट करती है। और इस प्रकार आनंदीबाई देश और दुनिया में एक मिसाल बन गई। उनके जीवन पर कैरोलिन वेल्स ने 1888 में बायोग्राफी लिखी। इस बायोग्राफी पर एक सीरियल बना जिसका नाम था 'आनंदी गोपाल' जिसका प्रसारण दूरदर्शन पर किया गया। आनंदी गोपाल के जीवन पर ही आधारित 'आनंदी गोपाल' नाम की एक हिंदी श्रृंखला प्रकाशित की गई जिसका निर्देशन कमलाकर सारंग ने किया था। श्रीकृष्ण जनार्दन जोशी ने अपने मराठी उपन्यास आनंदी गोपाल में उनके जीवन का एक काल्पनिक लेख लिखा है जिसे रामजी जोगलेकर ने इसी नाम से एक नाटक के रूप में रूपांतरित भी किया। डॉक्टर अंजली कीर्तन ने डॉ. आनंदीबाई जोशी के जीवन पर बड़े पैमाने पर शोध किया है और उसके समय और उपलब्धियों के बारे में एक मराठी पुस्तक 'डॉ. आनंदीबाई जोशी काह आणि कर्तृत्व' 'डॉ. आनंदीबाई जोशी उसका समय और उपलब्धियां' लिखी है। इसमें डॉ आनंदीबाई जोशी की दुर्लभ तस्वीरें भी हैं। लखनऊ में एक गैर सरकारी संगठन इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च डॉक्यूमेंटेशन इन सोशल साइंस (IRDS) भारत मे चिकित्सा विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए उनके शुरुआती योगदान के सम्मान में मेडिसिन के लिए आनंदीबाई जोशी पुरस्कार प्रदान कर रहा है। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र सरकार ने महिलाओं के स्वास्थ पर काम कर रही युवा महिलाओं के लिए उनके नाम पर एक फेलोशिप की स्थापना भी की है। उनके सम्मान में शुक्र पर एक गड्ढा का नाम उनके नाम पर 'जोशी' रखा गया है, जो अक्षांश 5.5°N और देशांतर 288.8°E पर स्थित है। मार्च 2018 को, गूगल ने उनकी 153वीं जयंती के उपलक्ष्य में उन्हें गूगल डूडल के साथ सम्मानित किया। 2019 में, मराठी में उनके जीवन पर एक फिल्म आनंदी गोपाल नाम से बनाई गई है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हम उस भारत के वासी है जहाँ आनंदी गोपाल जैसी महान आत्माओं ने जन्म लेकर अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से करोड़ो महिलाओं को प्रेरित किया है।

डॉ. आनंदी गोपाल जोशी न सिर्फ वेस्टर्न मेडिसिन में मेडिकल डिग्री लेने वाली पहली भारतीय महिला थीं, बल्कि वे ऐसे समय में नारीवादी और राष्ट्रवादी भी थीं जब महिलाएं बाहर नहीं निकलती थीं। हालांकि, वे वैज्ञानिक तो नहीं थीं, लेकिन उन्होंने मेडिकल की छात्रा होते हुए भी सार्वजनिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर लिखा और रीसर्च की।

हिंदू पुनर्जागरण का अश्वमेध यज्ञ

मृदुल त्यागी
वरिष्ठ पत्रकार

हिंदू होना बिल्कुल वैसा ही है, जैसे सांस लेना। कोई अतिरिक्त प्रयास नहीं। कोई उपक्रम नहीं। बस जैसे आप सांस लेने के लिए कोई प्रयास नहीं करते, वैसी ही सहजता सनातन धर्म है। यहां प्रतीकों, तरीकों, मापदंडों, तय नियमों, वेशभूषा, खान–पान का बंधन नहीं है। बस आपकी सांस में राम हैं (चाहे वह कृष्ण हैं या फिर दुर्गा) आप हिंदू हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रकृति ने जैसा आपको उत्पन्न किया है, वैसा ही जीवन जी लेने का नाम है हिंदू। कुल मिलाकर जीवन पद्धति। इसके बावजूद आपकी पहचान को, आपके इतिहास को, आपके श्रद्धा स्थलों को, आपके अवतार पुरुषों को मिटा देने की चेष्टा अनंत काल से चल रही है। हम किसी को चुनौती नहीं देते, सहजता से स्वीकार करते हैं। लेकिन हमारा अस्तित्व हमेशा से चुनौतियों का सामना करता रहा। हम हर मजहब, रिलीजन, धर्म को स्वीकारते रहे और जिन्हें हमने गले लगाया, सबकी बगल में छुरा था। तो भी हमारे सनातन धर्म ने हर चुनौती को पार किया।

हिंदू धर्म हर चुनौती के साथ पुनर्जागरण से गुजरा है। जब देश के हिंदुओं को एक सूत्र में पिरोने की चुनौती आई, तो आदि गुरू शंकराचार्य ने हिंदू चेतना को दोबारा जागृत कर दिया। जब इस्लामिक आक्रांताओं के अत्याचार से हिंदू चेतना कुंद होने लगे, तो सूरदास और तुलसीदास ने हमें एक सूत्र में पिरो दिया। अंग्रेजों की गुलामी के समय भी ऐसा ही हुआ। चर्च और ब्रितानिया हुकूमत के चाल–चलन को चुनौती देने के लिए फिर एक और पुनर्जागरण का दौर आया। तब स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी दयानंद जैसे महापुरुषों का अवतरण हुआ। यह वह दौर था, जब पूरी दुनिया सही मायने में हिंदू धर्म से रूबरू हुई थी। तात्पर्य यही है कि हिंदू धर्म के अंदर एक आटो रि–एनर्जी (दोबारा खुद को ऊर्जित कर लेना) सिस्टम काम करता है। यह विलक्षण है। इसलिए कि आपका धर्म विलक्षण है। इसलिए भी क्योंकि धर्म तो बस आपके ही पास है।

अखिलः वेदः धर्ममूलम्, यानी अखिल वेद ही धर्म का मूल है। गीता का पहला शब्द धर्म और अंतिम शब्द मम है। गीता है क्या, मम धर्म की व्याख्या। एक प्रश्न, मेरा धर्म क्या है, बस इतना ही कि आप स्वयं को पहचानें। कितना सरल है। किसी आसमानी किताब जैसा नहीं, ऐसा नहीं कि बूझो तो जानें। हमने जब स्वयं को पहचाना, तो हमारे सामने कोई नहीं टिका। स्वयं को पहचानने वाले नायकों से ही यह धर्म सनातन है। श्रंखला शुरू होती है प्रथम मनु से होकर भगीरथ, श्री राम से होते हुए ललितादित्य, विक्रमादित्य, महाराजा भोज, से होते हुए पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप, लचित बारफुकन, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविंद सिंह.... अनंत नाम हैं। आजादी के बाद से ही ये देश अंग्रेजियत वाली राजनीति और वामपंथी विचारधारा के दोहरे शोषण का शिकार रहा। हिंदू विरोधी कानून, कृत्य, व्यवस्थाएं बनाई जाती रहीं। सिर्फ गौमाता का संहार न हो, ये मांग करने वाले संतों पर इस देश की सरकार ने गोली चलाई और आखिरकार फिर हिंदू समाज के सामने वह समय आया, जो आदि गुरु शंकराचार्य, सूरदास, तुलसीदास, स्वामी विवेकानंद के दौर में था। शिक्षा से लेकर भोजन पद्धति तक आघात दर आघात, फिर एक बार हिंदू धर्म पुनर्जागरण मांग रहा था।

मैं इस मायने में राम जन्मभूमि आंदोलन को उसी श्रेणी के पुनर्जागरण काल की श्रंखला में रखता हूं। एक विदेशी आक्रांता ने अपने बर्बर दौर में हमारे आराध्य श्रीराम की जन्मस्थली को नेस्तानाबूद किया, मस्जिद बनाई और इस देश की राजनीति और निजाम की जिद देखिए कि मस्जिद जरूरी थी, एक अरब से ज्यादा हिंदुओं के आराध्य श्री राम की जन्मभूमि नहीं। यह बात हिंदू जनमानस में बहुत गहरे तक बैठी और एक संघर्ष, एक धर्मयुद्ध और एक पुनर्जागरण की शुरुआत हुई। कारसेवकों पर गोलीबारी, फिर श्रीराम के वशंजों द्वारा गुलामी के प्रतीक उस ढांचे का विध्वंस से होते हुए ये लड़ाई अदालतों में पहुंची और पुनर्जागरण का प्रतीक है कि आज श्री राम मंदिर का निर्माण हो रहा है। ज्ञानवापी मस्जिद के नीचे मंदिर है या नहीं, इसके सर्वेक्षण के आदेश हो गए हैं। मतलब ये कि हम अब कृष्ण जन्मभूमि की मुक्ति की तरफ चल रहे हैं। एक भगवाधारी संत देश के सबसे बड़े प्रदेश का मुख्यमंत्री है और तमाम रेटिंग एजेंसियों के मुताबिक देश का सर्वश्रेष्ठ मुख्यमंत्री है। मुस्लिम और इस्लाम को पोषित करने के लिए विशेष दर्जा प्राप्त जम्मू–कश्मीर अब केंद्र शासित प्रदेश है। अपने ही देश में शरणार्थी बना दिए गए कश्मीरी पंडितों की घर वापसी हो रही है और म्यांमार से दामादों की तरह लाकर बसा दिए गए रोहिंग्या मुसलमानों को वापस भेजा जा रहा है। ये पुनर्जागरण ही है कि कोरोना को मिटाने के लिए हम दीपक जलाते हैं और फिर वैक्सीन बनाकर पूरी दुनिया के गरीब व कमजोर देशों तक मुफ्त पहुंचाते हैं। हिंदू जागा है, तभी तो हम सीना तानकर चीन के सामने खड़े हो जाते हैं। पाकिस्तान को घर में घुसकर मार आते हैं। पड़ोसी देशों के पीड़ित हिंदुओं को हम

भारत में नागरिकता देने का कानून बना लेते हैं। पूर्वोत्तर से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक अब भगवा ध्वजा नजर आती है। शादी के नाम पर धर्मांतरण को रोकने के लिए कई राज्यों में कानून बन चुका है। देश का प्रधान सेवक केदारनाथ से लेकर बाबा विश्वनाथ तक की सेवा करता है। कभी जो गोल टोपी लगाकर इफ्तार की दावतें देते थे, वे अब मंदिरों के चक्कर लगाकर अपना गोत्र बता रहे हैं।

अगर सिनेमा प्रतीक है, तो अब माई नेम इज खान नहीं चलती, मणिकर्णिका या केसरी लोगों को पसंद आती है। बॉलीवुड़ की आड में जिहाद करने वाला इस्लामिक माफिया गैंग बेरोजगार होता जा रहा है। सोशल मीडिया से लेकर मेन स्ट्रीम तक अब हिंदू को गाली देने का फैशन नहीं चलता। हिंदू बोलता है, प्रतिकार करता है। इस से परेशानी है, बहुत परेशानी है, हिंदू धर्म का हर विरोधी अपने अंतर्विरोधों के बावजूद एक मंच पर है। जिहादी, मिशनरी, नक्सली, वामपंथी, कांग्रेसी, समाजवादी और इन जैसी तमाम मुस्लिम पोषक विचारधाराएं एक मंच पर हैं। लेकिन हिंदू जब अश्वमेध यज्ञ पर निकलता है, तो उसके अश्व को थामने वाला कोई नहीं होता। हिंदू जाग रहा है। अभी बहुत काम बाकी है। तेजी से बढ़ती इस्लामिक आबादी, तमाम राज्यों में बदलता जनसंख्या संतुलन, कुकरमुत्ते की तरह उगे मदरसों का नियमन, वनवासियों को मूल हिंदू जड़ों से काटने की साजिश, मिशनरी धर्मांतरण, हिंदू विरोधी व संहारक नक्सलवाद, अर्बन नक्सल, विदेशों से फंड प्राप्त हिंदू विरोधी मीडिया, जातिवाद का जहर फैलाते आस्तीन के सांप, काम बहुत है। लेकिन हिंदू जाग गया है, तो ये सब होगा। क्योंकि जन्मभूमि की लड़ाई लड़ने वाले हों या फिर अनुच्छेद 370 के खिलाफ पीढ़ियों से चला आंदोलन, किसी को आज भी सहज विश्वास नहीं होता कि ये हो चुका है। यकीन मानिए, बाकी सब भी होगा। हिंदू और उसका भारत दुनिया को नई राह दिखाने की तरफ अग्रसर है। यही पुनर्जागरण है। ■

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020
मातृभाषा से राष्ट्र उदय

डॉ. मीनाक्षी लोहनी
(प्रभारी, भुगोल विभाग)
असिस्टेंट प्रोफेसर, कु.भा. राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर (गौतमबुद्ध नगर)

दिनांक 29 जुलाई, 2020 को विश्व इतिहास की सबसे व्यापक परामर्श प्रक्रिया से अर्जित तथ्यों के विश्लेषण के उपरान्त घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति निश्चित ही भारत एवं भारतीयता के स्वप्नों एवं सांस्कृतिक सम्पदा का पूर्णतः प्रतिनिधित्व करती प्रतीत हो रही है। वैश्विक महामारी के भयानक दौर में जब सारा विश्व मानव जाति के अस्तित्व को लेकर ही चिंतित था तब भारत के विद्वान एवं मनीषी आशान्वित होकर राष्ट्र निर्माण की नीति पर चिंतन एवं मनन कर रहे थे। वैश्विक निराशा के बीच राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय जनमानस में आशाओं, अपेक्षाओं और आकांक्षाओं की एक नई शक्ति का संचार कर रही है। इस शिक्षा नीति को यदि इस सदी की शैक्षिक क्रांति कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी जिसका उद्देश्य भारतीय शिक्षा की सम्पूर्ण संरचना को और अधिक व्यापक, गतिशील और प्रासंगिक बनाना है।

यूँ तो नीति में राष्ट्र उन्नति के समस्त अपेक्षित शैक्षिक आयामों की अपनी रूपरेखा को उचित स्थान दिया गया है परन्तु शिक्षा के प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा को प्राथमिकता देना निश्चित ही राष्ट्रोत्थान के लक्ष्य की प्राप्ति के प्रति पूरे राष्ट्र को आश्वस्त करता है।

यह नीति भारतीयता के मौलिक सामाजिक दर्शन से प्रभावित है क्योंकि इसमें पांचवीं कक्षा तक मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा का माध्यम रखने की बात कही गई है, जिसे आठवीं या उससे आगे की कक्षाओं तक बढ़ाया भी जा सकता है। शैक्षिक मनोविज्ञान के मर्मज्ञ भी इस तथ्य का समर्थन करते हैं कि प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा सुलभ होने के कारण बच्चे का बौद्धिक और मानसिक विकास तुलनात्मक रूप से उत्कृष्ट होता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने बुनियादी शिक्षा (वर्धा शिक्षा योजना) के प्रस्ताव को दिनाँक 23 अक्टूबर, 1937 प्रस्तुत करते हुए भी मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने की बात कही थी। उनके अनुसार 'गाय का दूध कभी मां के दूध के समान नहीं हो सकता।' अर्थात मातृभाषा का स्थान और उसकी भूमिका का निर्वहन किसी दूसरी भाषा अथवा माध्यम के लिए सम्भव ही नहीं है।

मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने का मुख्य उद्देश्य अपने समाज और देश में संप्रेषण प्रक्रिया को सुदृढ़, व्यापक और सशक्त बनाना होता है। वस्तुतः मातृभाषा एक सामाजिक यथार्थ है जो व्यक्ति को अपने भाषायी समाज के अनेक सामाजिक संदर्भों से जोड़ती है और उसकी सामाजिक अस्मिता का निर्धारण करती है। इसी के आधार पर व्यक्ति अपने समाज और संस्कृति के साथ जुड़ा रहता है, क्योंकि वह उसकी संस्कृति और संस्कारों की संवाहक होती है। यह पालने की भाषा होती है जिससे व्यक्ति का समाजीकरण होता है। इससे प्रयोक्ता की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान और बौद्धिक विकास के साथ–साथ उसकी संवेदनाओं और अनुभूतियों की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति भी होती है और बच्चा

अपनी भाषा में धारा–प्रवाह बोलने में समर्थ और सक्षम होता है। राष्ट्रोत्थान हेतु भाषा की शक्ति और सामर्थ्य को स्वीकार कर भारत को पुनः अपनी भाषा का गौरव देने का यह नीतिगत प्रयास निःसंदेह ही सकारात्मक सोच का परिणाम है। इस नीति में भाषा को मात्र शिक्षा का माध्यम ही नहीं माना गया है बल्कि संस्कृति,संस्कार,ज्ञान परम्परा और मूल्यों का वाहक मानकर उसके प्रति विश्वास और आस्था प्रदर्शित की है। शिक्षाशास्त्री भी एकमत है कि मातृभाषा केवल अभिव्यक्ति का सुलभ माध्यम नहीं है वरन वह किसी भी राष्ट्र के स्वाभिमान,संस्कार तथा उसकी प्राचीन संस्कृति की मूल संवाहिका भी है। युगपुरुष स्वामी विवेकानंद कहा करते थे कि पराधीन की न तो कोई जाति होती है और न ही उसकी कोई अपनी भाषा होती है। उनका मानना था कि कोई भी राष्ट्र कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो वह राष्ट्र मातृभाषा के आभाव में स्वरहीन एवं संवेदनहीन हो ही जाता है। अपने शब्दों की ज्योति न हो तो कोई भी राष्ट्र नेत्रहीन प्रतीत होगा और उसका भविष्य अंधकारयुक्त होना सुनिश्चित है। हिन्दी भाषा के सशक्त हस्ताक्षर श्री भारतेंदु हरिश्चंद्र ने भी कहा था निज भाषा ही सारी उन्नतियों का मूलाधार है "निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल,बिन निज भाषा–ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।"

विश्व इतिहास का अध्ययन करें तो संज्ञान होगा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त प्रायः सभी राष्ट्रों ने अपनी स्वयं की भाषा को प्राथमिकता प्रदान की है। इजराइल ने तो लगभग विलुप्त हो चुकी हिब्रू भाषा को अपनी राष्ट्रभाषा बनाया और आज वही भाषा पूरी दुनिया में तकनीक की प्रमुख भाषाओं में शामिल है। आज हिब्रू का अनुवाद अन्य भाषाओं में लोग करने को मजबूर हो रहे हैं। रूस, चीन और जापान जैसे देश भी आदर्श उदाहरण हैं जिन्होंने निज भाषा को अपनी शिक्षा–दीक्षा तथा राजकाज की भाषा के रूप में स्वीकार किया। परन्तु भारत सदैव इसका अपवाद रहा है। औपनिवेशिक दासता से मुक्ति के बाद एक प्राचीन राष्ट्र होते हुए भी अंग्रेजी यहां राजकाज एवं संपर्क की भाषा बनी हुई है। अन्य भारतीय भाषाएं अंग्रेजी की चेरी के रूप में उसकी गुलामी करती हुई दिखाई देती हैं। शिक्षा की दशा एवं दिशा सुधारने के लिए अब तक गठित लगभग सभी आयोगों ने अंग्रेजी के वर्चस्व को समाप्त करने की संस्तुति की,किंतु वास्तविकता आदर्शों से कोसों दूर रही।

शिक्षा की व्यवस्था हो या व्यवस्था की शिक्षा,दोनों की स्थिति में भाषा की महत्ता सर्वविदित और सर्वस्वीकार्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमें भारत की गौरवमयी ज्ञान–विज्ञान की परंपरा का स्मरण कराते हुए ये बोध करा रही है कि भारतीय भाषाएँ ही भारत की सामाजिक एवं सांस्कृतिक अस्मिता की पहचान हैं। उक्त के अतिरिक्त भारतीय भाषाओं के विकास के सन्दर्भ में इस नीति की संकल्पना सरल स्वरूप में निम्न प्रकार समझी जा सकती है –

1. छात्रों को भाषा,कला,संगीत और संस्कृति के प्रति संवेदनशील बनाया जाएगा।

2. बहुभाषिता के विस्तार के लिए त्रिभाषा सूत्र को अधिक व्यापकता के साथ लागू किया जाएगा।

3. विभिन्न भारतीय भाषाओं में उच्चतर गुणवत्ता वाली अधिगम सामाग्री विकसित करने को प्रोत्साहन तथा अनुवाद को बढ़ावा देने के लिए इंस्टिट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन की स्थापना की जाएगी।

4. अतुल्य भारत की अवधारणा को साकार करने के लिए उसकी सांस्कृतिक सम्पदा एवं विरासत का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार उसकी स्थानीय भाषाओं के उन्नयन के द्वारा किया जाएगा।

5. एक भारत श्रेष्ठ भारत के लक्ष्य के साथ संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित 22 भारतीय भाषाओं की प्रासंगिकता एवं जीवंतता बनाये रखने के साथ साथ गत 50 वर्षों में विलुप्त हो चुकी 220 भारतीय भाषाओं (विशेषकर जिनकी लिपि नहीं थी) के पुनरुत्थान हेतु सतत एवं सार्थक प्रयास किये जायेंगे।

6. स्थानीय भारतीय भाषाओं के साहित्य,शब्द भण्डार, व्याकरण एवं शिक्षण विधि में सुधार हेतु कुशल शिक्षक आवश्यक है जिसके लिए शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में भी अपेक्षित परिवर्तन किए जाएंगे (चार वर्षीय बी.एड.)।

7. संस्कृत भाषा को संस्कृत पाठशालाओं की सीमा से मुक्त कर उसे शिक्षा की मुख्य धारा में सम्मिलित किया जाएगा ताकि राष्ट्र पुनः विश्वगुरु के पद पर आसीन हो सके।

अंत में कहा जा सकता है कि भारत को एक सशक्त ज्ञान आधारित राष्ट्र बनाने तथा इसे वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में यह नीति एक ऐतिहासिक एवं क्रांतिकारी कदम साबित होगी। ■

मीडिया के क्षेत्र में भारत उदय

दीपिका मनोहर
स्वतंत्र पत्रकार

जब हम एक भारत–श्रेष्ठ भारत की बात करते हैं तो ग्राम उदय, शिक्षा, चिकित्सा, आयुर्वेद, तकनीकी, कृषि जैसे क्षेत्र के योगदान की बात होती है। इन सभी में सबसे अधिक महत्ता मीडिया क्षेत्र की है, जिसे लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ भी कहा जाता है। मीडिया की भूमिका के बिना भारत उदय असम्भव दिखाई पड़ता है।

जब–जब भी राष्ट्र पर संकट आया, मीडिया ने अपने कर्तव्य का निर्वाह किया है। चाहे स्वतन्त्रता के समय में योगदान की बात हो, आपातकाल का समय हो या कोरोना काल। हर समय जान हथेली पर लेकर निडर, निर्भीक मीडियाकर्मी राष्ट्र की सेवा में जुटे रहे। जब सभी मीडिया के पतन की बात करते हैं, तो सच है कि मीडिया में पुनर्जागरण हो रहा है। समाचार रिपोर्टिंग एक बड़े बदलाव से गुजर रही है और विकासात्मक, सकारात्मक एवं जन–केन्द्रित समाचार अधिक आ रहे हैं।

अभी कोरोना वायरस के कारण संकट का समय है, मीडिया के सभी प्रकार के प्लेटफॉर्म ने सराहनीय काम किया है। अधिक से अधिक जानकारी देकर घर में बन्द लोगों को राहत पहुंचाई है। सरकार और स्वास्थ विभाग ने जो–जो भी निर्देश दिए, मीडिया के माध्यम से लोगों तक पहुंचे। जिसका व्यापक असर भी देखने को मिला। लॉकडाउन के समय लोग परेशान न हों, उन्हें कैसे और कहाँ–कहाँ से सहायता मिल सकती है? मीडिया ने सभी तक न मात्र हेल्पलाइन नम्बर पहुँचाए अपितु स्वयं भी कोरोना वॉरियर की तरह काम करते दिखाई दिए। वहीं कोरोना काल में डिजिटल मीडिया ने क्रान्ति ला दी। घरों में बैठे लोगों को मोबाइल फोन पर प्रत्येक समाचार मिलता रहा। डिजिटल मीडिया का उपयोग आम आदमी ने भी संवाददाता की भाँति किया और अपने अनुभव शेयर कर लोगों में जागरुकता जगाई। न्यूज चैनल के साथ समाचार पत्र भी डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उतर आए।

मीडिया में "अच्छी खबरें", "खुश खबर" समेत कई टैग लाइन के साथ ऐसे समाचारों को प्राथमिकता दी जाती है, जो जनता का उत्साहवर्धन करती है उन्हें नई दिशा देती हैं। कुछ वर्ष पहले की मीडिया की तुलना करें तो जहाँ पहले चटपटे–मसालेदार समाचार और घटना को तोड़–मरोड़कर पेश करना, दंगे भड़काने वाले समाचार प्रकाशित करना, घटनाओं एवं कथनों को द्विअर्थी रूप प्रदान करना, भय या लालच में सत्तारूढ़ दल की चापलूसी करना, अनावश्यक रूप से किसी की प्रशंसा, महिमामंडन करना और किसी दूसरे की आलोचना करना शामिल था। कृषि, विज्ञान, ग्रामीण क्षेत्र से जुड़े समाचारों को स्थान नहीं मिल पाता था वहीं अब किस स्थान पर किस किस्म की फसल हो रही है, इस पर भी चर्चा होती है।

परन्तु अभी भी कुछ हद तक बाजारीकरण हावी है। कुछ टीवी डिबेट सुनकर ऐसा महसूस होता है कि विचार, मन्थन का अकाल पड़ गया है। ऐसे कार्यक्रम संवाद कम, वॉकयुद्ध अधिक लगते हैं। इनसे शायद ही कोई अर्थ या हल निकलता है। डिबेट में जो एंकर जितनी लड़ाई, चीख–चिल्लाई, गाली–गलौच हो उसे ले उतना ही अच्छा मान लिया जाता है। वहीं डिजिटल मीडिया के भी कई नकारात्मक पक्ष देखने को मिल रहे हैं। झूठे और भ्रामक समाचार हावी है जो समाज को भटकाने का काम कर रहे हैं।

कुछ मीडियाकर्मियों की दृष्टि में समाचार का मतलब मन्थन या प्रकाश देना नहीं, लड़ाना भर रह गया है। समाचार नहीं, मसाला परोसना रह गया है।

ऐसे में मीडिया क्षेत्र से जुड़े लोगों को मन्थन की आवश्यकता है। दिशाहीन होकर पत्रकारिता मात्र पैसे कमाने का माध्यम भर न रह जाए, अपितु अपना प्रमुख काम समाज को दिशा और सरकार को आइना दिखाना बनाए रखें। समाज का भरोसा मीडिया पर बना रहे, इस दिशा में काम करने की बहुत आवश्यकता है। समय आ गया है जब मीडिया से जुड़े लोगों को "स्वनियन्त्रण" की आवश्यकता है। अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता क्या दूसरों के अधिकार का हरण करने का लाइसेंस है? इस पर विचार करने की आवश्यकता है। मीडिया में बैठे लोगों को विचार करना होगा कि क्या वे राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह सही ढंग से कर रहे हैं? क्या जो दिखा या बता रहे हैं, वह दर्शकों के लिए आवश्यक है? समाज की उन्नति में सहायक है?

कर्तव्यमेव कर्तव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि।
अकर्तव्यं न कर्तव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि॥

– महासुभषित संग्रह(8857)

अर्थात् जो भी हमारा कर्तव्य है उसका पालन हमें मृत्यु संकट आ जाने पर भी करना चाहिए और जो निषिद्ध कार्य हैं उन्हें मृत्यु संकट होने पर भी नहीं करना चाहिये।

मीडिया महाबली हनुमान की भाँति है, जो अपनी शक्तियाँ भूल गई है और मार्ग से भटक सी गई है। मीडिया को अपनी शक्तियों के साथ अपने कर्तव्यों को भी याद रखने की आवश्यकता है, ताकि वह भारत उदय में विशिष्ट योगदान दे सके और भारत फिर से विश्वगुरु कहलाए। ■

नये भारत की बेजोड़ नारियां

अनीता चौधरी
पत्रकार

नारी की शक्ति और महत्वता को इस तरह से भी समझा जा सकता है कि जब बात सृष्टि में मानव की जरूरत महसूस हुई तो भगवान् ने भी धरती पर मानव को जोड़े में ही भेजा। क्योंकि स्त्री, पुरुष की पूरक है और समाज की ताकत है। अब नारी हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही है। बाहरी दुनिया में अगर वो एक सख्त शख्शियत के रूप में चुनौतियों को रौंदती हुयी दिखती है तो वही नारी घर की चारदीवारी के अंदर कोमल स्वरुप में अपने दायित्व को निभाने और ममता को लुटाने में भी कोई कसर नहीं छोड़ती। आज की नारी साध्वी से लेकर शूटर तक, संस्कार और संस्कृति से लेकर सेना तक हर क्षेत्र में मोर्चा संभल कर समाज को अपने दमखम का अहसास दिला रही है। ये लेख समर्पित है आधुनिक नये भारत की बेजोड़ नारियों को। सूची भले लम्बी है और हर नाम को छू पाना मुश्किल है मगर चंद नामों पर ही सही चर्चा जरूरी है –

साध्वी ऋतम्भरा – वैसे तो भारतीय समाज में स्त्री की सफलता की परिभाषाएं सबने अपने अपने तरीके से तय कर रखें है। इन परिभाषाओं में अगर देखें तो संन्यासिनी शायद ही कहीं समाहित होती नजर आती हो, लेकिन जब बात साध्वी ऋतंभरा जैसी संन्यासिनी की हो रही है तो ये संन्यासिनी नारी शब्द की पूरी परिचायक नजर आती है। 16 साल की उम्र में सांसारिक सुखों को त्याग कर सन्यासिनी बन गयीं। सनातन धर्म की शिक्षा–दीक्षा ली और फिर ये सनातनी साध्वी ने सिर्फ भारत

में ही नहीं बल्कि विश्व भर में हिन्दू धर्म के प्रचार–प्रसार का बेडा उठा लिया। बात जब धर्म और देश के तरफ दायित्व निभाने की आयी तो इस साध्वी ने अपने आप को झोंक दिया, प्राणों की बाजी लगा दी। अपने जोशीले भाषणों से सनातनियों की भुजाओं में ऐसी तरंगे भरी की राम मंदिर निर्माण को लेकर धर्म की स्थापना की इस लड़ाई में पूरा देश एकजुट नजर आया। नब्बे के दसक में राम मंदिर की लड़ाई में बाकि सभी संगठनों के साथ साथ दुर्गा वाहिनी की भी अहम् भूमिका रही और दुर्गा वाहिनी की दुर्गा रुपी साध्वी ऋतम्भरा ने जब हिंदुत्व की हुंकार भरी तो सनातनी एकजुटता का सैलाब देखा गया। आज भी साध्वी के बुलंद भाषणों की आवाज चारों दिशाओं में गूंज रही हैं।

"गर्व से बोलो हम हिन्दू हैं, हिन्दुस्तान हमारा है"
"महाकाल बन कर के हम दुश्मन से टकराएंगे"
"काशी मथुरा वृन्दावन ने एकसाथ हुंकारा है"
"कहो गर्व से हम हिन्दू हैं, हिंदुस्तान हमारा है"

इस नारे की गूंज भारत की हवाओं में अभी भी बरकरार है, राम मंदिर निर्माण को लेकर धर्म की जीत हुयी है। राम मंदिर की लड़ाई को लेकर उस वक्त आलम ये था कि साध्वी ऋतम्भरा के ओजस्वी भाषण से राज्य सरकार और केंद्र सरकार इस तरह घबरा गयी थी कि वो मंचों पर नहीं पहुँचे इसके लिए नाकेबंदी शुरू हो गयी थी। मगर साध्वी ऋतम्भरा कहाँ रुकने वाली थीं, भेष बदल कर पैदल चल कर, सडकों और रेलवे स्टेशन पर रात्रि व्यतीत कर वो राम मंदिर निर्माण के लिए बार बार हिन्दू हृदय में अलख जगाती रहीं। इस लड़ाई में इनके साथ और भी महिला नेत्रियां थीं। लगभग सबने राजनीति का रास्ता अपनाया, मगर उस वक्त हिन्दुओं के लिए फायरब्रांड नेता साध्वी ऋतम्भरा जिसके लिए राजनीति के सारे द्वार खुले हुए थे सेवा का रास्ता अपनाया। परिवार से ठुकराए बच्चों और महिलाओं के लिए अलग, अनूठा परिवार बनाया। उनको प्यार के धागे में पिरोया और 'वात्सल्य ग्राम' की स्थापना की।

फायरब्रांड दुर्गा वाहिनी की साध्वी आज सबकी दीदी माँ है, वात्सल्य ग्राम में उनके सहज प्यार के दरवाजे हर जरूरतमंद के लिए खुले हैं। वृन्दावन के वात्सल्य ग्राम में हर ठुकराए के लिए अपना घर परिवार है। भले ही खून का रिश्ता नहीं हो मगर यहाँ तीन पीढ़ियां, बेटी, माँ और नानी आपस में मिलकर परिवार बना लेते हैं। बालकों को मां और मौसियां मिल जाती हैं और समाज से ठुकराई माँ को अपनी ममता लुटाने के लिए बच्चे और मजे की बात ये है कि इस परिवार को कहानी सुनाने के लिए वो नानी भी है, जिन बुजुर्गों को उनके बच्चों ने ठुकरा दिया था। वात्सल्य ग्राम हर अनूठे परिवार में 6 से 8 बच्चे होते हैं, मॉ और मौसियां होती है और वात्सल्य को और निखारने के लिए नानी भी होती। सभी एक छत के नीचे होते हैं और इन सब पर छत्रछाया होती है, दीदी मां यानि साध्वी ऋतम्भरा की।

पदमश्री डा. बसंती बिष्ट – विलुप्त होती परम्पराओं को जिन्दा रखने के लिए रूढ़िवादी समाज से इतर, विपरीत हवाओं के बावजूद दृढ़ता से डटे रहना और खोयी हुयी सनातनी संस्कार को जन जन तक पहुँचना, अपने खुद के व्यक्तित्व को एक नए आयाम तक ले जाने का काम किया उत्तराखंड, चमोली की पहली महिला जागर गायिका पद्मश्री बसंती बिष्ट ने।

उत्तराखंड में अनेक मौकों पर देवी–देवताओं की स्तुतियां जागर के जरिए गांई जाती है। इस विलुप्त होती परंपरा को जागर गायिका बसंती बिष्ट ने न सिर्फ आगे बढ़ाया, बल्कि उन्होंने पूरे भारत को जागर का महत्व भी बताया। जागर गायन उत्तराखंड में पहले सिर्फ वहां के मर्दों के अधिकार क्षेत्र में था। इस गायन शैली में नंदा देवी की स्तुति और अन्य देवी देवताओं का गुणगान एक अलग ही अंदाज में किया जाता है। लेकिन इस गायन शैली को कुछ विशेष वर्ग के पुरुष ही गाते थे। बसंती बिष्ट बचपन से अपनी मां को जागर गुनगुनाते हुए सुनती थी। लेकिन ये गुनगुना घर की चारदीवारी के अंदर तक ही था, महिलाओं को जागर गाने की इजाजत नहीं थी। बसंती

बिष्ट ने जागर के बोल अपनी मां से ही सीख, गाने की तमन्ना तो बहुत थी मगर समाज की इजाजत नहीं थी। उस जमाने के लिहाज से बसंती बिष्ट जी की 15–16 साल की आयु में शादी हो गयी। ससुराल के कामों में ऐसे उलझी की फुर्सत के दो पल मुश्किल हो गए। लेकिन जागर गाने के शौक को जंगलों में जब लकड़ी के लिए जाती तो चिड़ियों, पंक्षियों और पपीहे को सुना कर जरूर पूरा करती थीं। पति फौज में काम करते थे। उनके साथ कुछ सालों के लिए वो पंजाब रहने गयीं। उनके पति उनकी मनः स्थिति को भी समझ रहे थे और उनके अंदर के कलाकार को परख भी रहे थे। उन्होंने उनको प्रोत्साहित किया और बसंती बिष्ट को शास्त्रीय गायन की शिक्षा दिलवाई।

बसंती जी ने जागर को शास्त्रीय संगीत के अनुशासन में पिरोया। पति ने उन्हें प्रोत्साहित भले किया लेकिन समाज इतनी जल्दी बदलाव के लिए तैयार नहीं था। विधिवत रूप से संगीत की शिक्षा के बाद वो हारमोनियम पर जागर गाती थी और पति रणजीत, हुड़का (पारंपरिक वाद्य यंत्र) बजाते। वो अब अपने गाँव में रहने लगी थीं। 1996 में बसंती बिष्ट ल्वाणी गावं की प्रधान बनी। लेकिन उनका मन तो लोक संगीत में रमता था। महज एक साल में ही प्रधान पद से इस्तीफा दे दिया और वर्ष 1997 में देहरादून में आ कर बस गई। जिसके बाद बसंती ने पहाड़ की ईष्ट माने जाने वाली नंदा देवी के साथ अन्य देवी देवताओं के जागर कई मंचों पर गाये। यही नहीं बसंती ने गढ़वाल और कुमाऊँ के ग्रामीण इलाकों में गाए जाने वाले मांगलगीत, देव जागर, घटियाली, चौंफुला आदि के संरक्षण के लिए पहाड़ के कलाकारों और जागर गायकों को सूचीबद्ध करने का काम भी शुरू किया। 45 वर्ष की आयु में उनका मंच पर पहला जागर कार्यक्रम था। पहली बार उन्होंने गढ़वाल सभा के मंच पर देहरादून के परेड ग्राउंड में जागर की एकल प्रस्तुति दी थी। अपनी मखमली आवाज में जैसे ही उन्होंने मां नंदा का आह्वान किया पूरा मैदान तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा था।

उत्तराखंड की पारंपरिक लोक संस्कृति को संजोने के लिए इन्हे भारत सरकार ने 26 जनवरी 2017 को पद्मश्री से विभूषित किया। यही नहीं जागर को दुनियाभर में पहचान दिलाने वाली बसंती बिष्ट के नाम पहली प्रोफेशनल महिला जागर गायिका होने का भी रिकॉर्ड है। बसंती बिष्ट को 2017 में ही मध्यप्रदेश सरकार ने रानी अहिल्याबाई अवार्ड भी दिया था। बसंती बिष्ट पहाड़ की इन बहुमूल्य परम्पराओं को अब आने वाली पीढ़ियों के लिए संजो के रखना चाहती हैं। जागर और मांगल की परम्पराओं को बसंती बिष्ट ने अपनी किताब 'नंदा के जागर– सुफल ह्वे जाया तुम्हारी

जात्रा' में संजोया है।

शूटर दादी चंद्रो और प्रकाशी तोमर – आज की सशक्त बेमिसाल नारी की जीती जागती उदहारण है उत्तर प्रदेश की शूटर दादी जिन्होंने उम्र को धत्ता देते हुए, रूढ़िवादी पितृ प्रधान समाज की बंदिशों को ताख पर रख कर 60 की उम्र में 16 साल वाला जज्बा दिखाया और फिर जीत का ऐसा सिलसिला कायम किया कि शूटर दादी के आगे अच्छे–अच्छे निशानेबाज फेल हो गए, नौजवान भी धूल चाटते नजर आये।

उत्तर प्रदेश के बागपत के जोहड़ी गांव में आज बेटियां बंदूक की आवाज से घबराती नहीं हैं। बल्कि अपनी दोनों शूटर दादियों की निगरानी में राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर पदक लाने के लिए निशाना सटीक लगाती हैं। अब ये 80 साल की शूटर दादियां हैं नाम है चंद्रो और प्रकाशी तोमर। खास बात यह कि दोनों देवरानी, जेठानी हैं और दोनों ही नेशनल शूटर रह चुकी हैं। बड़ी शूटर दादी चंद्रो तोमर ने 60 साल की उम्र में जब पहली बार निशाना लगाया तो वो अचूक था। दादी भी हैरत में और शूटिंग के दौरान मौजूद बाकी लोग भी। आंखें सभी की यों हीं फटी रह गई। लोग सोच रहे थे कि आखिर क्यों घाघरा–कुर्ता पहन, लुगड़ी ओढे दादी का हाथ जरा भी नहीं कांपा। दरअसर वर्ष 1999 में जब इनकी पोती ने शूटिंग सीखने की इच्छा जताई, मगर बन्दूक हाथ में लेते ही डर गयी। दादी उसके साथ हौसला बढ़ाने को पहुंच गई शूटिंग रेंज। जब पोती का हाथ कांपने लगा तो दादी ने उसे सिखाने के लिए गन छीनी और सीधा निशाना साध दिया। फिर क्या था, दादी शूटर दादी बन गई। पोती के कोच ने दादी को निशानेबाजी की शिक्षा देने की बात कही तो दादी शरमा गयी। लेकिन अंदर से जज्बात हिलोरें मार रहीं थी। दादी निशानेबाज बनने को तैयार हो गई। जिस गांव की महिलाओं ने चूल्हा–चौका से आगे का जहां नहीं देखा था, गोबर से लिपती दीवारों से बाहर जा कर कभी झांका ही नहीं, उसी रूढ़िवादी गाँव की 60 साल की बूढ़ी दादी, चेहरों की झुर्रियों लिए अपने ठोस हाथों के साथ निशाना सीखने निकल पड़ी। आप सोच ही सकते हैं कि क्या कोहराम मचा होगा गांव से लेकर घर तक में। छह बेटे, सभी शर्मिंदा हो रहे थे कि मां ने ये कैसा फैसला लिया। अभी चंद्रो के बगावती तेवर संभले नहीं थे कि एक और 60 साल की बुढ़िया छोटी दादी प्रकाशी तोमर भी अपनी जेठानी की राह हो ली। उन्होंने भी अपने हाथों की ओर देखा, जिसकी हथेलियां मोटी पड़ गई थीं, लेकिन आज तक कुछ ऐसा न किया था कि जग में नाम हो। उन्होंने छठे दिन ही जेठानी से कहा– मैं भी बंदूक चलाउंगी, तेरे साथ जाउंगी। बस यहीं से चंद्रो और प्रकाशी का शूटिंग कॅरियर शुरू हो गया। दोनों के नाम अब तक 25 से ज्यादा राज्य और राष्ट्रीय मेडल हैं। प्रकाशी तोमर वृद्ध निशानेबाजी प्रतियोगिता (वेटेरन शूटिंग चौंपियनशिप) में स्वर्ण पदक जीत चुकी हैं। जबकि जेठानी चंद्रो की चर्चा आज भी यूं होती है कि दिल्ली में आयोजित एक शूटिंग प्रतियोगिता में भाग लेने ये पहुंची तो उनका मुकाबला दिल्ली के डीआईजी से हुआ। किसी को यकीन नहीं था कि वो डीआईजी का हरा देंगी। कहते हैं एक बूढ़ी महिला से मुकाबला हार डीआईजी साहब वहां से चुपचाप निकल लिए थे। जिन दोनों दादीयों को समाज के साथ परिवार के भी ताने सहने पड़े, 60 की उम्र में सठियाने के तमगे मिले, वो आज 80 से ज्यादा की उम्र में भी मील का पत्थर बनी हुई हैं। पूरे बागपत जिले की बेटियां निशानेबाजी का हुनर शूटर दादीयों से ही सीखती हैं। कल तक जो उनको ताने मारते थे, शूटर दादीयां आज उनके बच्चों को निशानेबाजी की कला सीखा रहीं हैं। ■

लोकलालित्य के लुप्तप्राय अध्याय

हरि प्रसाद सिंह
लोककला उन्नयन हेतु अकादमी पुरस्कार से सम्मानित

'लोक' शब्द असीमित तथा अति व्यापक भाव के साथ सृष्टि के प्रारम्भ से वर्तमान को जोड़ता है। सम्पूर्ण विश्व का विभाजन भी चौदह लोकों के रूप में माना जाता है। लोक के योग से लोकाचार, लोकचरित्र, लोककर्म, लोकतंत्र, लोकरंजन, लोक संस्कृति, लोककला, लोकगीत एवं लोकनृत्य आदि शब्द,हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण की क्रियाशीलता एवं व्यवहार के परिचायक बने।

लोकसंस्कृति के अन्तर्गत क्षेत्र विशेष में व्यापक जीवन शैली, कार्यव्यवहार के सत्य जीवन की विविधताओं को, गीत संगीत एवं कला के माध्यम से व्यक्त करना विभिन्न कलात्मक माध्यमों से समाज और प्रकृति के बीच संबंध और समन्वय स्थापित करना 'लोकसंगीत और लोककलाओं का मूल आधार सिद्ध हुआ है। इस आधार पर भोजपुरी क्षेत्र लोकसंस्कृति, लोकसंगीत, लोककलाओं की साहित्यक, सांस्कृतिक व कला सम्पदा से परिपूर्ण है। भोजपुरी लोकसंगीत, लोककलाओं, लोकगीतों, लोकनृत्यों व लोकशिल्पों में सामाजिक समरसता, मानवीय मूल्यों, परस्पर संबंधों की प्रगाढ़ता, जीवन के विविध संघर्षों में संबलदाता तथा संवेदना संरक्षण के तत्व प्रचुरता से मिलते हैं। नाचते–गाते अपने कष्टों को भूलकर, उत्साहित व प्रफुल्लित होकर, नित नूतन ऊर्जा के साथ जीवन की धारा में चल निकलने की प्रेरणा देते हैं– भोजपुरी लोकसंगीत, लोकनृत्य और लोककलाएं व शिल्प।

जीवन के प्रत्येक क्षण, प्रत्येक कार्य व्यवहार में लोकगीतों, नृत्यों व शिल्पों का समावेश है। भोजपुरी क्षेत्र के लोगों की विश्व के कोने–कोने में 'आजीविका यात्रा' के साथ 'सात समुंदर पार' गूंज रहे हैं। भोजपुरी के लोकगीत आज भी भोजपुरी लोकसंगीत से ओत–प्रोत जीवन शैली मारीशस, ट्रीनीडाड व टुबैगो, सूरीनाम, गुयाना, फीजी, हालैंड, थाइलैंड व नेपाल में मिलती है।

भोजपुरी क्षेत्र का लोकगायन, जीवन के प्रत्येक अंगों से समाज के प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक कार्य व प्रत्येक गतिविधि से संबंधित है। लोकगीतों का वर्गीकरण प्रायः ऋतुगीतों, श्रम गीतों, पर्वगीतों व संस्कार गीतों के रूप में किया जा सकता है।

ऋतुगीतों में सावनी, कजरी, बारहमासा, चौता–घाटो, फगुआ, फाग या होरी प्रमुख है। कर्मगीतों या श्रमगीतों में रोपनी, सोहनी के गीत, नकटा जंतसार,गोदना के गीत हैं। पर्वगीतों में पीड़िया, देवीगीत, बहुरागीत, शिवपूजा, नागपंचमी, गोधन तथा छठ्माता के गीत महत्वपूर्ण है।

संस्कार गीतों की अत्यन्त समृद्ध परंपरा 'भोजपुरी लोकसंस्कृति' में है। संतान की इच्छा, प्रभु से याचना, गर्भधारण, संतानोत्पति, सोहर, खेलवना, छट्ठी–बरही, निकासन, नामकरण, मुंडन, जनेऊ, तिलक, सुहाग, सगुन–उठाई,मानर पूजाई, मटकोड़वा, हरदी, चुमावन, संझापराती, परिछावन, लावा भुजाई, इमली घोटावन, नहछू–नहान, कन्या निरीक्षण तागपात, गारी, विवाह, कोहबर, कलेवा, भात खवाई आदि से संबंधित लोकगीतों का जीवन से अटूट बंधन है। ये लोकगीत विविध शब्द चित्रण के पर्याय है जो विभिन्न दशाओं, भावों, परिस्थितियों का दृश्य उपस्थित करने में समर्थ हैं। इसके अलावा पूरबी, निर्गुण, दादरा, खेमटा, लोरिकाइन आदि लोकगीत भोजपुरी क्षेत्र की समृद्ध कला सागर के मोती हैं।इसी तरह भोजपुरी क्षेत्र के लोकनृत्य सामान्यतः जाति विशेष के श्रम व जीवन पद्धति पर आधारित हैं। इसीलिए इन नृत्यों का नाम भी जातिगत आधार पर धोबिया (धोबियउया) गोंडऊ या कंहरउवा, चमरउवा या इन्द्रासनी, फरुआहीया जंघियां नाचि, पंवरिया, मुसहरी, नेटुआ, डोमचक आदि पड़ गया। इन लोकनृत्यों की प्रमुख विशेषता यह भी है कि इन नृत्यों का संगीत, ताल, लय, गायन व नृत्यशैली, उस जाति विशेष के दैनिक श्रम–साध्य कार्यों या व्यवसाय की प्रवृति से पूर्णतया ओत–प्रोत है। भोजपुरी क्षेत्र में प्रमुख लोकवाद्य भी जीवनशैली से सम्बद्ध हैं। इनमें कुछ को मंगल वाद्य भी कहा जा सकता है जो मांगलिक अवसरों या धार्मिक अवसरों पर बजाए जाते हैं–जैसे–शंख, सिंहा, नगाड़ा, मृदंग, पखावज, झाल, मजीरा आदि। इनके अलावा ढोलक, खजड़ी, हुड़का, करताल, इकतारा, सारंगी, चंग, ढपला, आदि प्रचलित हैं किन्तु अब लुप्तप्राय हैं।

अन्य प्रांतों, क्षेत्रों की लोककलाएं पुष्पित पल्लवित होती रहीं, किंतु भोजपुरी लोककलाओं तथा लोककलाकारों को अश्लीलता, पिछड़ेपन, गंवारुपन की संज्ञा देकर उपेक्षित कर दिया गया। स्वाधीन भारत में शासन स्तर पर अन्य क्षेत्रों की लोककलाओं को पर्यटन के साथ जोड़कर प्रोत्साहन व विकास हेतु विधिवत योजनाएं बनीं, कार्य शुरु हुआ, लेकिन भोजपुरी लोककलाओं हेतु कोई ठोस प्रयास नहीं हुआ। भोजपुरी क्षेत्र में अत्यन्त आकर्षक सतरंगी लोकनृत्य हैं, लोकवाद्य हैं किन्तु आज शनैः–शनैः ये लुप्त होने को है। आज की पीढ़ी के युवा, इन नृत्यों को अपनाने के लिए आगे नहीं आ रहे हैं। शायद इन लोकनृत्यों का जातिगत स्वरूप होना भी एक कारण हो सकता है।

इन लोक कलाकारों को आजीविका के लिए अन्यान्य काम धंधों पर निर्भर होना पड़ता है इसीलिए भी उन्हें इनको बचा पाने में कठिनाई हो रही है। सर्वाधिक चिंता का विषय यह भी है कि इन जातियों के भी आज युवा इन नृत्यों को अपनाने की जगह रोजी–रोटी के चक्कर में दूसरे कार्यों को ही महत्व दे रहे है। उचित प्रोत्साहन, पुरस्कार एवं नियमित आयोजनों, विशेषकर पर्यटन विभाग के साथ मिलकर राजस्थान की तर्ज पर, सैलानियों के आगमन के समय तथा विभिन्न सामाजिक शासकीय समारोहों में इन लोक कलाओं को जोड़ना या सक्रिय करना भी एक श्रेष्ठ प्रयास हो सकता है। प्रसन्नता इस बात की है कि भारत सरकार इस दिशा में प्रयास कर रही है और उ.प्र. सरकार भी, योगी जी, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश के निर्देशन में इस कार्य के प्रति संवेदनशील व प्रयत्नशील है। ■

'कैच द रेन' जल संरक्षण का उदीप्तिमान मंत्र

डॉ. रमाशंकर 'विद्यार्थी'
प्रधान संपादक, द एशियन थिंकर जर्नल
एवं सहायक आचार्य, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट

संसार के प्रत्येक जीव का जीवन आधार जल ही है। मानव अपनी सुविधा, दिखावा व विलासिता के दिखावेपन में अमूल्य जल की बर्बादी करने से नहीं चूकता है। पानी का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए हम पानी की बचत के बारे में जरा भी नहीं सोचते हैं। परिणामस्वरूप अधिकांश स्थानों पर जल संकट की भयावह स्थिति पैदा हो चुकी है। जल संरक्षण के लिए यदि हम अपनी आदतों में मामूली बदलाव कर लें तो पानी की बर्बादी को काफी हद तक रोका जा सकता है। बस आवश्यकता है दृढ़संकल्प करने की तथा उस पर गंभीरता से अमल करने की, क्योंकि 'बिन पानी सब सून' यानि जल है तभी हमारा भविष्य है।

पानी की बचत करना भी तो जल संरक्षण का ही एक रूप है। एक अध्ययन से पता चला है कि मनुष्य यदि अपनी कुछ अतिरेक आदतों को बदल ले तो 80 प्रतिशत से भी अधिक पानी की बचत हो सकती है। यदि मानव कुछ ही आदत बदल लें तो भी 15 प्रतिशत तक की जल की बचत हो सकती है। बूँद–बूँद की बचत से भी बड़ी बचत हो सकती है। जल संरक्षण के निहतार्थ भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व जल दिवस पर 'जल शक्ति अभियानः कैच द रेन' की शुरुआत कर जल संरक्षण को अनिवार्य आवश्यकता माना है। भारत की आत्मनिर्भरता हमारे जल संसाधनों तथा जल कनेक्टिविटी पर निर्भर है और जल के प्रभावी संरक्षण के बिना भारत का तीव्र गति से विकास संभव नहीं है।

प्रधानमंत्री ने पानी की महत्ता को उल्लेखित करते हुये कहा कि देश में अधिकतर वर्षा का जल बर्बाद हो जाता है। बारिश का पानी जितना बचाएंगे, भूजल पर निर्भरता उतनी ही कम हो जाएगी। हमारे पूर्वज हमारे लिये पानी छोड़कर गए। हम उसे अनावश्यक बर्बाद करने पर तुले हुये हैं। जबकि हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिये इसका संरक्षण करें।

जल संरक्षण को प्रमुखता देते हुये प्रधानमंत्री ने जल शक्ति मंत्रालय के राष्ट्रीय जल शक्ति मिशन के तहत वर्षा जल को संचयित करने के लिए 'कैच द रेन' अभियान की शुरुआत की। इस अभियान के तहत लोगों की सक्रिय भागीदारी के साथ जल

संचयन गढ़ढ़े, छत पर वर्षा जल संचय और चेक डैम बनाने, टैंकों की भंडारण क्षमता को बढ़ाने के लिए गाद हटाना, जलग्रहण क्षेत्रों से पानी लाने वाले जल–प्रवाहों में अवरोधों को हटाना, पारंपरिक जल संचयन संरचनाओं जैसे कि, छोटे कुएँ और गहरे बड़े कुओं की मरम्मत करना, जिले में रेन सेंटर खोलने का अनुरोध, जो सभी के लिये एक तकनीकी मार्गदर्शन केंद्र के रूप में कार्य करे।

'कैच द रेन' अभियान की सफलता के लिए जल शक्ति मंत्रालय ने नेहरू युवा केंद्र संगठन, युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के सहयोग से जागरूकता अभियान की शुरुआत की है। इस अभियान की पंच लाइन है– 'बारिश के पानी का संरक्षण, जहाँ भी संभव हो, जैसे भी संभव हो'।

'कैच द रेन' अभियान का उद्देश्य सभी स्थितियों के आधार पर जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल बारिश के पानी को संग्रहीत करने के लिये वर्षा जल संचयन संरचना का निर्माण करना तथा अभियान के कार्यान्वयन के लिये प्रभावी प्रचार और सूचना, शिक्षा, संचार गतिविधियों के माध्यम से जमीनी स्तर पर लोगों को शामिल कर प्रोत्साहित करना है।

भारत सरकार द्वारा जल संरक्षण हेतु कई अन्य योजनाएँ भी संचालित हैं जिनमें महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, इसका उद्देश्य भूजल संचयन में सुधार, जल संरक्षण और भंडारण तंत्र का निर्माण करना है। जल क्रांति अभियान, यह अभियान ब्लॉक स्तरीय जल संरक्षण योजनाओं के माध्यम से गाँवों और शहरों में क्रांति लाने के लिये किया गया एक सक्रिय प्रयास है। उदाहरण के लिये इसके तहत शुरू की गई जल ग्राम योजना का उद्देश्य जल संरक्षण और परिरक्षण हेतु जल की कमी वाले क्षेत्रों में दो मॉडल गाँवों को विकसित करना है। राष्ट्रीय जल मिशन, इस मिशन का उद्देश्य एकीकृत जल संसाधन विकास और प्रबंधन के माध्यम से जल का संरक्षण करना, अपव्यय को कम करना और राज्यों के बाहर तथा भीतर जल का अधिक समान वितरण सुनिश्चित करना है। नीति आयोग का समग्र जल प्रबंधन सूचकांक, इसका उद्देश्य जल के प्रभावी उपयोग के लक्ष्य को प्राप्त करना है। जल शक्ति मंत्रालय तथा जल जीवन मिशन, जल शक्ति मंत्रालय का गठन जल के मुद्दों से समग्र रूप से निपटने के लिये किया गया था। जल जीवन मिशन का लक्ष्य वर्ष 2024 तक सभी ग्रामीण घरों में पाइप द्वारा जलापूर्ति सुनिश्चित है। अटल भूजल योजना, यह योजना जल उपयोगकर्ता संघों, जल बजट, ग्राम–पंचायत–वार जल सुरक्षा योजनाओं की तैयारी और कार्यान्वयन के माध्यम से सामुदायिक भागीदारी के साथ भूजल के स्थायी प्रबंधन हेतु केंद्रीय क्षेत्र की योजना है। जल शक्ति अभियान, इस योजना की शुरुआत जुलाई 2019 में देश में जल संरक्षण और जल सुरक्षा के लिये एक अभियान के रूप में की गई।

उपरोक्त योजनाएँ संचालित की जा रही हैं लेकिन जल संरक्षण का यह 'कैच द रेन' अभियान सबसे प्रभावी है। स्वतन्त्रता के बाद पहली बार सरकार जल परीक्षण पर गंभीरता से काम कर रही है। कोविड–19 के दौरान 4.5 लाख महिलाओं को जल के परीक्षण के लिये प्रशिक्षित किया गया। भारत वर्षा के पानी का जितना बेहतर प्रबंधन करेगा उतना ही भूगत जल पर देश की निर्भरता कम होगी। इसलिए 'कैच द रेन' जैसे अभियान चलाए जाने और सफल होना नितांत जरूरी हैं।

'कैच द रैन' अभियान के तहत वर्षा जल संचयन अभियान देश भर में शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में चलाया जा रहा है और इसका नारा 'जहां भी गिरे और जब भी गिरे, वर्षा का पानी इकट्ठा करें' है।

यदि देश में वर्षाजल के रूप में प्राप्त पानी का पर्याप्त संग्रहण व संरक्षण हो जाय तो जल संकट को समाप्त किया जा सकता है। देश की अधिकांश नदियों में पानी कम हो गया है, इनमें कावेरी, कृष्णा, पेन्नार, साबरमती, गोदावरी और तृप्ति आदि प्रमुख हैं। जबकि कोसी, नर्मदा, ब्रह्मपुत्र, सुवर्ण रेखा, वैतरणी, मेघना और महानदी में जलातिरेक की स्थिति बन जाती है। ऐसे में सतही पानी का जहाँ ज्यादा भाग हो, उसे वहीं संरक्षित करना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान के अनुसार भारत में वर्ष 2050 तक अधिकांश नदियों में जलाभाव की स्थिति उत्पन्न होने की सम्भावना है। भारत के 4500 बड़े बाँधों में 220 अरब घनमीटर जल के संरक्षण की क्षमता है। देश के 11 मिलियन ऐसे कुएँ हैं, जिनकी संरचना पानी के पुनर्भरण के अनुकूल है। यदि मानसून अच्छा रहता है तो इनमें 25–30 मिलियन पानी का पुनर्भरण हो सकता है।

प्रधानमंत्री ने मन की बात कार्यक्रम में जल संरक्षण के लिए 'कैच द रेन, व्हेन इट फॉल्स, वेयर इज फॉल्स' नारा दिया था यानी वर्षा के जल का संचयन करो, जहां भी गिरे और जब भी गिरे। इस 'कैच द रेन' अभियान से जल संरक्षण का प्रयास किया जा रहा है। इसे जल संरक्षण का मंत्र मानना अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह अभियान 22 मार्च 2021 से 30 नवंबर, 2021 तक देश में प्री–मानसून और मानसून अवधि के दौरान जारी है। ■

वैश्विक आर्थिक परिदृश्य पर उभरता भारत

मोनिका चौहान

मैं अभी क्यों बात कर रही हूँ क्या कारण हो सकता है वैश्विक परिदृश्य में पिछले तीन दशक में काफी तेजी से बदलाव हो रहा है जिसके पीछे तकनीकी, डेमोग्राफिक, कल्चरल जिओ पोलिटिकल कॉन्टेक्स्ट में परिवर्तन हो रहा है जिसमें भारत के लिए सभावनाएं दिख रही है।

इस परिवर्तन में भारत के लिए SWOT (Strength weakness, opportunity and Threat) एनालिसिस किया जाना चाहिए। Support behind your arguments and conclusion.

उन्नसवी सदी सन् 1884 में प्रख्यात अर्थशास्त्री विलियम स्टनलेजेवंस ने व्यापार चक्र का "सनस्पाट सिद्धांत" विश्व के सामने रखा। इस सिद्धान्त के अनुसार पृथ्वी का मौसम, सूर्य के बदलते आकार के धब्बों से प्रभावित होता है। इस बदलाव का असर कृषि उत्पादन पर भी पड़ता है। कृषि उत्पादन पर प्राकृतिक कारणों जैसे अतिवृष्टि, भूकम्प, ओलावृष्टि, हिमपात, टिड्डी दलों के हमले, महामारियों और पशुओं की बीमारियों आदि का भी प्रभाव पड़ता है। इन प्राकृतिक आपदाओं के आने से उत्पादन कम होता है। कुछ प्राकृतिक आपदाएं जैसे– बाढ़, द्वारा उपजाऊ मिट्टी बहकर मैदानी इलाकों में आने से कृषि उत्पादन बढ़ जाता है। किन्तु विदेशी हमलों व उनके शासकों द्वारा की गयी लूट–पाट व मार–काट का भी काफी प्रभाव कृषि उत्पादन के व्यापार चक्र पर पड़ता था। धीरे–धीरे औद्योगिक विकास शुरू हुआ जिसके कारण एक नयी अर्थव्यवस्था का आगमन हुआ। जिसमें बाजार समाज के आधीन नहीं रहा और समाज पर यह नयी पूंजीवाद औद्योगिक अर्थव्यवस्था का अधिकार हावी हो गया। इस अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषता कभी मंदी, कभी तेजी, तेजी के बाद मंदी और मंदी के बाद तेजी का क्रम चलता रहता है। प्रथम विश्व युद्ध के उपरान्त लगभग सन् 1929 से 1932 तक के दौरान विश्व को भारी मंदी का सामना करना पड़ा। इसी दौरान भारतवर्ष में भी किसान पैसों की तंगी के कारण लगान नहीं दे पाये क्योंकि अनाज की कीमतें काफी कम हो गयी। जमींदारों ने भी किसानों को जोतों से बेदखल कर दिया। इस महा मंदी ने अमेरिका को भी अपनी चपेट में ले लिया। 'पूर्ति अपनी मांग स्वयं पैदा कर लेती है' इसी सिद्धान्त को इस महामंदी में एक फ्रांसिसी अर्थशास्त्री ने प्रतिपादित किया अर्थात, उत्पादन बढ़ाने पर मांग अपने आप पैदा होगी और संकट समाप्त हो जायेगा। इसमें सरकारों की भूमिका महत्वपूर्ण थी। उस समय की सभी देशों की सरकारों ने हस्तक्षेप कर आमदनी व रोजगार बढ़ाकर मांग में वृद्धि कर दी जिससे सभी उत्पादित माल की मांग बढ़ गयी। इस तरह औद्योगिक व्यापार चक्र के सिद्धान्त को अपनाकर, विशेषकर अमेरिका व विश्व इस महामंदी से मुक्त हो सका। यह पूंजीवाद अर्थात औद्योगिक व्यापार चक्र प्रकृति की देन ना होकर पूंजीवाद में ही सन्निहित है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मित्र राष्ट्रों (Allied forces) में सम्मिलित यूरोपियन देशों व अमेरिका में औद्योगिक उत्पादन का विकास बहुत तेजी से हुआ। इस कारण प्रति द्वन्दात्मक पूंजीवाद के स्थान पर एकाधिकार पूंजीवाद को बढ़ावा दिया गया और ये औद्योगिक उत्पादन कम्पनियों का एकाधिकार पूरे विश्व में छा गया। ये बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का एक तरह से केन्द्रीय नियोजन होने के कारण कहां कितना, किसके द्वारा, किनके लिए उत्पादन सम्बन्धी निर्णय एवं कहां पर इस उत्पाद को बेचा जायेगा के निर्णय एकाधिकार पूंजीवाद

के रूप में इन बहुराष्ट्रीय उद्यमों के पास आ गये। इस तरह पुराने नजरिये की प्रासंगिकता (Relevance) नहीं रही और नयी प्रबंधकीय क्रांति का उदय हुआ।

प्रबंधकीय क्रांति पूंजीवाद की सबसे विकृत और घातक नीतियां है जो पूरे विश्व में लोकतंत्र की धारणा को ही समाप्त कर देगी। इसमें पूंजीपतियों का एकाधिकार न केवल विश्व के देशों की सरकार पर बल्कि अर्थशास्त्री विलियम स्टनलेजेवंस ने व्यापार चक्र के लिए उनके आर्थिक आधारों को भी खत्म कर देगा। भूमण्डलीयकरण के इस रूप को 'कारपोरेट ग्लोबलाइजेशन' कहा जा रहा है। इसमें व्यापार प्रबन्धन, विश्व अर्थव्यवस्था का नियन्त्रण 'संयुक्त उदयमिता' (रिलेशनशिप इंटरप्राइजेज) के द्वारा किया जायेगा और ये बहुराष्ट्रीय कम्पनियों भूमण्डलीयकरण की इस प्रवृत्ति से इतना अधिक आय का सृजन करेगी कि इनकी आय राष्ट्रों की आय से भी अधिक होगी। जैसे कृषि बाजार में दो वैश्विक कम्पनियां Cargill और आर्चर डेनियल्ड मिडलेण्ड ने इस संयुक्त उद्यमियता के द्वारा किसान व उपभोकता को बहुत ही बुरी स्थिति में पहुंचा दिया। पहले खाने पर खर्च होने वाले प्रत्येक डालर का 41 प्रतिशत किसान को मिलता था वह अब 9 प्रतिशत रह गया। तात्पर्य यह है कि इस मुक्त बाजार का लाभ सिर्फ और सिर्फ इन वैश्विक कम्पनियों को हुआ। न तो किसानों को उनके उत्पाद का सही मूल्य मिला और उपभोक्ता को भी उत्पाद का अधिक मूल्य चुकाना पड़ा। यह व्यवस्था न तो स्वतंत्रता की पुष्टि करती है और नैतिक व आर्थिक दोनों रूपों से समाज के लिए भी लाभप्रद नहीं है। "जब तब बिल्ली चूहे का शिकार कर रही है तब तक यह महत्वपूर्ण नहीं है कि बिल्ली काली है या सफेद।"

वर्तमान में भारत की छवि एक विशाल व सफल प्रजातंत्र व बौद्विक चर्चाओं वाले देश की है। वर्ष 2011 की जनगणना के आकड़ों के अनुसार भारतीय युवा या कामगार कुल जनसंख्या का 67.4 प्रतिशत है। जिसका लाभ उठाने के लिए वर्तमान सरकार ज्यादा से ज्यादा योजनाएं लायी है। भारत की युवा शक्ति सम्पदा में विदेशी में बसे भारतीय वर्ग भी सम्मिलित हैं। 2013 में भारत को 70 मिलियन विदेशी डालर की विदेशी मुद्रा संप्रेषणों के जरिये प्राप्त हुई जो कि एक अकूत पूंजी है। इन भारत वाशियो को विदेशों में कुल सम्मिलित संवदा 1 ट्रिलियन अमेरिकी डालर है जो भारत की जीडीपी की आधी है। इसी संदर्भ में हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने अमेरिका के न्यूयार्क शहर में इन भारतीयों को भारत में निवेश की सम्भावनाओं व भारत की क्षमताओं पर कई बार अवगत कराया है।

भारत की अर्न्तराष्ट्रीय छवि काफी प्रतिष्ठा पूर्ण है। भारत के पूरे विश्व के साथ

अच्छे सम्बन्ध है। वर्तमान सरकार ने अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प, दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति पार्क गेनहाय, जापान के सम्राट अकिहितो तथा प्रधानमंत्री शिनाजऐब की हालिया भारत यात्राओं ने स्पष्ट कर दिया है कि चीन की राजनैतिक चुनौतियां भारत के लिए नये अवसरों के रूप में उभरी है। जिसका उपयोग भारत अपने औद्योगिक विकास एवं इन्फ्राटैक्चर के विकास के लिए कर रहा है। राष्ट्रीय राजपथ एवं बुलट ट्रेन योजना इसका प्रमुख उदाहरण है।

भारत सरकार ने औद्यौगिक ग्रामीण विकास एवं भारतीय विकास के लिए Start-up India, Make in India, Skill India, डिजिटल इंडिया, अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, National Rural Employment, Digi-lockerdirect benefit transfer, Sukanya Samridhi Account, integrated child development, स्वच्छ भारत अभियान योजनाएं प्रारम्भ की। Start-up India में 2021 तक करीब 50 हजार कम्पनियां पंजीकृत हुई इसमें अतिरिक्त 50 हजार कम्पनियां 2024 तक पंजीकृत करने का प्रयास भारत सरकार कर रही है। जिससे भारत के युवा वर्ग, ग्रामीण, डिजिटल Women and Child विकास को एक नयी दिशा मिलेगी। हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में कुल 135 नयी योजनाओं का निर्माण किया है एवं पुरानी बन्द पड़ी कुछ योजनाओं को भी पुनःशुरू किया है।

भारतीय कम्पनियों की शक्ति, कुछ औद्योगिक क्षेत्रों में जैसे– फार्मा उद्योग, वैक्सीन रिसर्च एवं उत्पादन, डिजिटल एवं मोबाइल आदि ने विश्व को देखने को मिली है। Smart Phone Business esa Micro Max Company अपने प्रारम्भ के पांच वर्षों में ही दक्षिणी एशियाई देशों व रूस के बाजारों में छा चुकी है। भारतीय एयरटेल कम्पनी मोबाइल सेवा प्रदाता (Mobile Service Provider) नम्बर वन कम्पनी है। इसने वोडाफोन जैसी दिग्गज बहुराष्ट्रीय कम्पनी को भी पीछे छोड दिया है। अमेरिका में भारतीय ने 18 प्रतिशत से अधिक नये प्रोद्योगिक और इंजिनियरिंग उद्योग शुरू करके विश्व में अपनी धाक जमा दी है। वास्तव में अमेरिका में भारतीयों की आबादी अमेरिका की कुल आबादी का हिस्सा मात्र 1 प्रतिशत ही है। सिलिकान वैली की 14 प्रतिशत से अधिक कम्पनियां की स्थापना भारतीयों ने की है। मैंकिजी ने अपनी पुस्तक 'रिइमेजिनिंग इंडिया' नामक पुस्तक में लिखा है कि यदि हर भारतीय की औसत आय अमेरिका में बसे भारतीयों की औसत आय की आधी भी हो जाये तो भारत का जीडीपी वर्तमान 2–3 ट्रिलियन अमेरिकी डालर के बजाय 25 ट्रिलियन अमेरिकन डालर हो जायेगी। भारत एक ऐसा देश है जिसमें असीमित क्षमताएं व सम्भावनाएं है। यदि वह अपनी क्षमताओं के बराबर प्रदर्शन करे तो वह विश्व में शीर्ष देश बन सकता है। ■

चिकित्सा के क्षेत्र में भारत का उदय

डॉ. संजीव कुमार बंसल
वरिष्ठ विशेषज्ञ, सवाई मान सिंह मेडिकल कालेज अस्पताल जयपुर

जहां पूरा विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा और भारत के साथ भी यह संकट विकराल रूप में खड़ा था वही इतने कम समय में पी.पी.किट टेस्टिंग से लेकर कोविड वैक्सीन में भी हम आज आत्मनिर्भर है। निश्चित रूप से यह चिकित्सा के क्षेत्र में भारत का उदय है। जब देश आजाद हुआ तो अन्य क्षेत्रों की तरह स्वास्थ्य क्षेत्र की स्थिति भी सोचनीय थी। ग्रामीण क्षेत्र तो पूर्णतया उपेक्षित था। उसे परम्परागत चिकित्सा पद्धति का ही सहारा संबल था। उस समय आर्युवेद एवं विद्वान वैद्यों ने प्रेम, परोपकार और करुणा के साथ रोगी का उपचार करते थे। यदि वर्तमान में चिकित्सा क्षेत्र की प्रगति का अवलोकन करे तो एक मजबूत स्थिति में खड़ा पाते है।

1947 से 2020 तक आकडों का तुलनात्मक अध्ययन करने से हमें पता चलता है कि आजादी के समय

1) जहां अल्प चिकित्सक थे, विशेषज्ञ तो सम्पूर्ण भारत में गिने चुने ही थे वहां अब सम्पूर्ण देश में ग्रामीण क्षेत्र में सुदूर तक चिकित्सा सेवा उपलब्ध है। प्रत्येक प्रकार के विशेषज्ञ, प्रत्येक शहर, कस्बें में उपलब्ध हैं। सुपर स्पेशिलिस्ट चिकित्सक भी सर्वत्र उपलब्ध हैं।

2) भारतीय चिकित्सक सम्पूर्ण विश्व में फैले हुए हैं और उत्कृष्ट सेवाएं दे रहे हैं। भारतीय चिकित्सक अति विकसित देश जैसे अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन आदि में भी हैं।

3) आजादी के समय मात्र 19 मेडिकल कालेज सम्पूर्ण देश में थे जो अब 542 हैं व 64 चिकित्सा स्नातकोत्तर महाविद्यालय हैं। सरकार की योजना प्रत्येक जिले में एक–एक मेडिकल कालेज खोलने की है जिनमें अनेक खुल भी चुके हैं व शेष उस प्रक्रिया में है।

4) लाखों नर्सों, पैरा मेडिकल स्टाफ की देश में ट्रेनिंग हो चुकी है। लगभग 6,40,000 नर्सेस तो विदेश में ही काम कर रही हैं। जिसमें मध्यपूर्ण के देश ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण यूरोप व अमेरिका है।

तुलनात्मक स्थिति	1947	2020
मेडिकल कालेज	195	42
ऐलोपेथी चिकित्सा	50000	1255786
स्वास्थ्य सूचक मानक	1947	2020
शिशु मृत्युदर	145.6 / 1000	29.8 / 1000
मातृ मृत्युदर	2000 / लाख जीवित जन्म	70 / लाख जीवित शिशु जन्म
जीवन आयु	30.94 वर्ष	69.27 वर्ष

5) विशाल जनसंख्या के उपरान्त भी सभी को निःशुल्क / सस्ती चिकित्सा सेवा उपलब्ध करवायी जा रही है। निजी क्षेत्र भी अन्य देशों की तुलना में भारत में सस्ता इलाज दे रहा है।

6) यह डाक्टर व पैरामेडिकल स्टाफ की उपलब्धता व समर्पण ही है कि एक साथ करोड़ों बच्चों का टीकाकरण कार्यक्रम कराया जाता है। पल्स पोलियो कार्यक्रम इसका एक उदहारण है।

7) देश में बड़े–बड़े निजी अस्पताल बन चुके हैं जो विश्व विख्यात हैं इन अस्पतालों में भारतवर्ष ही नहीं सार्क देशों, मध्य पूर्व के रोगी भी इलाज करवाने आते हैं।

8) पहले ऐलोपैथी दवाएं आयात होती थी अब अनेक देशों को निर्यात हो रही है।

9) देश से 3300 करोड रूपए की आयर्वेदिक दवाओं का निर्यात भी हो रही है। (Statica.com)

10) सम्पूर्ण विश्व योगासन द्वारा अपने आपको स्वस्थ रख रहा है जो कि भारत की देन है। यह एक ऐसी विधा है जिसमें कोई धन का व्यय नही है। अल्प प्रशिक्षण लेकर एवं बिना किसी नुकसान के कहीं भी कोई भी कर सकता है। योग दिवस पर सम्पूर्ण विश्व में योगासन किये जाते हैं।

यहां यह उल्लेख करना समसामयिक होगा कि वर्तमान में फैली विश्वमहामारी कोरोना के प्रथम चरण को हैंडिल करने में भारत पूर्णतः सफल रहा बल्कि इस महामारी के लिए मास्क, सेनिटाइजर, दवाई बनाने में भारत अल्प समय में अग्रणी रहा। अस्पतालों में लाखों सेवाएं विकसित कर ली गयी वो भी अल्प समय में। देश में मृत्युदर न्यूनतम रही। मास्क, सेनेटाइजर, दवाई वैक्सीन अन्य देशों को भी खुले मन से दिये। कोरोना की वैकसीन विकसित करने में सम्पूर्ण विश्व के वैज्ञानिक लगे परन्तु हम कह सकते हैं कि भारत ने सफलतापूर्वक न केवल वैक्सीन ही बनाई अपितु अन्य देशों को भी बिना भेदभाव के भेजी। आज न केवल भारतवासियों को वैक्सीन लग रहा है बल्कि सम्पूर्ण विश्व में वैक्सीन सप्लाई कर रहे हैं। इन सबसे स्पष्ट है कि चिकित्सा क्षेत्र में भारत का उदय हो रहा है और आने वाले समय में भारत चिकित्सा के क्षेत्र का भी विश्व गुरु कहलायेगा। ऐलोपैथी, आयुर्वेद, योग द्वारा सम्पूर्ण विश्व का कल्याण करेगा।

क्रांतिकारियों के सिरमौर वीर सावरकर

महावीर सिंघल
वरिष्ठ लेखक

विनायक दामोदर सावरकर का जन्म ग्राम भगूर (जिला नासिक, महाराष्ट्र) में 28 मई, 1883 को हुआ था। छात्र जीवन में इन पर लोकमान्य तिलक के समाचार पत्र 'केसरी' का बहुत प्रभाव पड़ा। इन्होंने भी अपने जीवन का लक्ष्य देश की स्वतन्त्रता को बना लिया। 1905 में उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आन्दोलन चलाया। जब तीनों चाफेकर बन्धुओं को फाँसी हुई, तो इन्होंने एक मार्मिक कविता लिखी। फिर रात में उसे पढ़कर ये स्वयं ही हिचकियाँ लेकर रोने लगे। इस पर इनके पिताजी ने उठकर इन्हें चुप कराया।

सावरकर जी सशस्त्र क्रान्ति के पक्षधर थे। उनकी इच्छा विदेश जाकर वहाँ से शस्त्र भारत भेजने की थी। अतः वे श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति लेकर ब्रिटेन चले गये। लन्दन का 'इंडिया हाउस' उनकी गतिविधियों का केन्द्र था। वहाँ रहने वाले अनेक छात्रों को उन्होंने क्रान्ति के लिए प्रेरित किया। कर्जन वायली को मारने वाले मदनलाल धींगरा उनमें से एक थे।

उनकी गतिविधियाँ देखकर ब्रिटिश पुलिस ने उन्हें 13 मार्च, 1910 को गिरफ्तार कर लिया। उन पर भारत में भी अनेक मुकदमे चल रहे थे, अतः उन्हें मोरिया नामक जलयान से भारत लाया जाने लगा। 10 जुलाई, 1910 को जब वह फ्रान्स के मोर्सेल्स बन्दरगाह पर खड़ा था, तो वे शौच के बहाने शौचालय में गये और वहां से समुद्र में कूदकर तैरते हुए तट पर पहुँच गये।

तट पर उन्होंने स्वयं को फ्रान्सीसी पुलिसकर्मी के हवाले कर दिया। उनका पीछा कर रहे अंग्रेज सैनिकों ने उन्हें फ्रान्सीसी पुलिस से ले लिया। यह

अन्तरराष्ट्रीय विधि के विपरीत था। इसलिए यह मुकदमा हेग के अन्तरराष्ट्रीय न्यायालय तक पहुँचा, जहाँ उन्हें अंग्रेज शासन के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने तथा शस्त्र भारत भेजने के अपराध में आजन्म कारावास की सजा सुनाई गयी। उनकी सारी सम्पत्ति भी जब्त कर ली गयी।

सावरकर जी ने ब्रिटिश अभिलेखागारों का गहन अध्ययन कर '1857 का स्वाधीनता संग्राम' नामक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा। फिर इसे गुप्त रूप से छपने के लिए भारत भेजा गया। ब्रिटिश शासन इस ग्रन्थ के लेखन एवं प्रकाशन की सूचना से ही थर्रा गया। विश्व इतिहास में यह एकमात्र ग्रन्थ था, जिसे प्रकाशन से पहले ही प्रतिबन्धित कर दिया गया।

प्रकाशक ने इसे गुप्त रूप से पेरिस भेजा। वहाँ भी ब्रिटिश गुप्तचर विभाग ने इसे छपने नहीं दिया। अन्ततः 1909 में हालैण्ड से यह प्रकाशित हुआ। यह आज भी 1857 के स्वाधीनता समर का सर्वाधिक विश्वसनीय ग्रन्थ है।

1911 में उन्हें एक और आजन्म कारावास की सजा सुनाकर कालापानी भेज दिया गया। इस प्रकार उन्हें दो जन्मों का कारावास मिला। वहाँ इनके बड़े भाई गणेश सावरकर भी बन्द थे। जेल में इन पर घोर अत्याचार किये गये। कोल्हू में जुतकर तेल निकालना, नारियल कूटना, कोड़ों की मार, भूखे–प्यासे रखना, कई दिन तक लगातार खड़े रखना, हथकड़ी और बेड़ी में जकड़ना जैसी यातनाएँ इन्हें हर दिन ही झेलनी पड़ती थीं।

1921 में उन्हें अन्दमान से रत्नागिरी भेजा गया। 1937 में वे वहाँ से भी मुक्त कर दिये गये। पर सुभाषचन्द्र बोस के साथ मिलकर वे क्रान्ति की योजना में लगे रहे। 1947 में स्वतन्त्रता के बाद उन्हें गांधी हत्या के झूठे मुकदमे में फँसाया गया। पर वे निर्दोष सिद्ध हुए। वे राजनीति के हिन्दूकरण तथा हिन्दुओं के सैनिकीकरण के प्रबल पक्षधर थे। स्वास्थ्य बहुत बिगड़ जाने पर वीर सावरकर ने प्रायोपवेशन द्वारा 26 फरवरी, 1966 को देह त्याग दी। ■

बिमर्श
2020

प्रेरणा जनसंचार एवं शोध संस्थान, नोएडा
सी-56/20, सेक्टर 62, नोएडा
देवर्षि नारद जयन्ती
माता
देवर्षि नारद